चैतन्य लहरी

खण्ड XI जुलाई-अगस्त 1999 अंक 7 & 8

"दूसरे सहजयोगियों तथा अन्य छोटी-छोटी तुच्छ चीज़ों को देखने में यदि आप अपना समय बर्बाद कर रहे हैं तो परमात्मा से आपका एकीकरण (Integration) कम होता चला जाएगा, आप और अधिक दूर होते चले जाएंगे।"

(परम पूज्य माताजी श्री निर्मला देवी)

सहजी शिशु को ध्यानगम्य करन के लिए साक्षात् श्री गणेश।

इस अंक में

क्रम संख्या		पृष्ठ नं.
1.	सम्पादकीय	3
2.	ध्यान-धारणा पर श्री माताजी के आदेश	5
3.	शिवरात्रि पूजा (14.2.99) (हिन्दी प्रवचन)	7
4.	शिवरात्रि पूजा (अंग्रेजी प्रवचन)	21
5.	श्रीमाताजी द्वारा गैर-सरकारी संस्था की स्थापना	23
6.	दिवाली पूजा प्रवचन (25.10.98)	24
7.	नैतिकता व देशभक्ति सार्वजनिक प्रवचन (18.12.98)	31
8.	ईसा मसीह पूजा (25.12.98)	45

सम्पादक : योगी महाजन

प्रकाशक : विजय नालगिरकर
162, मुनीरका विहार,
नई दिल्ली-110 067

मुद्रक : अभिनव प्रिन्ट्स, दिल्ली-34,
फोन : 7184340

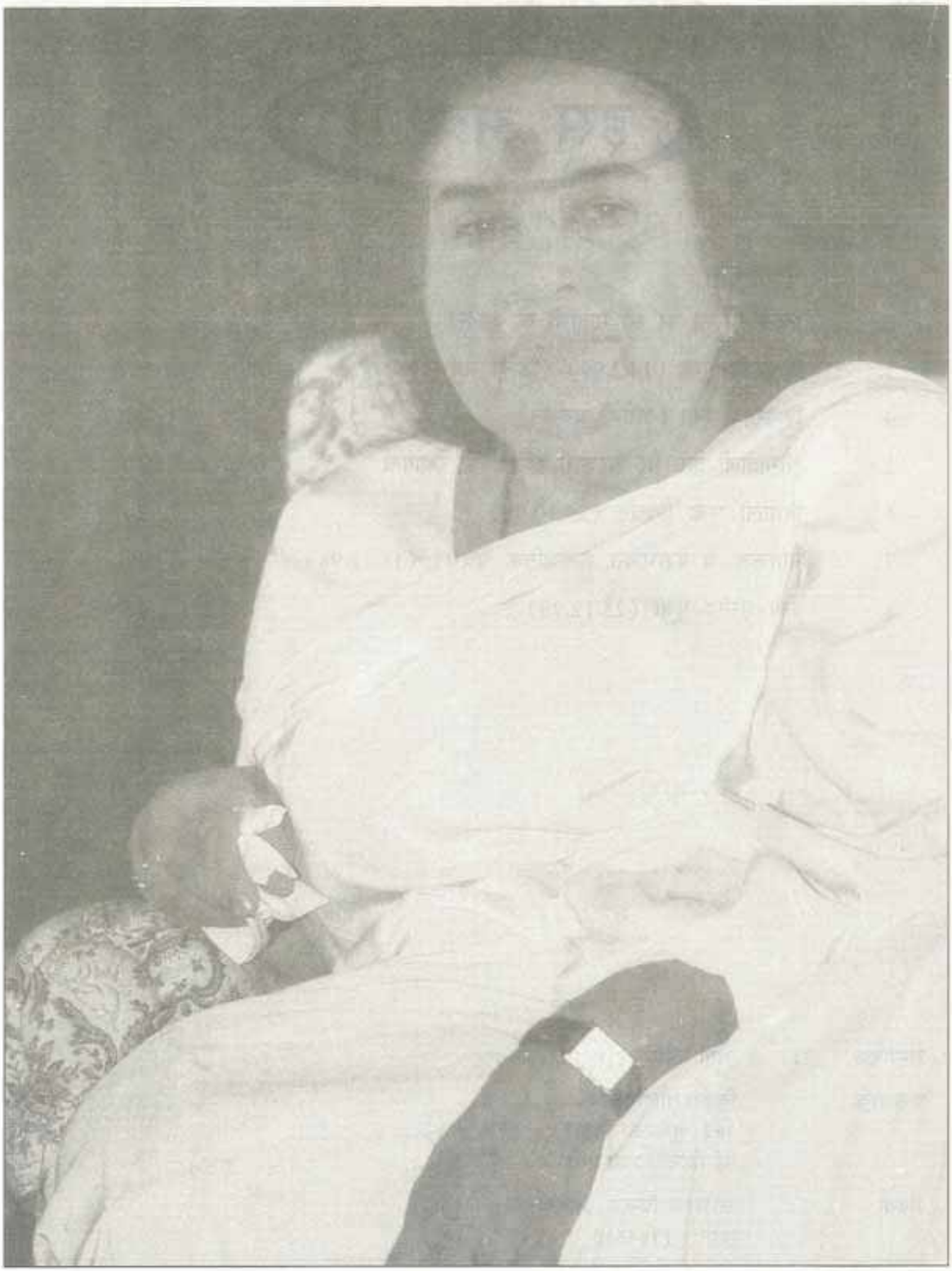

सम्पादकीय

भारत को खोजते हुए कोलम्बस का अमरीका पहुँच जाना मात्र संयोग न था। अमरीका के मूल निवासियों को लाल भारतीय (Red Indians) कहा जाना भी मात्र संयोग न था। श्रीकृष्ण की भूमि (अमरीका) का श्री कुबेर द्वारा आशीर्वादित होना भी मात्र संयोग नहीं है। श्रीकृष्ण की भूमि का ब्रह्माण्ड का विशुद्धि चक्र तथा ब्रह्माण्डीय सम्पर्क का यन्त्र होना भी केवल संयोग नहीं है। हमारी परमेश्वरी माँ का कन्नाजोहारिल (Canna Joharil) में मूल अमरीकन लोगों से 140 एकड़ भूमि खरीदना भी संयोग मात्र नहीं है।

अमरीका श्रीकृष्ण का स्थान है अतः इसका अपनी मातृभूमि भारत से मूल सम्बन्ध है। श्रीकृष्ण की बहन विष्णुमाया ने क्रिस्टोफर कोलम्बस पर अपनी माया का जाल फैलाया और उसके भ्रम में फँसकर कोलम्बस ने सोचा कि उसने भारत खोज निकाला है तथा वहाँ के मूल निवासियों को लाल भारतीय नाम दिया। निःसन्देह वहाँ के मूल निवासी भारतीय मूल के थे, आत्मा में उनका आध्यात्मिक विश्वास, आदिशक्ति को ब्रह्माण्ड का सृष्टा मानना और उनकी प्रकृति की पूजा करना - इन सबका उद्‌भव भारत में रहने वाले प्राचीन आर्यों से हुआ। वे पृथ्वी माँ का सम्मान करते थे और पावन आत्मा के रूप में आदि कुण्डलिनी की पूजा करते थे। उनकी निम्नलिखित प्रार्थना से यह स्पष्ट है:-

हे महान आत्मा,
आवाज तेरी बोलती है वायु में और पेड़ों में,
पूरे विश्व को उन्नत करता है श्वास तेरा,
अपने जीव की सुनो, सभी को सुनो
मैं नन्हा और कमजोर हूँ,
जरूरत है मुझे शक्ति तुम्हारी,
विवेक भी तुम्हारा मुझे चाहिए,
गरिमापूर्वक चलने के लिए
सूर्योदय की स्वर्णिम लालिमा की छवि
प्रफुल्लित करे मेरी दृष्टि,
प्रेम पूर्वक सृजित
आपकी सभी वस्तुओं को छुएं हाथ मेरे
हर चीज में कर्ण मेरे सुनें तेरी वाणी।

कन्नाजोहारिल की पवित्र भूमि पर विश्व भर से आए सहज योगियों का 20 जून 1999 को आदिशक्ति पूजा करना मात्र संयोग न था। यह भी संयोग नहीं है कि शब्द कन्नाजोहारिल का मूल भारतीय भाषा में अर्थ "स्वतः शुद्ध होने वाला बर्तन है" आधुनिक काल के साधकों को आन्तरिक शुद्धिकरण के लिए यहाँ आना पड़ा। श्वेत घोड़ा (White Buffalo) की लाल भारतीय भविष्यवाणी प्रमाणित करती है कि 'एक सर्वशक्तिशाली महिला, जिसमें प्रकाश दिखाई पड़ता है, इस रोगी राष्ट्र को रोग मुक्त करने के लिए आएंगी।

महान लाल भारतीय शान्ति दूत देगना विडा (Dagana Widah) ने भविष्यवाणी की थी कि कन्नाजोहारिल में, "सभी राष्ट्रों की संगोष्ठी अग्नि प्रज्जवलित होगी। सभी लोगों को दैवी नियम का ज्ञान प्राप्त होगा और मानव हित के लिए सभी लोग मिलकर परिश्रम करेंगे।

20 जून 1999 को विश्व के सभी राष्ट्रों के शान्ति दूत कन्ना-जोहारिल की पवित्र भूमि

पर एकत्र हुए और श्री आदिशक्ति के सम्मुख
विश्वशान्ति लाने की शपथ ली।
अपनी पावन शपथ को निभाने का मार्ग,
हमें दिखाओ हे आदि शक्ति।
इस पावन पथ पर आने वाली
बाधाओं को दूर करने की कृपा कर दो।
भ्रम और प्रलोभनों के गर्त से
हमें बचा लो हे माँ।
भटके हुए अमरीकी बच्चों की रक्षा करो,
हे देवी अमरिकेश्वरी।
अपने चरण कमलों से निरन्तर बहते हुए,
मधुर अमृत का स्वाद उन्हें प्रदान कर दो।

ध्यान-धारणा पर श्री माताजी के आदेश

निर्मला निकेतन, प्लाजा-डोरिया, कबेला
इटली - 2 अक्तूबर 1991

ध्यान में जाने का प्रयत्न करने के लिए व्यक्ति को ये सभी पुस्तकें तथा आदेश पढ़ने चाहिए। वास्तव में ये सभी प्रयत्न इस दृढ़ विश्वास तक पहुँचने के लिए हैं कि ध्यान अवस्था को सहज समर्पण से प्राप्त करना है।

भिन्न मन्त्रोच्चारण करते हुए आज्ञा तक तो ठीक है परन्तु आपको लगेगा कि आज्ञा पर कुण्डलिनी रुक गयी है या अवरोधित हो गयी है। इसका कारण यह है कि जब आप प्रयत्न करते हैं तो आप अपने आज्ञा (चक्र) के माध्यम से कार्य कर रहे होते हैं। यह कार्य सहज नहीं होता।

अत: भक्त लोगों को केवल शांत और सहज होना पड़ता है और कुण्डलिनी आज्ञा को पार करके सहस्रार मार्ग से बाहर आ जाती है। भक्ति द्वारा ही आप अपनी आज्ञा को प्रभावहीन कर सकते हैं। आज्ञा चक्र पर उत्थान की अवस्था अत्यंत कठिन है। क्योंकि यदि आप कुण्डलिनी को आज्ञा से ऊपर धकेलने की कोशिश करते हैं तो आप प्रयत्न का उपयोग कर रहे हैं और ऐसा करते ही आप अपनी "आज्ञा" में रुकावट खड़ी कर देते हैं। अवरोधित आज्ञा को यदि आप उसी हाल में छोड़ दें तो कुण्डलिनी स्वयं इस पर कार्य करेगी तथा आपकी "आज्ञा" का अवरोध समाप्त हो जायेगा। परन्तु भक्ति भाव से यदि आप पूर्ण हृदय से गा रहे हैं या मेरे नाम ले रहे हैं तो स्वत: ही आज्ञा चक्र खुल जाता है।

परन्तु अपनी आज्ञा चक्र का अधिक प्रयोग करने वाले लोगों के लिए यह कठिन कार्य है। उनके लिए निर्विचार समाधि की अवस्था विकसित कर लेना अच्छा है। जब वे किसी वस्तु को देखें तो बिना इसके विषय में सोचे इसे देखने का प्रयत्न करें। आप कह सकते हैं "क्षम, क्षम, क्षम" ये विचार रुक जायेंगे। निरन्तर भक्ति द्वारा इस अवस्था को बनाये रखने का प्रयत्न करें।

अत: साक्षात्कार के बाद भक्ति के आनन्द के प्रति पूर्ण समर्पण करना सहजयोग में महत्वपूर्ण कार्य है। जिन्होंने यह अवस्था पा ली है वे आज्ञा के रास्ते यह सहज उत्थान सुगमता से पा लेते हैं। जैसा मैंने कहा इसकी व्याख्या नहीं की जा सकती। भक्ति के लिए कोई नियम-आचरण नहीं है परन्तु आनन्द की अवस्था में स्थित सहजयोगियों में निश्चय ही इसे देखा जा सकता है।

आप देख सकते हैं कि उनके अन्दर अपने गुरु के प्रति हार्दिक प्रेम तथा श्रद्धामय डर है। अपने गुरु की किसी बात को वे मना नहीं करते, उस पर प्रश्न नहीं करते और अपने गुरु का वे न तो मार्गदर्शन करते हैं और न ही त्रुटि-सुधार। सदा वे आत्मसात् करने की अवस्था में होते हैं, जैसे कोई महान सागर उनमें आनन्द तथा सुख उड़ेल रहा हो।

गुरु के प्रति रोज-मर्रा के आचरण में उनकी यह अवस्था प्रकट होती है। अपने गुरु के साथ उनका आचरण तथा बातचीत अत्यंत महत्वपूर्ण है। उदाहरणतया कुछ लोग मेरे बहुत समीप आ जाते हैं, वे जानते है। कि मेरी

देखभाल कैसे करनी है, मेरी चरण सेवा और मेरे भोजन आदि का ज्ञान भी उन्हें है, परन्तु यदि उनमें वो नियमाचरण, अन्तर्जात सम्मान भाव और गहन श्रद्धा नहीं है तो अभी तक वे उस अवस्था पर नहीं हैं जहाँ उन्हें होना चाहिए था। और शनैः शनैः ऐसे लोगों का पतन होने लगता है क्योंकि अपने गुरु की महानता के प्रति नतमस्तक करने वाली अपने अस्तित्व की गहनता को वे अभी तक नहीं नाप सके हैं।

यह बताना कि आप किस प्रकार आचरण करें, मेरे लिए अति संवेदनशील कार्य है, और कभी-कभी जब मैं लोगों को पतन की ओर ले जाने वाली आजादी लेते हुए देखती हूँ तो मुझे दुःख होता है, परेशानी होती है। मेरे लिए उन्हें यह सब बताना असंभव है कि किस प्रकार वे मुझ से बातचीत करें और किस प्रकार आचरण करें।

मैंने देखा है कि सभी नेता गणों में यह विवेक तथा सामर्थ्य हे कि प्रेम तथा आनन्द के इस सागर को कैसे आत्मसात कर लें। परन्तु ऐसे बहुत से सहजयोगी हैं जो मेरे समीप होते हुए भी वांछित ऊंचाई पर नहीं हैं। कभी वे तर्क करते हैं, कभी इंकार करते हैं और कभी विरोध।

आप प्रश्न कर सकते हैं कि इस प्रकार का समर्पण तो हमें गुलाम बना देगा। दासता में आपको दर्द, कष्ट तथा दुख मिलता है परन्तु इस दासता में आपको आनन्द, पूर्ण स्वतन्त्रता, शक्ति और अपने गौरव का सौन्दर्य प्राप्त होता है। तो आप इसे दासता या जो भी कुछ कहें, इस समर्पण के स्वभाव पर कोई अन्तर नहीं पड़ता क्योंकि अपने गौरव को खोज लेने के लिए यह अत्यंत महत्वपूर्ण है।

वास्तव में आपने अपने अहं और बन्धनों को समर्पित करना है। कुछ लोगों में दूसरों पर छा जाने की आदत होती है, तो जब वे मेरे समीप होते हैं तो मुझसे तर्क करने लगते हैं। इस तरह का व्यवहार बदलना होगा। जिस प्रकार आप एक दूसरे से बातचीत करते हैं, अपने गुरु से वैसे नहीं कर सकते क्योंकि आपके गुरु बहुत ऊँचे स्थान पर हैं। आपको यह भी समझना होगा कि "तुर्यावस्था" को पाने के लिए आपको अपने गुरु को सर्वोच्च स्थान देना होगा।

मैंने आपको कभी गुरुगीता पढ़ने को नहीं कहा क्योंकि ऐसा करना सहजयोगियों के प्रति ज्यादती होगी। मैं समझती हूँ कि अभी तक बहुत से सहजयोगी समपर्ण का अर्थ समझने के योग्य नहीं हैं, इसी कारण मैंने आपको कभी भी महादेव द्वारा पार्वती जी को सुनाई गई गुरुगीता पढ़ने को नहीं कहा।

समर्पण की यह अवस्था आपके प्रयत्नों व विचारों से नहीं आएगी, इसे सहज में ही आना है। यह अपने व्यक्तित्व की एक बूँद को प्रेम सागर में विलीन कर देने के समान है। जिन भी शब्दों का प्रयोग हम करें हमें यह समझना है कि इस अवस्था को प्राप्त करना है। किसी भी अप्राप्त अवस्था के वर्णन करने का कोई उपयोग नहीं, फिर भी ऐसा करने से कम से कम लोग उसकी ओर बढ़ने का और उसे प्राप्त करने का प्रयत्न करेंगे।

अब आपकी स्वतन्त्रता क्या है? आप की स्वतन्त्रता यह है कि बिना किसी मानसिक प्रयत्न या नियम बंधनों में स्वयं को बाँधे, अपने अस्तित्व में रचित मर्यादाओं को अर्न्तजात तथा सहज रूप में आपको समझना चाहिए।

पूर्ण स्वतन्त्रता को समझने का यही मार्ग है कि बिना स्वयं को मानसिक रूप में समझाये, कि यह करो, वह करो, यह स्वतन्त्रता स्वतः ही आपके अन्दर कार्य करे और अपने गुरु के प्रति सहज आचरण करते हुए एक नये जीवन का आरम्भ आप करें।

शिवरात्रि पूजा

सादगी व स्वच्छ हृदय से ही शिव की भक्ति हो सकती है।

परमपूज्य माताजी श्री निर्मला देवी का हिन्दी प्रवचन - (दिल्ली-14.2.99)

पहले मैं हिन्दी भाषा में बोलूँगी फिर अंग्रेजी में। आज हम श्री महादेव, शिवशंकर की पूजा करने के लिए एकत्र हुए हैं। शंकर जी के नाम से अनेक व्यवस्थाएं दुनिया में हो गईं। आदिशंकराचार्य के प्रसार के कारण शिवजी की पूजा बहुत जोरों में मनाने लग गए और दक्षिण में तो दो तरह के पंथ तैयार हो गए एक जिसको शैव कहते हैं और दूसरे जो वैष्णव कहलाते हैं। अब शैव माने शिव को मानने वाले और वैष्णव जो विष्णु को मानने वाले। अपने देश में, विभाजन करने में हम लोग बहुत होशियार हैं। भगवान के भी विभाजन कर डालते हैं और फिर जब उसको एकत्रित करना चाहते हैं तो और उसका विद्रुप रूप निकल आता है। जैसे कि एक 'अयप्पा' नाम का नया निकल आया है मामला। बहुत गलत चीज़ है और उसमें यह दिखाया है कि विष्णुजी ने जब मोहिनी रूप धारण किया तो उनसे एक बच्चा पैदा हुआ शिवजी से, ऐसा कहीं हो सकता है क्या? ऐसी गलत-सलत बातें हमारे देश में बहुत निकल आती हैं और फिर उसी के अलग-अलग संघ बन जाते हैं। कोई न कोई बहाना झगड़ा करने के लिए मिल जाए तो हिन्दुस्तानी बहुत खुश होते हैं। ग़र उनके पास झगड़ा करने के लिए कोई चीज़ नहीं हो तो वो कोई न कोई कल्पना से ही चीजें निकालते रहते हैं। सो ये दोनों ही चीज़ एक-दूसरे से इस तरह से जुड़ी हुई हैं कि जैसे सूर्य से सूर्य की किरण, शब्द से अर्थ, चाँद से चाँदनी। माने ये कि जो सोपान मार्ग बना हुआ है, जिसे हम सुषुम्ना नाड़ी कहते हैं, जो मध्य मार्ग है, वो विष्णु का मार्ग है और उस मार्ग से ही हम शिव तत्व पे पहुँचते हैं। **तो जो मंजिल है वो है शिव तत्व की, शिव की, और जो रास्ता है वो विष्णु का बनाया हुआ है।** इस रास्ते को बनाने में विष्णु ने और आदिशक्ति ने मेहनत की है, इसमें शिवजी का कोई हाथ नहीं, वो तो आराम से अपनी जगह बैठे हैं, जिसको आना है आए, नहीं आना है नहीं आए। सो इस शिव तत्व को प्राप्त करने के लिए हमें इसी विष्णु मार्ग से जाना चाहिए और उसके लिए जो अनेक चक्र हैं उनको पहले ठीक करना चाहिए। जब ये चक्र ठीक हो जाते हैं तब हमारा विष्णु मार्ग खुल जाता है और उसी के साथ फिर हम धीरे-धीरे ऊपर उठने लग जाते हैं।

अब इन चक्रों के बारे में मैंने तो बहुत बताया था पर हृदय में भी एक चक्र है जिसको हम कहते हैं (left heart)। ये हृदय का चक्र नहीं है ये सिर्फ एक तरह से हृदय जो है वो प्रतिबिम्ब है, Reflection है महादेव का। शिवजी का स्थान तो सबसे ऊपर है, बुद्धि से ऊपर, विचारों से ऊपर। ऐसे तत्व को प्राप्त करने के लिए सबसे पहले हमें इधर ध्यान देना चाहिए कि हमारा हृदय कितना साफ है। हृदय के अन्दर हम अनेक तरह की गंदगी को पालते हैं जैसे कि हम किसी से ईर्ष्या करते हैं। ईर्ष्या करना जैसे कि किसी ने आपके साथ दुष्टता भी

की हो, आपको सताया भी हो, परेशान किया हो, लेकिन उससे ईर्ष्या करने से कोई फायदा नहीं है। आपका हृदय ग़र स्वच्छ है तो आपका जो आईना है, जिसमें परमात्मा का प्रतिबिम्ब पड़ने वाला है, वो साफ रहेगा। लेकिन आपके अन्दर ग़र ईर्ष्या हो तो वो साफ नहीं रह सकता और उसका प्रतिबिम्ब ठीक नहीं हो सकता। किसी से भी दुश्मनी मोल लेना, किसी के प्रति भी कुछ किसी तरह का हृदय में किल्मिश रखना या बुरी भावना रखना ये गलत बात है। इसीलिए ईसा मसीह ने कहा है कि, सबको माफ करो। माफ करना अत्यंत आवश्यक है। उससे पहले भी और बाद में भी अनेक साधु सन्तों ने यही बात कही कि सबको माफ कर दो। जैसे ही आप माफ कर देते हैं वैसे ही महादेव ऐसी चीज़ों को अपने हाथ में ले लेते हैं। सबसे जो सूक्ष्म शक्ति है वो महादेव की शक्ति है। और वो उसको फिर पूरी तरह से दण्डित करते हैं, उसको पूरी तरह से punish करते हैं। ये महादेव जी का कार्य है आपका नहीं और इसलिए आपका ईर्ष्या किसी से करना बहुत बुरी बात है। पर सहजयोग में भी मैं देखती हूँ कि ईर्ष्या बहुत है। सहजयोगियों को एक-दूसरे से ईर्ष्या हो जाएगी। अब किसी को trusty बना दिया दूसरे को नहीं बनाया तो इसको ईर्ष्या हो जाएगी। उसमें trusty आदि में कुछ खास नहीं है। ये तो आप लोग जानते हैं, सब झूठी बातें हैं। माँ ने यूँ ही ढकोसला बनाया हुआ है, एक मायाजाल फैलाया हुआ है। पर उसमें भी लोगों का दिमाग़ खराब हो जाता है और दिमाग़ किसी का खराब होता है और दिल किसी का खराब होता है। अब मैं क्या करूँ, मेरी खुद समझ में नहीं आता है कि इतना बड़ा कार्य इतने देशों में चल रहा है तो कोई न कोई एक आदमी से ही तो संबंधित हो सकता है। हालाँकि अब धीरे-धीरे मामले साफ हो रहे हैं पर तो भी, आपको हैरानी होगी कि, अब भी इसकी बड़ी चर्चा होती है, कौन लीडर है। कौन क्या है? दूसरी बात हमारे लिए, हिन्दुस्तानियों के लिए एक वरदान कहो कि ईर्ष्या जो है वो पैसों के मामले में हो जाती है। सहजयोग में भी पैसों के मामले में बड़ी ईर्ष्या है। किसी के पास ज्यादा पैसा है किसी के पास कम पैसा है। सहजयोग के कार्य करते वक्त भी लोग देखते हैं कि कितना पैसा किसको मिलता है और कौन कितना पैसा देता है। **जिसका हृदय पैसे में उलझ गया वो सहजयोग के काम के आदमी नहीं क्योंकि उनके हृदय पे जड़वाद (Materialism) छाया हुआ है। किसी भी तरह के, किसी भी तरह के जड़वाद से ग़र आप ग्रसित हैं तो आपका उद्धार होना बड़ा कठिन है।** ये अपने देश की विशेषता है, परदेस में इतना नहीं देखा मैंने, पर यहाँ इसकी विशेषता है। सबसे हम सोचेंगे कि Russia में और Eastern Block में पैसा कम है। पर उनको बिल्कुल परवाह नहीं है। वो पैसे की बात ही नहीं सोचते। उनका हृदय इतना स्वच्छ है, इतना स्वच्छ हृदय है और बड़े स्वच्छ हृदय से ही भक्ति हो सकती है। हम लोग तो जब प्रार्थना करते हैं तब भी हाथ-पैर धोते हैं, नहाते हैं पर हृदय का स्नान कर के ग़र हम प्रभु से ये कहें कि हमारे अन्दर की ये जो गन्दगियाँ हैं इसको तुम हटाओ और हमें स्वच्छ करो तो ज्यादा अच्छा होगा।

तीसरी बात जो हमारे यहाँ अन्दर है, षड्रिपु जिसे कहते हैं। क्रोध पर कृष्ण ने बहुत जोर दिया है। क्रोध सबसे खराब चीज़ है, क्रोध से ही सब चीज़ आती है। एक बार आदमी क्रोध करता है फिर उसको सम्मोह हो जाता है

और फिर वो ये सोचता है मैंने क्यों कहा, मुझे नहीं कहना चाहिए था। ये नहीं वो नहीं। पर वो आपे में नहीं रहता जब उसे क्रोध आता है, क्रोध में वो आपे में नहीं रहता है और आपे से बाहर हो जाता है और जो मुंह में आए सो बकता है। उसका कोई अर्थ नहीं या इतने दिनों की जो मैल अपने हृदय में समाई हुई है वो उसके मुख से निकलती है। इस क्रोध को बचाना चाहिए। ये किसलिए क्रोध आता है। इधर ग़ार चित्त दिया जाए कि हम क्यों क्रोध करते हैं। फिर कुछ लोग हैं वो व्यक्ति मात्र से करते हैं, कोई एक समाज मात्र से करता है। इस तरह से अनेक तरह से लोग क्रोध करते हैं। ये क्रोध हमें अन्दर क्यों आता है? किसलिए हम क्रोधित होते हैं? ये सोचना चाहिए। बहुत से लोगों ने मुझसे कहा कि माँ ग़ार आपके ख़िलाफ कोई कहता है तो हमें बड़ा क्रोध आता है। मुझे तो हँसी आती है। ग़ार कोई मेरे विरोध में कहता है तो सच कहती हूँ मुझे हँसी आती है? क्योंकि इसमें कोई अर्थ ही नहीं, मेरे विरोध में कहने की ऐसी कौन सी बात है। मैं तो प्यार करने जा रही हूँ। मेरे विरोध में बोल रहे हैं तो करें क्या! पर किसी-किसी की बुद्धि टेढ़ी होती है तो उस पर दया करनी चाहिए। उसको सोचना चाहिए कि इतना महामूर्ख है ये, जो आदमी क्रोध में उतर जाता है, उसकी तरफ दृष्टि जो है वो अत्यंत शालीन होनी चाहिए। इससे उसका भी क्रोध ठण्डा हो सकता है। अपने देश में क्रोध करने वाले अनेक तरह के लोग हैं, उसकी संस्थाएं हैं जो सिर्फ क्रोध से इसको मार, उसको मार, इसको पीट, उसको पीट और फिर सामाजिक तौर पर भी ये चीज़ बनती जा रही है।

ये बड़ी भयानक चीज़ है लोगों को मारना-पीटना और फिर उसके दम पर एक कोई सेना तैयार करना या फिर कोई मारने-पीटने वाली चीज़ तैयार करना; ये बड़ी भयानक है। हालांकि ग़ार अपने संरक्षण के लिए कोई आदमी ऐसी चीज़ रखता है तो उसमें इतना हर्ज नहीं है, पर तो भी ग़ार वो परमात्मा का भक्त है तो उसको कोई ज़रूरत नहीं। ऐसा आदमी हमेशा संरक्षित है। जिसके अन्दर श्री महादेव का वास है उनको कौन हाथ लगा सकता है? उनको कौन नष्ट कर सकता है? कुछ भी करो, कितना भी उनको सताओ; तो भी वो इन्सान नष्ट नहीं हो सकता। लेकिन जो उनको सताएंगे वो ही नष्ट हो जाएंगे। जब इस बात का पूर्ण विश्वास आपके अंदर हो जाए कि जो आपको सता रहे हैं वो ही नष्ट हो जाएंगे, अपना दिल, अपना हृदय आप एकदम स्वच्छ रखें। स्वच्छ हृदय में ही ये कार्य हो सकता है क्योंकि शिव का स्थान हमारे अन्दर प्रतिबिम्ब रूप है और जो आईना स्वच्छ होता है उसी में उसका प्रतिबिम्ब पड़ता है। शिवजी का क्रोध एक ही बार होने वाला है, और होता है एक बार, ऐसा लोग कहते हैं। पर मैंने अनेक बार उनको क्रोधित होते देखा। क्योंकि उनका अधिकार है। उनका अधिकार है क्रोध करने का। **ग़ार कोई आदिशक्ति के विरोध में कार्य करता है तो शिवजी का हाथ बड़ा लम्बा है। कुछ भी करो वो मानते ही नहीं उन्हें ठिकाने लगा ही देते हैं। क्योंकि वो जानते हैं आदिशक्ति जो है वो तो कुछ नहीं करेंगी।** वो तो किसी को दण्डित नहीं करेगी, वो तो सबको माफ कर देंगी। तब उनका हाथ इतना लम्बा है कि जिसकी कोई हद नहीं और जब वो हाथ चलता है तो फिर कोई नहीं रोक सकता। उनसे आखिर कौन बोले, उनके आगे भी मर्यादाएं हैं जिसको आप उठा नहीं सकते, बढ़ा नहीं सकते।

इस तरह से आपको समझना चाहिए कि अपने वैयक्तिक जीवन में सहज योग में आपको शिवजी का ही अनुसरण करना है, क्योंकि नहीं करोगे तो पहली चीज़ है दिल (Heart) की बीमारी हो जाएगी। यह पहली चीज़ है दिल (Heart) की बीमारी हो जाएगी। I like it, I don't like it. इसमें दो तरह से खेल होता है। एक तो अति क्रोध से Heart पकड़ जाता है और दूसरा है कि क्रोध के बाद पश्चाताप हो तो आपके एन्जाइना की बीमारी हो जाती है। इस प्रकार दोनों ही चीजें बेकार हैं। पर कहने से क्रोध नहीं जाता। ये तो एक शराब जैसी चीज़ है। आदत हो जाती है क्रोध करने की, उसी में मज़ा आता है। बस मुँह फूलने लग जाएगा और गुस्सा आने लग जाएगा। आप उसको कंट्रोल नहीं कर पाएंगे। तो मैंने ये सोचा कि ग़र शीशे के सामने बैठकर आप क्रोध करें, अपने ऊपर, अपको को दो चार सुनाएं और शीशे के सामने बैठकर ये कहें कि मेरे जैसा महामूर्ख कोई नहीं, तब ये क्रोध शायद ठण्डा हो जाए। ये भी मैं शायद ही कह रही हूँ क्योंकि कभी-कभी ये समस्याएं इतनी उलझी होती हैं कि उसको सुलझाना बहुत मुश्किल है। आगे चलकर देखा गया है कि जितना हम किसी चीज़ को ध्यान देते हैं और उस चीज़ के ऊपर, हम जिसको कहते हैं, प्रतिक्रिया (react) करते हैं। किसी ने कुछ कहा, फ़ौरन reaction हो गया। ये प्रथा ज्यादा विदेश में है। जैसे कि अब ये (Carpet) कालीन बिछा हुआ है, फ़ौरन कह देंगे कि I don't like it, I like it? ये कौन होते हैं आप कहने वाले। हरेक चीज़ को आजकल की फ़ैशन है, हरेक आदमी जैसे कोई बड़ा भारी चिकित्सक है जो कहेगा कि मुझे पसन्द है मुझे पसंद नहीं। ये कहना ही नहीं चाहिए, ये कहना ही आपके आज्ञा का लक्षण है। आप अपने को समझते क्या हैं कि आप उसको कहते हैं ये मुझे पसंद है ये मुझे पसंद नहीं। कोई भी चीज़ को पसंद करने न पसंद करने का आपको कोई अधिकार नहीं। किसी बिचारे ने बढ़िया तरीके से, समझ लीजिए, आपके लिए फूल दिया तो आप कहेंगे साहब मुझे ये फूल पसन्द नहीं। उसके पीछे छिपी हुई उसकी भावना को आप इसलिए नहीं समझ पाते कि आपके अन्दर शिव तत्व नहीं। एक छोटी सी भी चीज़ हो, ग़र किसी ने गरीब ने आपको दी है तो उसको आप उसकी भावना को पीछे समझ नहीं पाते। किस प्रेम से वो चीज़ लाया? इसके लिए हमारे यहाँ सुदामा का उदाहरण दिखाया गया है कि वो कुरमुरे लेकर पहुँचे थे और उनका कितना मान श्रीकृष्ण ने किया! कोई चीज़ जो प्रेम भाव से देते हैं वो ऐसा ही है जैसे कि एक शीशे को आप पारस पीछे से लगा दीजिए, चमक जाता है। ऐसी ही चीज़ है, ग़र आपके अन्दर भावना बहुत सुन्दर हो अच्छी हो, पर पैसा नहीं हो तो आप कोई छोटी सी चीज़ भी उनको लेकर दे दें तो दूसरे को सोचना चाहिए, आहा! क्या बढ़िया चीज़ है! किन्तु इस भावना से मनुष्य के अन्दर एक सूक्ष्म दृष्टि प्राप्त होती है जिसको कहना चाहिए कलात्मक, जिसमें कला का प्रादुर्भाव होता है। जिसमें कला दिखाई देती है? तो आप समझते हैं कितनी कलात्मक चीज़ है, ये कला है प्रेम की कला। ये प्रेम की कला है। इस कला से आप देख सकते हैं कि इस मनुष्य में कितना प्यार है! कितना मोहब्बती है! कितना प्रेम करने वाला है! कितना सज्जन है! कितना अच्छा है! जब आप ये चीज़ देखना शुरु करेंगे, तब आपकी नज़र अपने ऊपर जाएगी और आप ये सोचेंगे मैं क्या हूँ? मुझमें इतना प्यार है? मुझमें इतनी सज्जनता है? मुझमें ये अच्छाइयाँ हैं कि मैं

ऊपरी जुबानी जमा ख़र्च करता हूँ और लोगों को भुलावे में डालता हूँ। वास्तविकता में हम अपने ही को भुलावे में डालते हैं। जब हम गलत काम कर रहे हैं, गलत तरीके से रह रहे हैं, जब हमारे जीवन में पूरी तरह की गलत-गलत धारणाएं बनी हुई हैं, तो हम किसी को भी सुख नहीं दे सकते और अपने को तो बिल्कुल ही नहीं दे सकते। इसलिए स्वार्थ की दृष्टि से भी स्वार्थ शब्द बड़ा सुन्दर है। 'स्व' का अर्थ जानना चाहिए। स्व माने आत्मा, उसका आप अर्थ जानिए। अर्थ जानने के लिए शिवजी की पूजा लोग करते हैं। पर मैंने देखा कि शिवजी की पूजा करने वाले लोग बड़े गुस्से वाले, बड़े क्रोधी, बड़े कंजूस और न जाने क्या-क्या होते हैं। शिवजी जैसे दाता कोई नहीं शिवजी जैसे प्रेम करने वाले जो ये प्यार का स्रोत हैं, जो आज बह रहा है, ये शिवजी के चरणों की लीला है। उन्हीं की वजह से ये कार्य हो रहा है कि मनुष्य प्यार में डूबा जा रहा है। सहजयोग के बाद जब आपकी स्थिति वो हो जाती है तो, आप जीवात्मा कहना चाहिए या आपके Attention जो हैं, चित्त जो हैं, वो शिवजी के चरणों में लीन हो जाता है और शिवजी के चरणों में लीन होते ही क्या होता है कि आपके अन्दर जो पंचतत्व के गुण हैं वो भी बिल्कुल सूक्ष्म हो जाते हैं।

मैंने आप लोगों से पहले चार तत्वों के बारे में बताया था पर पाँचवा तत्व जिसे कि Eather कहते हैं अंग्रेजी में, उसके बारे में नहीं बताया। अपने यहाँ आकाश कहते हैं। आकाश तत्व का ये है कि जब मनुष्य सूक्ष्म स्थिति में जाता है तो उस सूक्ष्म आकाश को भी प्राप्त करता है। वो आकाश जो कि eather को चलाता है। उस आकाश को चलायमान भी करने की जरूरत नहीं। ग़र किसी को कोई तकलीफ होती है, कोई परेशानी होती है तो वो सब जगह व्याप्त है। हर जगह वो आकाश तत्व जो ज़त्व मैं कह रही हूँ, व्याप्त है। फौरन आपका असर वहाँ पहुँच जाता है जहाँ ज़रूरत होती है। बड़े कमाल की बात है, पर होता है और हुआ है और इसी को लोग चमत्कार कहें पर ऐसी बात नहीं है। सहजयोग में ग़र आप शिव तत्व में जागृत हो जाएं तो आपके अंदर के जितने सूक्ष्म-सूक्ष्म, सूक्ष्मतर कहना चाहिए, जो भाव है और स्थिति है वो जागृत हो जाती है।

इसलिए चाहिए कि हम लोग पहले अपने दिल को साफ करें। अब दिल के साफ करने में मैंने आपसे तीन रिपुओं की बात कही। अब चौथा रिपु जो हमारे अन्दर है। वो है मद। मद माने घमण्ड। जब औरतों में घमण्ड आ जाता है तो वो आदमियों की चाल चलती है। फिर वो औरतों जैसे नहीं चल सकती घमण्ड में । हम माने बहुत हम कोई विशेष, हमारी कुछ तो भी ज्यादा या तो पैसे वालों की लड़की है, या सुन्दर है, या सुशिक्षित है या चाहे जिसकी भी बात है। किसी भी बात से अगर घमण्ड आ जाए तो औरत जो है वो आदमी जैसे चलने लगती है। और जब आदमी को घमण्ड आता है तो औरतों जैसे चलने लगता है, माने बनता ठनता है बहुत शीशे के सामने घण्टों बैठता है, बाल बनाता है, ये करता है वो करता है। सब औरतों के धंधे करता है। बनना ठनना औरतों का काम है। चलते वक्त भी सीधे नहीं चलता, एक विशेष रूप से चलता है। ग़र पीछे देखो तो लगेगा कोई औरत चली जा रही है मर्दाना कपड़े पहन के। सो जब आदमी के अन्दर ये चढ़ जाता है मद तो कहते हैं न मदमस्त हुए, तो मदमस्त हुए तो डोलने लग जाते हैं हाथी की जैसे। उनका सारा ही ढंग अलग अलग हो जाता है। वो बात करेंगे

तो, बात नहीं करेंगे तो, बैठेंगे तो, हर चीज़ में ये दिखाई देता है कि इनके कोई न कोई घमण्ड है। अब समझ में नहीं आता कि किस चीज का घमण्ड इनको चढ़ा हुआ है। कौन सी चीज़ से अपने को विशेष समझ रहे हैं। ये सारी ही चीजें तुच्छ हैं। इसका कोई अर्थ ही नहीं है। सहज में इसका कोई अर्थ नहीं है। इसलिए ऐसी चीजों में विश्वास कर लेना कि हम कोई विशेष हैं तो आप शेष ही रह जाते हैं विशेष नहीं रह जाते शेष ही रह जाते हैं। मतलब ये है कि अपने बारे में कोई सी भी ऐसी कल्पना कर लेना कि हम बड़े रईस हैं या हम बड़े ये हैं। अब तो गरीबों को भी घमण्ड हो गया है, दलितों को भी घमण्ड हो गया है, कुछ समझ नहीं आता! वो जो भी हो वो हम हैं। इस तरह से लोग बातें करते हैं। आप स्वयं साक्षात क्या हैं? एक ईश्वर भक्त, परमात्मा को मानने वाले सहजयोगी है। आपको इस तरह से अपने बारे में सोच लेना, आनन्द से परे होन
। है, क्योंकि शिव-शक्ति जो है आनन्द विभोर मनुष्य को करती है। मनुष्य आनन्द में मस्त होने के लिए शिव की भक्ति करता है। पर मैं देखती हूँ अधिकतर शिव भक्त जो होते हैं, बड़े सड़ियल लोग होते हैं। उनसे कोई बात भी नहीं कर सकता, फायदा क्या है? शिव की भक्ति करते हो, जो नटराज साक्षात सारे कला का प्रादुर्भाव करने वाले जो अत्यंत आनन्दी और आनन्द के स्वरूप हैं, उनके आगे ये शिवभक्त, इनको शिवभक्त कैसे कहा जाए? गले में इतना बड़ा बड़ा लिंग लटकाते हैं जिससे दिल का दौरा (heart attack) आता है। उसकी क्या जरूरत है। आप स्वयं साक्षात लिंग स्वरूप वोही हैं। वो न होते हुए वो जो कार्य करते हैं कि हम शिवभक्त हैं। लगे लड़ने शिव भक्ति करके और उसके अलग-अलग चिन्ह हैं। ग़र शिव भक्त होगा तो ऐसे ऐसे चन्दन लगाएगा। अगर विष्णु भक्त होगा वो ऐसे लगाएगा। अरे भई इसका क्या अर्थ है? ऐसे लगाने का अर्थ है हम उर्ध्वागामी हैं। ठीक है आप ऊपर चढ़ रहे हैं उर्ध्वगामी और पहुँचकर के आप शांत। दोनों ही लगाना चाहिए और नहीं तो लगाओ ही मत। इसका कोई अर्थ होना चाहिए कि जिस चीज़ को प्राप्त करने जा रहे हैं, उसका ये सोपान मार्ग है। जिस रास्ते से आप गुजर रहे हैं इसमें से एक-एक गन्दी चीजों को छोड़ते जाते हैं। **दूसरों को भला-बुरा कहने से पहले अपने को भला-बुरा कहना सीखिए।** मैं ऐसी हूँ। मैं वैसी हूँ। अपने को कहिए, जब आप अपने को कहना शुरु करेंगे तो, आप देखिए, सारे भूत भाग जाएंगे। क्योंकि ये सारे भूत हमने इकट्ठे किए हैं, खुद ही सोच-सोच के, अपनी आज्ञा से। अपनी आज्ञा से भूत इकट्ठे होते गए, दिमागी जमा खर्च हो गया और आदमी बहुत क्लेशदायी दुखदायी हो जाता है और वो दुखदायी उसको भी दुविधा ही करता है। आप किसी को दुख देकर सुख नहीं पा सकते। उसका जरूर असर आना है। चाहे आप पत्थर हों, पर उसका असर आता है। और उसका असर ये-ही आता है कि आदमी बड़ा दुखी हो जाता है। ये तो एक माँ की बात है कि वो आपके सुख की बात करती है। आपको जिससे सुख मिले, जिससे आपको संतोष मिले, जिससे आपको शांति मिले, जिससे आपको प्यार मिले और दुनिया में एक आप सज्जन इन्सान हो जाएं। ये एक तो माँ का तरीका है।

पर शिव का ये तरीका नहीं। शिव एक हद तक चलते हैं नहीं तो ऐसा तड़ाकते हैं कि मैं घबराती रहती हूँ कि अब ये आदमी किधर

जा रहा है। अब इसका होगा क्या? ये कहाँ पहुँचेंगे? ये क्या कर रहे हैं? उनको ये नहीं, उनके अन्दर ये नहीं है कि चलो भई इनको, ये बहुत खराब हैं बुरे हैं तो माफ कर दें। हाँ माफ करने योग्य हो तो माफ करते हैं। जो उनकी बहुत तपस्या करता है उनको भी वो वरदान देते हैं। पर जो आदमी मूलत: 'basically' जो ठीक नहीं होना चाहता उसको वो ठीक कर देते हैं। ये बात सही है इसलिए उनसे डरना भी चाहिए। उनको भयंकर भी इसीलिए कहते हैं कि जब बिगड़ते हैं तो वो किसी को भी नहीं छोड़ते। पर उनका सबसे ज्यादा जो बिगड़ना है वो तब होता है जब अन्त का, कहते हैं न कि रात्रि ऐसी आएगी कि सब नष्ट हो जाएगा। उस समय वे अपने क्रोध से सब चीज़ नष्ट करते हैं। ये समय तब आता है क्योंकि मैंने आपसे कहा था कि ये आखिरी निर्णय है, last judgment है। इसमें आप कौन से रास्ते पे जाते हैं, कहाँ जाते हैं, क्या करते हैं, ये सब पूर्णतया आपके अन्दर लिखा जाता है। आपका जैसे कच्चा चिट्ठा बन जाता है और उसी के अनुसार आप चाहे स्वर्ग में जाएं और चाहे आप नरक में जाएं। नर्क में भेजने वाले तो शिवजी हैं, मैं नहीं। मुझे कोई मतलब नहीं नर्क से। लेकिन शिवजी को है वो खींच के आपकी टांग आपको नर्क में डाल देंगे। फिर आप ये न कहें मैं तो माँ का बड़ा भक्त हूँ और मैं माँ को मानता हूँ, तो मुझे क्यों ये ऐसा हो गया? इसका कारण मैं नहीं हूँ। जिसने एक बार मुझे माँ कह दिया उसके लिए मैं कभी कुछ बुरा नहीं सोचती। पर, शिवजी की मर्यादाएं ग़र मैं हूँ तो मेरी मर्यादाएं भी वो हैं। पर इस मामले में सबका दोनों का स्वभाव बिल्कुल विपरीत होने के कारण आपको बहुत समझ करके रहना है। ईसा मसीह में भी जो ग्यारह रूद्र हैं, वो भी ये ही हैं। रुद्र के जो भावना है वो भी शिवजी के ही स्वरूप हैं। इसीलिए बहुत संभल के आपको रहना चाहिए। इसके बारे में आप को इसलिए warning चेतावनी देनी है कि सहजयोग में भी लोग आते हैं, कोई पैसा कमाता है, कोई बुराई करता है, कोई खराबी करता है, कोई अन्याय करता है, ऐसे लोग तो झटक जाते हैं, निकल जाते हैं। पर निकलते ही साथ शिवजी की कक्षा में आ जाते हैं। फिर मुझे खबर आती कि वो दिवालिए हो गए, वो ऐसा हो गया, वैसा हो गया। मैंने कहा भई अब मुझे मत बताओ। जब वो खुद ही छोड़ के भागे अपने संरक्षण से तो उसे कौन बचा सकता है? इसलिए आपको चाहिए कि आप अपना संरक्षण शिव में खोजें, माँ में तो है ही संरक्षण, लेकिन शिव में खोजना चाहिए। उसके लिए ये जो मैंने अभी आपको बताया ये पांच चीज़ें हैं। इन पांच तत्वों में जो सूक्ष्म चीज़ है उसको प्राप्त करना है। **उसको प्राप्त करने के लिए आपको ध्यान करना जरूरी है। जो लोग ध्यान करते हैं वो अलग ही दिखाई देते हैं और जो लोग ध्यान नहीं करते वो अलग दिखाई देते हैं।** इसमें कोई शक नहीं। **अब जो लोग ध्यान करते हैं पर ध्यान में मन नहीं, ध्यान में प्रवृत्ति नहीं, ध्यान की समझ नहीं, ध्यान में सूझ-बूझ नहीं और उसके प्रति एक आलस्य हो तो भी वो ध्यान फलीभूत नहीं होता, उससे कोई फायदा नहीं होता। ऐसा ध्यान हो, जिससे अंग-अंग आपको जो है वो खुश हो जाए। जिससे आनन्द की वर्षा हो।**

शिवजी का पहला और महत्वपूर्ण जो हिसाब किताब है वो ये है कि वो आपको आनन्दित करते हैं, पुलकित करते हैं। उनके नाम स्मरण से ही मनुष्य को आनन्द मिलना

चाहिए। पर उससे उल्टा होता है। उसके विरोध में ही लोग रहते हैं। जो होना चाहिए वो नहीं होता है। ये मुझे बड़ा आश्चर्य होता है कि जिनको हम शिव के भक्त समझते हैं वो इस कदर करके सूखे कैसे हो सकते हैं? हो ही नहीं सकते। इसमें एक कारण और भी है कि जो बहुत ज्यादा कार्य में रत रहते हैं, बहुत ज्यादा, वो (right sided) आक्रामक हो जाते हैं। जब वो आक्रामक बहुत हो जाते हैं तो शिव से वंचित हो जाते हैं, शिव से हट जाते हैं। और शिव फिर अपना असर दिखाते हैं। अब आपको पता है कि शिवजी की बहन सरस्वती हैं। जो सरस्वती की पूजा करते हैं। माने जो पढ़ते हैं, लिखते हैं, ये सब ज्ञान व्यान इकट्ठा करते हैं और इसके अलावा कला में बहुत रुचि रखते हैं, ऐसे जो लोग हैं कला की ओर जिनकी रुचि है ऐसे लोग जो हैं जो सरस्वती की पूजा करते हैं उनकी वन्दना करते हैं, उनको सबसे पहले ये जानना चाहिए कि ये शिवजी की बहन है। और आप जानते हैं बहन का रिश्ता बड़ा जबरदस्त होता है। ग़र आप इनकी बहन की कहीं प्रवंचना करें या उससे कोई बुरे गुण ले लें या बुरी बातें करें, जैसे कि बहुत से लोग हैं गन्दी गन्दी किताबें लिख देते हैं, बहुत से लोग हैं जिनके पास ज्ञान है उसको उल्टा सीधा कर देते हैं, ऐसे लोगों पे शिवजी का हाथ बड़े जोर से पड़ता है। क्योंकि उनकी बहन जो है वो बड़ी महत्वपूर्ण है। उसकी प्रवंचना करना माने बहुत ही बड़ा गुनाह है, उनकी दृष्टि में बहुत बड़ा गुनाह है। और आदिशक्ति के लिए भी उनका बहुत कड़क नियम है, इसमें कोई शक नहीं।

अब जो सहजयोगी हैं उनको सबसे पहले अपनी ओर ध्यान देना है। मेरा मतलब नहीं कि शीशे के सामने घण्टों बैठे रहिए। बिल्कुल भी नहीं। शीशे के सामने बहुत बैठना भी एक बीमारी मानी जाती है। पर ये है कि आप अपनी तरफ नज़र करें और अपनी तरफ नज़र करके देखें कि मेरे अन्दर कौन सी खराबी हैं? मैं कौन से कौन से गलत काम करती हूँ? अपनी भारतीय संस्कृति में जो कुछ बताया गया है, सीधा रास्ता, उसे लेना है। आजकल नया ज़माना आ गया है तो लोग सोचते हैं जैसे भी रहो ठीक है, ऐसी बात नहीं। हिन्दुस्तान में रहते हुए आपको भारतीय संस्कृति के अनुसार पूर्णतया रहना होगा। आपका सारा जीवन क्रम भी भारतीय संस्कृति से जुड़ा रहे क्योंकि भारतीय संस्कृति में शिव तत्व का बड़ा महत्व है। सबसे ज्यादा जो है शिव तत्व का है और शिव तत्व ने ही हमारी मर्यादाएं बनाई हैं कि इस मर्यादा को आपने लाँघा कि आप गए। जो मर्यादाएं हमारी संस्कृति में हैं, वो शिव की कृपा से हैं। वो सारी बातें जो हमें बताई गई हैं आज तक ये ऐसे नहीं करते वैसे नहीं करते, छोटी से लेकर बड़ी तक, ये मर्यादाएं शिव ने बनाई हैं। वो इसका इतना ज़बरदस्त ख्याल रखते है कि जैसे ही आप इस मर्यादा को लांघ जाते हैं आप पर उसका असर आता है। अब शिव तत्व में इतनी-इतनी गलत धारणा लोगों ने बना दी है। जैसे बहुत से सोचते हैं कि भंग पीने से आप शिव तत्व के हो जाते हैं। बहुत से लोग जो शराब पीते हैं वो सोचते हैं कि शराब पीने से आप शिव तत्व में डूब जाते हैं। बहुत सारी ऐसी गलत-गलत चीज़ें लोगों ने बना ली हैं कि शिवजी के लिए ये चीज़ है। वो शिवजी ने ग़र पिया तो शिवजी ने तो विष भी पिया था, आप विष पिएंगे? उन्होंने इसलिए पिया था कि संसार का सारा विष जो है वो खा लें, इसलिए वो धतूरे को खाते थे कि धतूरा जो है इसमें ज़हर होता है, तो वो खाते थे। इसी

प्रकार आपने सुना होगा कि साईंनाथ जो थे वो बहुत तम्बाकू पीते नहीं थे पर वो चिलम में भर कर खींचते थे। वजह ये है कि महाराष्ट्र में लोग बड़ा ही तम्बाकू खाते हैं, हर आदमी, मंत्री भी तम्बाकू खाएगा और उसका चपरासी भी खाएगा और मंत्री चपरासी से कहेगा कि भई तेरे पास तम्बाकू हो तो दे। इस कदर वहाँ पर बिल्कुल तम्बाकू का ज़ोर है हालांकि इतनी तम्बाकू तो वहाँ होती नहीं है पर पता नहीं उन लोगों को तम्बाकू की बीमारी है? इतनी तम्बाकू खाते हैं महाराष्ट्र में लोग। उस तम्बाकू के लिए ही साईंनाथ ने ये सोचा कि मैं ही क्यों न इनकी सारी तम्बाकू खा जाऊँ। इसलिए वो तम्बाकू खींचते थे। तो लोगों ने कहा लो साईंनाथ भी चिलम पीते थे तो हम भी पीएंगे। जहाँ वो वहाँ ऐसे लोग हो गए जो तम्बाकू इसलिए लेते थे कि इन लोगों की तम्बाकू की जो लत है वो खत्म हो जाए । अब वो चाहे उसको कुछ भी कहिए है तो वो तम्बाकू और तम्बाकू का शिवजी से वैसा सम्बन्ध नहीं है, पर ये जरूर है कि सब वो सारी दुनिया भर की तम्बाकू को खत्म करना चाहते थे। अब समझ लीजिए कि अगर आप देवी हैं, सो देवी का काम है कि सारी दुनिया के दुष्टों को भूतों को खा ले। अब आप भी खाएंगे क्या भूत? देवी का कार्य है कि वो जितने भी आपके पीछे में लगी हुई बीमारियाँ हैं उनको आत्मसात कर ले। तो अब आप लोग करेंगे क्या? ये आपका कार्य नहीं। इसी प्रकार जो कुछ भी साधु-सन्तों ने किया है वो सब करने के लिए तो अभी आपकी ये शक्ति नहीं और न ही आपका कार्य है। आपका कार्य जो है वो अपनी स्वच्छता करना, अपने को ठीक करना। पहले आप उस दशा में पहुँच जाएं तब फिर सब मामला ठीक हो सकता है। पर ग़र आप उस दशा में नहीं जाएंगे तो बेकार है। आपके लिए ये सारे उपत्व्याप्त करने से कोई फायदा नहीं। बहुत सारी चीज़ें हैं जिसका समर्थन हो सकता है गलत तरीके से, पर हमको ग़र सही तरीके पे रहना है और सही मार्ग से चलना है तो सर्वप्रथम अपने हृदय को हम स्वच्छ करें।

ये जो हमें आदतें लगी हैं। ये आदतें भी सारी हमारे हृदय पे असर करती हैं। इसलिए पहले जमाने में ऐसा होता था कि जो भी विद्यार्थी आते थे उनको जंगलों में सोने को कहते थे। वो जंगलों में रहे जहाँ साँप, बिच्छू, मकिड़याँ, बकड़ियाँ सब लगे, वहीं रहो। तुम्हारे ऊपर ऐशोआराम न चढ़ें। ज्यादा से ज्यादा झोंपड़ी में, जिसको कि गोबर से लीपा हुआ है, उसमें सुलाते थे और बहुत सादगी का जीवन, कपड़े भी बहुत कम पहनने जिसमें कि बच्चों को कपड़ों के प्रति लालच न हो। हमें ये कपड़ा पहनना है, हमें ये जूता खरीदना है, हमें ये खाना खाना है, ये सहजयोगियों को कहना नहीं चाहिए। आपको मालूम है आपकी माँ कहीं भी रह सकती है, कहीं भी सो सकती है, कुछ भी खा सकती है। तो ये जो चीज़ है अपने अन्दर स्वाद, हमारे यहाँ जो इन्सान देखो, हिन्दुस्तान का, उसको खाने-पीने का बड़ा शौक है। सहजयोगी भी एक-दूसरे को बुलाएंगे खाने पर आइए, काहे को? औरतों को ख़ासकर, कि जैसे कहीं जाओ तो कहें माँ आप हमारे घर खाने पर आओ। मैंने कहा भई खाने का बड़ा गड़बड़ काम है। मैं तो किसी होटल में नहीं खा सकती, मैं कहीं नहीं खा सकती और घर में भी बग़ैर नमक बग़ैर चीनी के रहती हूँ। मेरे अन्दर अस्वाद है, बचपन से अस्वाद है। मैं हर हालत में जो मिले सो खाती हूँ। पर हम लोगों की जो जुबान है, बड़ी चटोरी है। हिन्दुस्तानियों में चाहे वो यू.पी. वाले

हों, पंजाबी हो, चाहे दक्षिण के हों, खाने के मामले में हिन्दुस्तानी बहुत कुशल हैं। और आदमियों को बुद्धू बनाते हैं खाना खिलाकर। हमारे पति को ये पसन्द है, हमारे पति को वो पसन्द है, करे क्या? उसकी गुलामी करेंगी, पति को खुश करेंगी। उनको ये करेंगी। रात-दिन खाने-पीने की बात ग़र करे तो वो सहजयोगी नहीं। अब बाबा जब मैं वहाँ थी, मिलान में, वहाँ जब प्रोग्राम हुआ, गुरु पूजा में, मैंने खुद खाना बनाया। क्या करें? चार साल तक मैं वहाँ खाना बनाती रही क्योंकि दूसरे लोग अच्छा खाना नहीं बनाते थे। लोग कहते माँ ये तो प्लास्टिक के जैसे बना है। पर हिन्दुस्तानी उसमें विशेष थे, जितने भी हिन्दुस्तानी वहाँ आएंगे सब मुझे मिलना चाहेंगे, उनका विशेष अधिकार है मेरे ऊपर। और दूसरा खाने पीने में बड़ा वो, कि यहाँ का खाना ठीक नहीं। अब एक और नई चीज़ शुरू हो गई हिन्दुस्तानियों में कि साथ जुड़े स्नानागार चाहिएं। इनके गुसलखाने घरों में जाकर देखो तो, कैसे इनके माँ बाप रहते थे। इनको साथ जुड़े स्नानागार चाहिए, वो भी अंग्रेजी ढंग का चाहिए। मैं इसलिए आज कह रही हूँ कि इसने बड़ा परेशान कर दिया मुझे। गणपति पुले में उनके लिए अलग से मैंने स्नानागार बना दिए, बाबा अंग्रेजी बना दिए। पर पहले मैंने हिन्दुस्तानी बनाए, मैंने सोचा हिन्दुस्तानी को हिन्दुस्तानी पसन्द आएगा और अंग्रेजों को अंग्रेजी बना दिया। तो ये फ़रमाते हैं कि नहीं, हमको अंग्रेजी ही चाहिए। बताओ, मैंने कहा लोटा लेके जंगल में जाओ, ये ही तुम्हारा इलाज है। सालों भर ऐसे ही जाते रहे और अब बड़े साहब हो गए हैं attached bathroom के लिए। तो बेचारे अंग्रेजों ने जो परदेसी foreigner थे, बिचारों ने कहा, माँ हमें तो हिन्दुस्तानी अच्छे लगते हैं, क्योंकि बड़ा साफ है। हमें आप हिन्दुस्तानी दे दो। तो मैंने अदल बदल दिया तो बड़े खुश हिन्दुस्तानी कि attached bath मिल गया। शर्म करनी चाहिए! सहजयोगियों को ऐसी बातें करते हुए शर्म आनी चाहिए। आपके बाप दादा तो लोटा लेकर के जाते थे और आपको ये क्या शौक? आपको कोई बीमारी है या कोई तकलीफ है? मुझे एक आफ़त में डाल दिया था। पर एक तरह से मेरे दिमाग में बात आ गई कि चलो भई तुम ये लो तुम ये लो। इस तरह से बहाने बाजी और ये करना ये हिन्दुस्तानियों का ही काम है। अब आपको और हैरानी होगी कि जो लोग कबैला आते हैं, सब लोग सबके साथ रहते हैं। बहुत रईस लोग हैं जिनके पास मोटरें हैं सब हैं। लेकिन वो सब पंडाल में सोएंगे। पर हिन्दुस्तानी अपने लिए एक विशेष जगह होगी, होटल में रहेंगे, मोटरों में घूमेंगे। कोई भी तरह की ज़रा सी भी उनमें त्याग नहीं। त्याग करना सीखा ही नहीं। आज कल हम माडर्न क्या हो गए मेरी समझ में नहीं आता। अब इन लोगों को घरों में नौकर नहीं तो ये attached Bath इसलिए नहीं रखते, एक ही रखते हैं कि बाबा सफाई करना पड़ता है। आप लोगों के नौकर चाकर हैं तो चलो दस दस Bathroom रख लिए। **पर ये सब आदतें आपको अपने स्वयं की शक्ति से दूर ले जाएंगी। फालतू चीज़ों में आपका ध्यान जाएगा। फालतू बातों में आपका ध्यान जाना, ये सब आपको एक बहुत ही सर्वसाधारण मनुष्य बनाते हैं।**

औरतों के आजकल चला हुआ है कि Beauty Parlour में जाएंगी। शक्ल तो वही रहती है। वहाँ पैसा खर्च करेंगी, वहाँ ये करेंगी। हमारे पूना में ब्राह्मणों की औरतें Sleev less पहनेंगी, काला चश्मा लगाएंगी और वो मोपेड

पर बैठकर घूमेंगी। मेरे समझ नहीं आया। पूना में जो कि पुण्य पटनम है, ये क्या पुण्याई का इन्तजाम है? इस तरह से हम लोग विदेशी चीज़ को ले रहे हैं, बगैर सोचे कि इसमें शिव का तत्व कितना है? शिव को देखो नंग-धड़ंग बैठते हैं अपने ऐसे! वो अपने बारात में भी नन्दी पर बैठ कर गए। नन्दी क्यों? क्यों नन्दी उनका शिष्य है, वो जो बोलेंगे उस पर गर्दन हिलाता है। कुछ भी बोलें तो इसलिए नन्दी उनका सबसे प्यारा शिष्य है। अब इस पे बैठ के वो वहाँ पहुँचे विवाह करने, तो पार्वती जी को तो कुछ objection नहीं था पर उसके भाई साहब जो विष्णु थे वो जरा कुछ घबराए कि ये क्या चला आ रहा है दुल्हा मियां? मेरा ये मतलब नहीं कि ऐसे दूल्हे आप बनकर जाइए, ये मतलब नहीं। पर तो भी उसमें ताम झाम दुनिया भर की चीजें करा कर के और वो खर्चे में डालने से फायदा नहीं। **समझदारी, समझदारी आपका अलंकार** है हर चीज़ को मान्य कर लेना, हाँ ठीक है। जो भी है ठीक है, खाना ठीक है। अब वो किसी के यहाँ खाना खाने जाएंगे और उसकी बुराई करते रहेंगे। मुँह पर नहीं करेंगे घर पे आके करेंगे। अरे क्या खाना बनाया था। किसी के यहाँ अच्छा खाना बना हो तो बीबी से कहेंगे वैसे तुम बनाओ। सारी जिसको 'जिह्वा लोलुप्य' संस्कृत में कहते हैं हिन्दुस्तान में बहुत ज्यादा है। हद से ज्यादा है। इसको कुछ कम करना चाहिए। ये लोग आपका खाना खाते हैं मैंने कभी नहीं सुना किसी ने शिकायत की है। हालांकि इन लोगों का अंग्रेजी खाना तो कोई खा नहीं सकता आप लोगों में से। लेकिन इस तरह से अपने ऊपर ये जो लेपन करा रखा है इससे आनन्द में विभोर नहीं हो सकते। शिवजी का जो आनन्द है उसको तो बताने के लिए लोगों ने कहा था कि आप वैराग्य करो। पहले **वैरागी** हो जाओ, हिमालय पे जाओ एक टाँग पर खड़े रहो। फिर कपड़े बिल्कुल कम पहनो। नदी में जाके नहाने का और वैसे ही गीले कपड़ों से ध्यान करो। सारे कष्ट शरीर को देते थे, और गुरु लोग अब भी मारते-पीटते हैं। बहुत सताते हैं। ऐसे थोड़े ही बैठे बिठाए पार करा दे। न न, काफी आफत कराते हैं और तब उसके बाद लोग पार होते हैं। पर उनका जो पार होना है वो जम जाता है। स्थिति है। और आप लोगों को ऐसे ही पार करा दिया, **अब वो बाकी की पीछे की चीज़ें तो चल ही रही हैं सब। वो आफत तो चल ही रही है। अब उसको क्या करें? तो उसको ही छाँटना है। इन सब चीज़ों को जो हमने जोड़ लिया है इसको छांटना है, खत्म करना है।** इसके लिए उपद्रव करने की ज़रूरत नहीं, कोई वैराग्य लेने की ज़रूरत नहीं, घर बार छोड़ने की ज़रूरत नहीं। किसी भी तरह का द्रविड़ी प्राणायाम करने की ज़रूरत नहीं। पर एक चीज़ ज़रूर है कि अपना ये कम करना चाहिए, कम करते जाना है। धीरे-धीरे कम करो। **अस्वाद अन्दर आना चाहिए,** बहुत ज़रूरी है। अस्वाद एक बड़ी भारी चीज़ है, लोग बहुत नाराज़ हो जाते हैं। ग़र खाना उनकी समझ में नही आया तो थाली फेंकेंगे कहीं मारेंगे पीटेंगे नौकरों को, पता नहीं क्या। ग़र आपके अन्दर अस्वाद आ जाए तो बहुत हलवाइयों की दुकानें भी बन्द हो जाएंगी मेरे ख्याल से। बहरहाल मेरा कहने का मतलब ये है कि शरीर का माध्यम नहीं रखना। शरीर के लिए comfort है समझ लीजिए ग़र आप पलंग पर सोते हैं तो ज़मीन पे नहीं सो सकते तो दस दिन जमीन पे ही सोइये। कैसे नहीं सो सकते? अपने शरीर को अपना गुलाम बनाए बग़ैर नहीं हो सकता। अपने comfort की जो बातें हैं वो

खत्म करना चाहिए। बहुत से लोग हैं, वो बस से नहीं चल सकते, क्योंकि वो मोटर से ही जा सकते हैं। फिर इसकी मोटर माँग, उसकी मोटर मांग, इसमें बैठ, उसमें बैठ! पर कोई भी ये नहीं सोचेगा कि चलो आज बस से चलकर देखें क्या होता है? और पहले तो बस भी नहीं थी लोग चलते ही थे। हम जब स्कूल में पढ़ते थे पाँच मील रोज़ सवेरे चल के जाते थे। हमारे घर में मोटरें थीं सब कुछ था। ये माँ-बाप थे हमारे। पर हमें खुद बहुत शौक़ था। पैदल चलो और जूते नहीं पहनते थे, चप्पल नहीं, हाथ में लेके चलते थे क्योंकि vibrations की वजह से अच्छा था ज़मीन पे चलना। आप लोग भी थोड़ा सा जूतों के बगैर, चप्पल के बगैर चलना सीखिए। बहुत ज़रूरी है। इससे बड़ा फायदा होगा। ज़मीन को भी vibrations मिलेंगे और आपको भी अच्छा लगेगा। हर तरह की चीज़ों में हम लोग बहुत ज्यादा आराम पसन्द हो गए हैं पहले दो चार नवाब लोग जैसे थे वैसे अब हम लोग हो गए हैं, और क्या मिला? उससे कुछ नहीं मिलने वाला। इस सब की गुलामी करते करते सारी ज़िन्दगी बीत जाएगी। इस गुलामी को कम करना है और सिर्फ परम शिव के तत्व को अपने अन्दर धारण करना है। उसके लिए ज़रूरी है कि कोई भी चीज़ महत्वपूर्ण नहीं, आज ये कपड़ा पहनना है तो कल वो कपड़ा पहने तो उसके साथ वो मैचिंग करना है तो उसे साथ वो चाहिए। जो कुछ मिलता है ले लो, जो कुछ आता है उसको पहन लो। कोई हर्ज़ नहीं है उसमें आप पर कोई आफत नहीं आने वाली। उल्टे आपको समाधान होगा कि मैं समाधानी हूँ। जो भी मुझे मिला वो मैं समाधान से स्वीकार्य करता हूँ। आजकल हमारे वहाँ, पता नहीं यहाँ भी है कि नहीं, वो गैस का सिलेण्डर सोलह रुपये महंगा हो गया तो औरतें उनकी बड़ी फोटो आई, सब बड़ी सजी-धजी। मैंने कहा ये पन्द्रह रुपये का तो उनके पाउडर ही लगता होगा। ये लोग काहे की वो जा रहे हैं कि हम जा रहे हैं अब हड़ताल पे, काहे के लिए? क्योंकि पन्द्रह रुपए बढ़ गए, और तनख्वाह आप की इतनी बढ़ गई वो किसी को नहीं दिखाई दिया। हम अपने नौकर को पहले समझ लो कुल बीस-पच्चीस रुपए देते थे, आज ढाई हजार रुपए मिले तो भी वो शिकायत करेगा। उसको कपड़े भी मिलते हैं। सब मिलता है। कितनी भी तनख्वाह बढ़ जाए तो क्या दाम नहीं बढ़ेंगे। जहाँ तनख्वाह ज्यादा मिलती है वहाँ दाम बढ़ते हैं। वो सोने की बताते हैं कि जब लंका में सोने की ईंट मिलती है। एक साहब गए सोने की ईंट लेने तो देखा क्या है कि एक दिन उन्होंने काम किया तो उनको दो ईंटें मिलीं। उसके बाद वो नाई के पास गए उनकी शेव करने के लिए तो उसने कहा कितना दाम कहने लगा कि दो ईंटें। जैसे कमाई वैसा खर्चा। एक समझदारी की बात है। तो लग गए उसी के पीछे में कि माँ ये महंगाई हो गई, ये हो गया। मेरे तक शंका आता है। मैंने कहा तनख्वाह कितनी बढ़ी तुम्हारी? बहुत-बहुत बढ़ गयी फिर तुम्हें महंगाई का रोना कैसा? जब तनख्वाह बढ़ेगी तो महंगाई तो होनी है। आपकी तनख्वाह तो बढ़ जाए महंगाई न बढ़े ऐसा कैसे हो सकता है? सर्वसाधारण चीज़ है ग़र हमें आ जाए तो सामाजिकता में भी हम शिव का तत्व पा लें अब गाँधी जी जैसे थे बड़े ही ज़बरदस्त। उनके साथ मैं थी, आश्रम में रहते थे। मुझे कुछ नहीं होता था पर सब लोग रोते थे। क्योंकि उनका कहना था कि सबके बाथरूम साफ करो। सब मेहमानों के, सब के, वो जमादार नहीं रखते थे। अपने कपड़े ख़ुद धोओ, अपनी थाली खुद

धोओ, खाने में सब खाना उबला हुआ। उसके ऊपर सरसों का तेल आप ले सकते हैं। अब बताइए कितने लोग हिन्दुस्तानी खा सकते हैं वो खाना? बस दो तीन दिन रहते थे और भाग जाते थे। ये हालत थी। **अब आप लोगों को भी थोड़ा अस्वाद सीखना चाहिए।** अब अस्वाद के लिए ऐसा है, मेरे से पता नहीं कैसे छूटता है, पर आप ग़र खाना थोड़े दिन उबला ही खाएं तो कैसे क्या रहेगा? कोई माँ अपने बच्चों को ये नहीं कहेगी लेकिन मैं क्या करूं। इसमें शिव तत्व खराब हो रहा है। सब लोग ग़र खाने-पीने में लगे रहें तो आपका शिव तत्व गायब हो जाएगा और सारी मेहनत ही बेकार जाएगी। इसलिए खाने पीने में बहुत ज्यादा रत रहना कोई अच्छी बात नहीं। पहले जमाने में लोग एक आध दिन उपवास भी करते थे, कुछ न कुछ अपना त्याग करते थे। पर आजकल बड़ा मुश्किल है ऐसा कहना। आप ग़र संतुष्ट हो जाएं, समाधानी हो जाएं, तो आपको कोई ज़रूरत नहीं है, बिल्कुल ज़रूरत नहीं है कि आप हर समय खाने-पीने की बातें करें और अपने यहाँ खाने पर बुलाएं।

फिर हमारे यहाँ एक जाति-पाति बहुत है, कि अगर कायस्थ है तो अलग है, या हिन्दू है ब्राह्मण है तो अलग है, फलाने अलग हैं। अब भी है। अब क्या होगा कि जो कायस्थ सहजयोगी हैं वो सब एक हो गए, ब्राह्मण सहजयोगी एक हो गए। अरे भई अब तुम सहजयोगी हो गए अब भी काहे को ये कर रहे हो ब्राह्मण और ये वो। फिर कायस्थ कायस्थों को खाने पर बुलाएंगे और ब्राह्मण ब्राह्मणों को खाने पर बुलाएंगे। अब ये इस तरह की मूर्खता अग़र करनी है तो सहजयोग में काहे को आए? सहजयोग में जाति पाति, ये कुछ नहीं। आपकी वो ही नहीं मिटी जो बिल्कुल मूलतः गलत चीज़ है तो अब क्या मिटने वाला है? शिवजी को था क्या जाति पाति? वो तो एकाक्ष को, किसी की टांगें टूटी हुई है, किसी का हाथ टूटा हुआ है, ऐसे सब लूले वूले लेकर के और अपनी बारात में ले गए थे। वो ऐसे ही शिव तत्व में आपके लिए बहुत ज्यादा ये कटाक्ष रखना कि हम तो भई बहुत विशेष हैं, कि खाना जो ऐसा होना चाहिए, फिर कायस्थों का अलग, ब्राह्मणों का अलग और जातियों का अलग, राजपूतों का अलग, सब का अलग-अलग, अब वो ही खाना खाइए। मुझे कभी भी समझ में नहीं आता, आज तक समझ में नहीं आया, कि ऐसे-ऐसे अलग-अलग खाने में ज्यादा आनन्द आता है तो ये लोग क्यों ऐसा ही खाना मांगते हैं? क्या वजह है? बंगालियों को बंगाली, मद्रासियों को मद्रासी। तो मैंने एक बार कहा कि हमारे हवाई जहाज़ों में कोई अच्छा स्टेण्डर्ड खाना क्यों नहीं है? कहने लगे माँ ये बताइए कि हिन्दुस्तान का स्टेण्डर्ड खाना कौन सा है? ये तो बात सही है। तुम ग़र कोई खाना बनाओ तो कहेगा ये तो मद्रासी का है, मद्रासी कहेगा ये क्या बिहारी है, फलाने का, ढिकाने का, ढिकाने का इसलिए सब तरह का खाना खाना आना चाहिए। क्योंकि यहाँ से सब चीज़ शुरू हो जाती है ये बेखरी, जुबान में भी एक मिठास, मधुरता होनी चाहिए। मुस्कुराहट में भी कभी-कभी ऐसा लगता है कि रावण निकल रहे हैं इनके मुँह में से। तो बोलने का क्या कहना, जब बोलते हैं तो लगता है पता नहीं ये कौन चण्डिका बोल रही है कि क्या बोल रही है। औरतें बड़ी तमाशा हैं और आदमी भी बहुत तमाशा हैं। अजीब-अजीब चीज़ें ऐसी बन गई हैं इसमें शिव तत्व कहाँ है? शिव तो प्रेम का एक महासागर है। वो तो राक्षसों को भी उन्होंने

वरदान दिया, **राक्षसों को भी जिसने वरदान दिए ऐसे शिव तत्व को हमारे अन्दर ग़र लाना है तो हम ऐसी छोटी छोटी बातों में कैसे उलझ सकते हैं?** ये हम कैसे कर सकते हैं? ये बताइए। जिस तरह से हम एक दूसरे की आलोचना करते हैं, किसी को कोई कहता है ये ऊँचा है, कोई कहता है नीचा है, ये शिव की बात नहीं। **शिव के अन्दर प्रेम की धाराएं बह रही हैं और इस प्रेम की धारा में बहते हुए आपको ऐसी उल्टी सीधी बातें करनी नहीं चाहिए। और उससे कोई फ़ायदा नहीं होने वाला।** आपसी प्रेम, आपसी समझ और आपस का आनन्द उठाना चाहिए। अब ये बात ज़रूर है कि सहजयोगी आपस में लड़ते नहीं, ये तो मैंने देखा है। आपस में मिलते हैं तो बड़े प्रेम से मिलते हैं, पर तो भी अभी भी ये छोटी-छोटी बातें जो कि वैयक्तिक हैं, खाना-पीना, उठना-बैठना, पहनना, ये ज़रा सा ठीक करना चाहिए। ये ग़र ठीक कर लें तो बड़ा अच्छा होगा। आपका चित्त जो है वो हृदय की तरफ जाएगा और इन सब चीज़ों में नहीं रहेगा। इन सब चीज़ों में नहीं रहेगा। परदेस में ये बीमारी ज्यादा है, इसलिए कि वहाँ एक से एक निकले हुए हैं, वो बनाते हैं अलग-अलग तरह की चीज़ें। और जिसने वो चीज़ें पहन लीं वो बड़ा भारी अपने को सोचता है, मैं बड़ा रईस हूँ। ख़ासकर इटली में ऐसा बहुत ज्यादा प्रकार है। लेकिन ये सब बातें आपको इसमें नहीं पड़ना चाहिए। आप अपने सादगी से रहो। अपने देश में सादगी से रहने वाले जो होते हैं, उन्हीं का नाम हुआ है, औरों का नाम नहीं हो सकता। पहले जमाने में लोग गाँधी जी ने कहा खद्दर पहनो, तो लोग बिल्कुल खद्दर पहने। उन्होंने ऐसा बनाया था, खूब ठिकाने लगाया था सबको। पर अब आपको अपने को ठिकाने लगाना है। क्योंकि आप स्वयं आत्मा के प्रकाश, आप स्वयं श्री शिव के शरण में आए हैं। आप खुद को खुद ही ठीक करें, आपको दूसरों को ठीक करने का नहीं है, बस अपने को ठीक करें और धन्य समझे कि आप आत्मसाक्षात्कारी है। कितने थे पहले? अरे दो चार थे बिचारे उनको भी लोग मार डालते थे। आज आप हजारों की तादाद में हैं तो इस चीज़ को शुरु करें। बातचीत में मिठास, ऊपरी तरह से नहीं हृदय से, जो भी बात आप हृदय से करें उसको कोई नहीं बुरा मानता। इसलिए हृदय से बात करें। अपने बच्चों से, बड़ों से, जो मर्यादाएं हैं उसको पालते हुए, आप अपने को सुखी बनाने से दूसरों को भी सुखी बनाएंगे। लेकिन आपके अन्दर ग़र ये आशीर्वाद शिव का न हो कि जिससे आप समाधानी बनें, और कोई चीज़ से हो नहीं सकता। इसलिए अपनी ओर ये भी नज़र रखें कि मैं समाधानी हूँ कि नहीं? मुझे समाधान है या नहीं? मैं छोटी-छोटी बात को लेकर के और दूसरों पर भी बिगड़ता हूँ या उसके नुक्स निकालता हूँ तो कुछ तो भई मेरे अन्दर बहुत बड़ी खराबी है। उस ख़राबी को देखने से ही आप स्वच्छ हो सकते हैं। जब तक आपको कोई चीज़ दिखाई नहीं देगी आप साफ कैसे करेंगे? इस सफाई की बहुत जरूरत है और इस सफ़ाई से ही आप उस परम पिता परमेश्वर के दर्शन कर सकते हैं, अपने अंदर, और लोगों को भी इसके दर्शन हो सकते हैं।

अनन्त आशीर्वाद।

शिवरात्रि पूजा

शिव तत्व आपके हृदय में है

परमपूज्य माताजी श्री निर्मला देवी का अंग्रेजी प्रवचन

(दिल्ली-14.2.99)

हिन्दी भाषा में मैंने बहुत लम्बा प्रवचन दिया है क्योंकि विदेशी सहजयोगी यहाँ पर बहुत कम हैं। मैं उन्हें बता रही थी कि शिव तत्व आपके हृदय में है और उसका प्रतिबिम्ब किसी एक चक्र पर नहीं है, सभी चक्रों पर है - दर्पण की तरह। जो भी कुछ आपका दिखाई देता है वह इस दर्पण में है, शीशे में आपका क्या प्रतिबिम्ब है? क्या आपका प्रतिबिम्ब स्पष्ट और शुद्ध है? क्या आपने अपने हृदय को शुद्ध किया? प्रतिबिम्ब करने वाले शीशे को क्या आपने साफ किया? यही चीज़ शक्ति को देखनी है।

हिन्दी में मैंने विस्तार पूर्वक बताया कि हमारे (षड् रिपु) छः दुश्मन हैं। एक के बाद एक ये हमें भ्रष्ट करने में लगे रहते हैं। इन छः में से पाँच के विषय में मैंने उन्हें बताया। भारत में छठे दुश्मन-कामुकता-का बहुत अधिक अस्तित्व नहीं है। यहाँ यह बहुत कम है। परन्तु विदेशों में, पश्चिमी देशों में इसका भयंकर प्रभाव है क्योंकि वो लोग सोचते हैं कि कामुकतामय जीवन ही जीने के योग्य है।

इससे परे शिव हैं और इसी कारण हमें समझना चाहिए कि हमारे हृदय में शिव का पूर्ण प्रतिबिम्ब तभी सम्भव है जब हम अपने हृदय को शुद्ध कर लें। दूसरों के प्रति द्वेष, काम भावना, क्रोध, ईर्ष्या-ये सभी प्रतिक्रियाएं हमारे अन्दर कार्य करती हैं और हमारा हृदय पत्थर की तरह हो जाता है। यह प्रतिबिम्बित नहीं हो सकता। तो यदि आपने शिव का ये गुण प्रतिबिम्बित करना है - कलियुग में ऐसा होना बहुत आवश्यक है यद्यपि बहुत कम लोग शिव की छवि अपने चरित्र में प्रतिबिम्बित कर पा रहे हैं-तो आपको अपने अन्दर देखना होगा कि आपमें क्या त्रुटियाँ हैं। मेरा चित्त कहाँ जा रहा है। मैं कहाँ जा रहा हूँ। मैं क्या कर रहा हूँ। आपको चाहिए कि अपने को देखें अन्य लोगों को नहीं। पश्चिम के लोग समझते हैं कि दूसरों की आलोचना करना उनका अधिकार है। मुझे ये पसन्द है, यह मुझे पसन्द नहीं है। आप कौन हैं? आप ऐसा क्यों कहते हैं? किसी ने आपके लिए बहुत सुन्दर प्रबन्ध किया है, उसी के घर में बैठकर उसे कष्ट पहुँचाने के लिए आप कहते हैं कि मुझे ये पसन्द नहीं है। आखिरकार आप हैं कौन और अपने बारे में क्या सोचते हैं? निर्णय करने वाले आप कौन होते हैं? मुझे ये पसन्द है और ये नहीं है, ऐसा कहना सहजयोगियों के लिए मना है। ऐसा करना निषिद्ध है।

भगवान शिव को देखें उन्हें सब कुछ पसन्द है, उन्हें साँप भी पसन्द हैं। वे कैसे वस्त्र पहनते हैं? सभी पशु, सभी चीज़ें जो हमें अच्छी नहीं लगतीं उन्हें वे सब पसन्द हैं। अपने विवाह के समय अपनी बारात में वे सभी लूले-लंगड़े लोगों को साथ ले गए। किसी की एक टाँग थी, किसी की एक आँख थी और किसी का कोई अंग टूटा हुआ था। ऐसे सभी लोगों को वो अपनी बारात में ले गए उन्हें ये सब लोग बहुत प्रिय थे और इनकी वे देखभाल करते थे क्योंकि शिव ही आनन्द का स्रोत हैं वे ही हमें आनन्द प्रदान करके आनन्दित करते हैं।

वास्तविक आनन्द तभी सम्भव है जब उनका प्रतिबिम्ब आपके हृदय में हो परन्तु यदि आपका हृदय इधर-उधर की चीज़ों से भरा हुआ है तो यह मलिन हो जाता है-अत्यन्त मलिन दर्पण।

अत्यन्त हैरानी की बात है कि भारतीयों के मुकाबले पश्चिमी सहजयोगी सुख-सुविधाओं का विशेष ध्यान नहीं रखते। यद्यपि वे अत्यन्त भौतिकतावादी वातावरण से आते हैं फिर भी उन्हें सुख-सुविधाओं की बहुत चिन्ता नहीं होती। वे कहीं भी रह सकते हैं। कहीं भी वे प्रसन्न रह सकते हैं। यह बहुत अच्छी स्थिति है जो उन्होंने प्राप्त कर ली है। भारतीय सहजयोगियों को भी व्यर्थ की चीज़ों पर चित्त देना छोड़कर यह स्थिति प्राप्त करने का प्रयत्न करना चाहिए फ़िजूल की चीज़ों पर अपनी शक्ति बर्बाद करने की कोई आवश्यकता नहीं। केवल तभी आपको अपने लिए, अपनी आत्मा के लिए वास्तविक भक्ति प्राप्त हो पाएगी। आज इसी चीज़ की आवश्यकता है कि आपकी आत्मा आपके चरित्र, आचरण और व्यक्तित्व से झलके। यदि ऐसा हो जाता है तो आपने वह उपलब्धि प्राप्त कर ली है जो सहजयोग आपके लिए करना चाहता था। आज यह बहुत महत्वपूर्ण है, बहुत महत्वपूर्ण। आप यदि समाचार पत्र पढ़ना चाहें तो नहीं पढ़ सकते क्योंकि परिवर्तित होना आपकी आवश्यकता है। मानव का आत्मत्व, आत्मचेतना और आत्मा में परिवर्तन। और अब समय आ गया है जब यह कार्य हो जाना चाहिए। विकास की यह प्रक्रिया आरम्भ हो चुकी है। बहुत से लोग ये प्राप्त कर चुके हैं।

पुराने सन्त और गुरु, सच्चे गुरु अपने शिष्यों को सिर के बल खड़ा करके और अन्य विधियों से वर्षों तक उनकी परीक्षा लिया करते थे। कभी वे उन्हें जल में खड़ा कर देते थे और कभी किसी अन्य तरीके से परखते थे। गुरु शिष्यों को बुरी तरह से पीटते थे तथा उनसे बहुत ही कठोर व्यवहार करते थे और तब किसी एक-आध को आत्मसाक्षात्कार मिला करता था। अब मैंने सोचा कि उन्हें शुद्ध करने में, उल्टे-सीधे वस्त्र पहनाने में, हिमालय पर या गोबी मरुस्थल भेजने में बहुत अधिक समय लगेगा। इसलिए मैंने कहा कि क्यों न उन्हें पहले ज्योतित् कर दिया जाए? उस प्रकाश में वे अपनी त्रुटियों को देख सकेंगे और स्वयं को ठीक कर लेंगे, वे स्वयं अपने गुरु बन जाएंगे। यह बात सफल हुई। अब आप लोग स्वयं देख सकते हैं कि आप क्या कर रहे हैं, आपमें क्या त्रुटियाँ हैं, कौन सी चीज़ आपको अन्य लोगों से भिन्न बना रही है और आपको कौन सी चीज़ उन्नत करेगी, क्योंकि सदाशिव का स्थान आपके सिर, विचारों, मस्तिष्क और भावनाओं से ऊपर है। यह सीमा अब आपको पार करनी होगी।

जब आप किसी भी चीज़ के प्रति प्रतिक्रिया नहीं करेंगे, कोई भी चीज़ जब आपके लिए महत्वपूर्ण न रह जाएगी तभी भगवान शिव कार्य करेंगे। तो कुछ चीज़ें अब भारतीयों ने सीखनी है और कुछ विदेशी सहजयोगियों ने। आपने बहुत से कार्य किए हैं, मैं आपको धन्यवाद करती हूँ। लोग सोचा करते थे कि मैं कुछ नहीं कर सकती। आप लोगों ने मद्यपान और सभी प्रकार की बुरी आदतें छोड़ दी हैं। अब आप व्यभिचारी भी नहीं हैं। आपका चित्त अत्यन्त पवित्र है। आपने बहुत से प्रशंसनीय कार्य किए हैं। परन्तु अभी भी बहुत से दोष बने हुए हैं जिन्हें स्वच्छ करना और बिल्कुल समाप्त कर देना आवश्यक है।

आपमें राजनीति अधिक नहीं है फिर भी कभी कभी राजनीति होती है। झुण्ड भी बनाए जाते हैं। ये सब चीज़ें समाप्त हो जानी चाहिए क्योंकि शिव का इनसे क्या लेना-देना। पूरा ब्रह्माण्ड उनके चरणों में है। एक झुण्ड यहाँ, एक वहाँ। इसका शिव की दृष्टि में क्या महत्व है? यह तो उनके मस्तिष्क में ही नहीं आ सकता। **महान व्यक्ति विशाल सागर की तरह बहुत से किनारों को छूकर भी महान सागर सम बना रहता है।** शिव तत्व भी ऐसा ही है। आप सबको चाहिए कि शिव तत्व को विकसित करें और तब आनन्द को देखें-प्रेम के इस महान सागर के आनन्द को !

परमात्मा आपको धन्य करें।

श्री माताजी द्वारा
गैर-सरकारी संस्था (N.G.O) की स्थापना

दीन-हीन महिलाओं और बच्चों के लिए हमने एक गैर-सरकारी संस्था N.G.O. की स्थापना की है। यहाँ हम एक अस्पताल भी बनाएंगे। आप जानते हैं कि वाशी के समीप बेलापुर, नवी मुम्बई में हमारा एक अस्पताल चल रहा है। ये अस्पताल नोएडा में भी होगा। आपको ये जानकर प्रसन्नता होगी कि नोएडा में ज़मीन ले ली है और वहाँ पर कार्य शुरु करने वाले हैं। आप लोग जो भी कुछ इस संस्था के लिए देना चाहें दे सकते हैं। हमारे पास इस कार्य को करने के लिए बहुत अच्छे लोगों की एक टीम है। मैंने सोचा कि हमारी एक ऐसी संस्था अवश्य होनी चाहिए ताकि आस-पास के दीन-दुखी लोगों पर हमारा चित्त बना रहे।

यह गैर-सरकारी संस्था पतियों तथा परिवार द्वारा त्यागी गई महिलाओं तथा उनके बच्चों के लिए कार्य करेगी, उन सबके लिए जिनकी देखभाल करने वाला कोई नहीं है। अभी तक मैंने इसकी कोई योजना नहीं बनाई है परन्तु सहजयोग आरम्भ करने से पूर्व मैं ऐसे बहुत से कार्य किया करती थी। अत: इसका मुझे काफी अनुभव है। दीन-दुखियों पर हमारा चित्त होना आवश्यक है क्योंकि अब हम दिव्य शक्तियों से आशीर्वादित हैं। जिन लोगों को हमारे ध्यान की आवश्यकता है हमें उनकी देखभाल करनी चाहिए। सहजयोगियों द्वारा निस्सहाय महिलाओं की सिफारिश की जाएगी। वे निश्चित रूप से बेहतर होंगी। इस कार्य को भली-भाँति किया जा सकता है। अभी तक आश्रय की इच्छुक किसी भी महिला की अर्जी हमारे पास नहीं आई है। हम उन्हें कला-दस्तकारी आदि सिखाएंगे ताकि दो वर्षों में ही वे अपने पैरों पर खड़ी हो सकें और सड़कों पर कोई भी भिखारी बाकी न बचे। सर्वप्रथम हम उन्हें सहजयोगी बनाएंगे और तब आगे का कार्य करेंगे। मुझे विश्वास है कि आप सबको ऐसी संस्था बनाने का विचार अच्छा लगेगा।

ऐसी दूसरी संस्था हम मुम्बई के समीप वैतरणी में आरम्भ करेंगे। इसकी योजना मैंने पन्द्रह वर्ष पहले बनाई थी परन्तु हमें इसकी आज्ञा ही नहीं मिली। अब इसका निर्णय ले लिया गया है, हमें इसकी आज्ञा मिल गई है। तो मैं ऐसी संस्था आरम्भ करना चाहती हूँ जहाँ लड़के-लड़कियों को शिक्षित किया जाए। पहले हम लड़कों के लिए प्रयत्न कर रहे हैं, जो लड़के आठवीं, नवीं में फेल हो गए हैं उन्हें छोटी-छोटी दस्तकारी सिखाई जाएगी। हमारे यहाँ अच्छे बिजली मिस्त्री, नल साज आदि नहीं हैं। इस प्रकार ये बच्चे अपने पैरों पर खड़े हो जाएंगे, क्योंकि आठवीं नवीं कक्षा में फेल होकर पढ़ाई छोड़ देने पर तो वे कुछ भी नहीं कर सकते, ऐसे बच्चे बहुत कष्ट में हैं। यह कार्य मैंने पन्द्रह साल पहले आरम्भ किया था। श्री अमर्त्य सेन ने इसके बारे में अब लिखा है कि इन बच्चों को इस प्रकार की शिक्षा दी जाए-अब भी उन्होंने यह बात विस्तार पूर्वक नहीं बताई है। परन्तु उन्होंने अब इसे लिखा और इस पुस्तक के लिए उन्हें नोबल पुरस्कार दिया गया-उन विचारों के लिए जो मैंने पन्द्रह वर्ष पूर्व लिखे थे। परन्तु सरकार इतनी खराब थी कि उसने मुझे संस्था बनाने की आज्ञा तक न दी। सौभाग्यवश अब भा.ज.पा. सरकार से मैं इसकी आज्ञा ले पाई हूँ और अब हम इस कार्य को जोर-शोर से करने वाले हैं। बहुत से लोग इस चुनौतीपूर्ण कार्य में मेरी मदद करने के लिए आगे बढ़ रहे हैं।

तो अब सहजयोग ज़रूरतमंद लोगों को आजीविका और सहायता देने के लिए बाहर की ओर फैल रहा है। सहजयोग की यह एक नई गतिविधि है और मुझे आशा है कि यह सफल होगी।

धन्यवाद

दिवाली पूजा – कबैला (25.10.98)

दिवाली का महत्व – परम पूज्य माताजी श्री निर्मला देवी का प्रवचन

दिवाली पूजा बहुत छोटी सी पूजा है परन्तु यह अत्यन्त महत्वपूर्ण है। दिवाली के पहले दिन (धनतेरस) लोग परिवार के लिए कुछ न कुछ खरीदते हैं। चाहे ये खाना बनाने के बर्तन हों, आपकी पत्नी के लिए कोई गहना हो या ऐसा ही कुछ और क्योंकि यह गृहलक्ष्मी का दिन होता है और इसे गृहलक्ष्मी के प्रति सम्मान के रूप में मनाया जाता है। परिणाम स्वरूप भारत में अब भी गृहलक्ष्मियों का बहुत सम्मान होता है। वास्तव में सर्वत्र उनका सम्मान किया जाता है। आप हैरान होंगे कि सरकारी समारोहों में भी नियम आचरणों के अन्तर्गत पत्नी बहुत महत्वपूर्ण है; वह कहाँ बैठी है उसकी क्या स्थिति है, यह सब बहुत महत्वपूर्ण है। आज भी, अत्यन्त आधुनिक और विकसित देशों में गृहलक्ष्मी का विशेष सम्मान होता है। गृहलक्ष्मी चाहे शिक्षित न हो, बहुत साधारण महिला हो, बहुत आधुनिक न हो फिर भी उसका सम्मान किया जाता है।

मुझे एक अनुभव हुआ। लन्दन के एक कार्यक्रम में हमें निमंत्रित किया गया। प्रतिनिधि मण्डल के अध्यक्ष की पत्नी अनुपस्थित थी। उन्होंने मुझसे पूछा कि वो कहाँ हैं क्योंकि उनका स्थान खाली पड़ा है और उन्हें वहाँ बैठना है। मैंने कहा, मैं नहीं जानती; मैंने उन्हें नहीं देखा। वो यहीं कहीं होंगी। कार्यक्रम आरम्भ होने से पहले स्नान गृह जाते हुए देखकर मैं हैरान हुई कि वह प्रतीक्षालय में बैठी हुई थीं। मैंने कहा," आप यहाँ क्या कर रही हैं? बाहर सभी लोग आपकी प्रतीक्षा कर रहे हैं।" वह कहने लगी, उन्होंने मुझे यहाँ बैठने के लिए कहा है। बाहर जाकर मैंने उनसे बताया कि वे वहाँ बैठी हैं। उन्हें बुलाकर स्थान ग्रहण करने के लिए आप उनसे क्यों नहीं कहते? पत्नी तो, मेरे विचार में पत्नी ही है। वे कहने लगे कि हमने सोचा था कि ये कोई सचिव हैं। मैंने कहा आपसे ऐसा क्यों सोचा? वास्तव में वह महिला अत्याधुनिक रेशमी वस्त्र पहने हुए थी, तो सभी ने सोचा कि ये महिला एक सचिव ही हो सकती है। उन्होंने उसे प्रतीक्षालय में बिठा दिया। तो एक गृहलक्ष्मी से आशा की जाती है कि वह गरिमामय, सम्मानजनक वस्त्र पहने, किसी सचिव की तरह या दफ्तर जाने वाली महिला की तरह से वस्त्र न पहने क्योंकि, आप चाहें या न चाहें, गृहलक्ष्मी को सर्वोच्च समझा जाता है। उस महिला ने बहुत अच्छे बाल बनवाए हुए थे और सजने संवरने के लिए बहुत ही महंगे स्थान पर गई थी। परन्तु वह बेचारी जब वहाँ पहुँची तो उन्होंने स्नानगृह के समीप प्रतीक्षालय में उसे बिठा दिया। तो यह सब इस प्रकार होता है।

गृहलक्ष्मी घर की शान है केवल इतना ही नहीं वह पूरी देश की संस्कृति के लिए जिम्मेदार है। वे संस्कृति का प्रतिनिधित्व करती हैं। भारत में आजकल फिल्म में अजीबोगरीब वेशभूषाएं दिखाने लगे हैं परन्तु मैंने किसी भी घरेलू स्त्री को ये वस्त्र पहने हुए नहीं देखा। किसी को भी नहीं। वास्तव में ऐसा नहीं होता, केवल फिल्मों में ही होता है क्योंकि समाज बहुत शक्तिशाली है और गृहस्वामिनी से गरिमामय होने की आशा की जाती है। उसे शालीन होना पड़ता है। अत्यन्त गरिमामय होकर बहुत ही गरिमापूर्वक उसे आचरण करना होता है।

इसके विपरीत लाल बहादुर शास्त्री नामक हमारे एक प्रधानमंत्री थे। उनकी पत्नी बिल्कुल पढ़ी-लिखी न थी क्योंकि शास्त्रीजी जेल चले गए और वे शिक्षा प्राप्त न कर सकीं। बहुत ही सादी और साधारण महिला-वे एक बार फ्राँस गईं। उस समय

वहाँ श्री देगोल हुआ करते थे। वे वहाँ के राष्ट्रपति थे और उनकी पत्नी भी अत्यन्त साधारण महिला थी। शास्त्री जी ने अपनी पत्नी को समझाया कि जब हम श्रीमती देगोल से विदा लेने लगें तो तुम रोना मत, अब हम बहुत अच्छे मित्र बन गए हैं। परमात्मा जानता है, श्रीमती शास्त्री फ्रेंच न जानती थी और श्रीमती देगोल को हिन्दी नहीं आती थी फिर भी गृहस्वामिनियाँ होने के कारण दोनों बहुत अच्छी मित्र बन गईं। शास्त्री जी ने अपनी पत्नी को विदाई के समय रोने के लिए मना किया था परन्तु जब विदाई का समय आया तो दोनों ही महिलाएं रोने लगीं। शास्त्री जी ने कहा, "मैंने तुम्हें रोने के लिए मना किया था। श्रीमती शास्त्री ने उत्तर दिया कि पहले उन्होंने (श्रीमती देगोल) रोना शुरू किया मैं क्या करती, मुझे भी रोना पड़ा। तो एक प्रकार से गृहस्वामिनियों की यह महान सामूहिकता है जिसे कार्यान्वित होना है। उनकी एक सी समस्याएं होती हैं-बच्चों को संभालना, घर परिवार की देखभाल करनी आदि-आदि। कहने से मेरा अभिप्राय ये है कि गृहस्वामिनियों की बहुत सी एक जैसी समस्याएं होती हैं और गृहस्वामिनी को छोटी-छोटी चीजों का ज्ञान होता है।

भारत में पुरुषों को तो कोई अधिक जानकारी नहीं होती क्योंकि वे अधिकतर हवा में रहते हैं। तो महिलाओं में छोटी-छोटी चीजों का विवेक बहुत अधिक होता है, वे सब जानती है। बहुत दिलचस्प बात है कि पुरुष कई बार ऐसी गलतियाँ करते हैं कि उन पर हँसी आती है। कारण ये है कि वे जीवन की आम समस्याओं को नहीं देखते। उनके विषय में अनजान हैं। एक ओर तो गृहस्वामिनी को दिनचर्या को देखना होता है और दूसरी ओर अपने परिवार और बच्चों को। बेचारी समाज के प्रति भी जिम्मेदार होती है। उसे समाज को भी बनाए रखना होता है। जिस देश में महिलाएं विवेकशील एवं परिपक्व होंगी, आप हैरान होंगे, उस देश में अत्यंत अच्छे परिवार, अच्छे समाज और अच्छे बच्चे बनेंगे। यही कारण है कि मैं कहती हूँ कि भारत बहुत अच्छा देश है, एक बहुत अच्छा समाज है। इसका श्रेय गृहस्वामिनियों, गृहलक्ष्मियों को है जिन्होंने सारा कार्य किया। संस्कृति की दृष्टि से यह बहुत महत्वपूर्ण है। इन चीजों का भारत में बाहुल्य है और इसी कारण आप देखते हैं कि वहाँ लोग गृहस्वामिनियों का सम्मान करते हैं।

अतः सहज संस्कृति में गृहलक्ष्मी का सम्मान बहुत महत्वपूर्ण है, परन्तु इसका अभिप्राय ये भी नहीं कि स्त्री पति पर रौब जमाने का या उसे कष्ट देने का प्रयत्न करे या उससे झगड़ा करे। इसका अर्थ गृहलक्ष्मी का समाज में अत्यन्त महत्वपूर्ण पद पर रहना है। उसे देवी सम माना जाता है। परन्तु उसे स्वयं भी तो देवी होना चाहिए। आप यदि उससे पांवदान की तरह से व्यवहार करेंगे तो बच्चे कभी उसका सम्मान नहीं करेंगे। आप यदि पत्नी का उचित सम्मान नहीं करते तो बच्चे भी माँ का सम्मान नहीं करेंगे और उन पर माँ का बिल्कुल भी प्रभाव न होगा। परिणामस्वरूप बच्चे भटक जाएंगे। जिस समाज में या जिस देश में माँ का सम्मान नहीं होता, वहाँ आप देखेंगे, बच्चे बिना बात के रौब देने वाले, क्रोधी स्वभाव और भयानक असामूहिक हो जाएंगे।

तो इस दिन, जिसे हम धनतेरस कहते हैं, आपको अपनी पत्नी के लिए कुछ खरीदना होता है। अवश्य कुछ खरीदना होता है और उसे उपहार देना होता है। कम से कम कोई एक बर्तन, जो रसोई में काम आ सके, सम्मान के रूप में पत्नी को दिया जाना चाहिए। जिन परिवारों में माँ का सम्मान नहीं होता वहाँ बच्चे अत्यन्त कष्टदायी हो जाते हैं और पूरा परिवार कष्ट उठाता है। जहाँ चाहे पुरुषों का विवाह हो, हर हाल में उन्हें महसूस करना है कि ठीक प्रकार से पत्नी का सम्मान न करना उनकी गलती है। बच्चों के सम्मुख यदि आप चिल्लाते हैं, उनके सम्मुख पत्नी का निरादर करते हैं तो बच्चे कभी भी माँ का सम्मान नहीं कर सकते। गृहस्वामिनी के रूप में जो महिला आपकी, आपके परिवार की बिना कुछ आशा किए देखभाल कर रही है, आपके लिए सभी कुछ कर रही है। उसके साथ ऐसा व्यवहार अपराध है।

यदि आप ये समझना चाहते हैं कि वे किस प्रकार कष्टकर हो सकते हैं तो उन्हें राजनीति में देखिए। महिलाएं जब राजनीति में जाती हैं तो वे सभी पुरुषों को उलटकर रख देती हैं और एक महिला सभी को अक्ल सिखा सकती है क्योंकि उसका कार्यक्षेत्र तो घर और परिवार है। परिवार में यदि उनका सम्मान नहीं होता तो वे परिवार त्याग कर बाहर आ जाती हैं और इस प्रकार व्यवहार करती हैं जिसकी आप कल्पना भी नहीं कर सकते। यद्यपि उसे बहुत सहन करना पड़ता है और बहुत कष्ट उठाना पड़ता है। परिवार में उसका सम्मान अवश्य होना चाहिए। गृहलक्ष्मी का यही महत्वपूर्ण संदेश है।

धनतेरस के अगले दिन भयंकर राक्षस नर्कासुर का वध हुआ था। राक्षसों के वध सदैव देवी की शक्ति से होते हैं। नर्कासुर ने बहुत से लोगों को सताया था और बहुत लोगों को धूर्तता सिखाई थी। वह अत्यन्त धोखेबाज और चालाक व्यक्ति था और उसका वध करना असंभव सा था, परन्तु एक विशेष शक्ति के अवतरण से चौथे दिन नर्कासुर का वध हुआ। कहते हैं कि जब उसका वध हुआ तो नर्क के द्वार बन्द हो गए। तो कहा जाता है कि लोगों इस दिन प्रातः काल जल्दी स्नान कर लेना चाहिए, परन्तु मेरे विचार में उस दिन यदि दरवाजा खुला हो तो अच्छा होगा कि स्नान न करो। जब तक उस राक्षस को पूरी तरह से नर्क में नहीं डाल दिया जाता तब तक अपने बिस्तरों में रहो। उसकी चिन्ता आपको नहीं करनी चाहिए। नर्क से बाहर धकेलकर उसका वध किया गया था। दीवाली का अगला दिन सर्वोत्तम है क्योंकि इस दिन श्री राम-भरत मिलाप हुआ था। पिता की आज्ञा मानकर श्री राम जंगल में गए और चौदह वर्ष तक जंगलों में रहे। महलों में रहने वाले राजकुमार के लिए जंगल जेल सम थे। सौतेली माँ और पिता की आज्ञा को मानकर वे जंगल भी गए थे। उनकी पत्नी और छोटा भाई भी उनके साथ गए और वहाँ बहुत कष्ट उठाए। जिस युवक को राजा बनना हो वह जंगलों में जाकर कष्ट उठाए! परन्तु सीताजी उनके साथ गई और हर कदम पर उनका साथ दिया। जंगल में रावण सीता को उठा ले गया। श्रीराम ने युद्ध करके उसका वध किया और सीता को लौटा लाए जब वे अयोध्या वापिस लौटे तो वहाँ बहुत खुशियाँ मनाई गईं। भरत श्री राम के अनन्य भक्त थे। उनकी चरण पादुका को सिंहासनारूढ़ करके उन्होंने चौदह वर्ष तक अयोध्या का राजकार्य किया। इस प्रकार चौदह वर्षों पश्चात् श्रीराम-भरत मिलन हुआ और श्री राम का राज्यभिषेक किया गया। हजारों वर्ष पूर्व यह सब घटित हुआ परन्तु आज भी उस दिन को त्यौहार के रूप में मनाया जाना महत्वपूर्ण है क्योंकि इस दिन योग्य राजा को उसका सिंहासन प्राप्त हुआ और उन्होंने सारे अन्याय और अत्याचारों का अन्त किया। इन्हीं कारणों से दिवाली महत्वपूर्ण है।

अंतिम दिन देवी लक्ष्मी की पूजा की जाती है क्योंकि उन्हीं के आशीर्वाद से ये सब सुन्दर मिलन हुए। कुछ समय पूर्व मैंने आपको बताया था कि लक्ष्मियाँ भी नौ प्रकार की हैं। इस लक्ष्मी पूजा में आप साक्षात् लक्ष्मी की पूजा करते हैं। लक्ष्मी का अर्थ किसी भी प्रकार के धन से नहीं है। धन की पूजा करना गलत है। इसका अर्थ है कि धन या सम्पत्ति के रूप में जो भी लक्ष्मी हमारे पास है उसे सावधानी पूर्वक खर्च किया जाना चाहिए क्योंकि लक्ष्मी अति चंचल है और यह धीरे से खिसक जाती है। परन्तु किसी भी प्रकार से आपको कंजूस नहीं होना है। कंजूस लोगों से देवी लक्ष्मी कभी प्रसन्न नहीं होती। फिर भी खर्च करते हुए हमें सावधानी पूर्वक देखना है कि धन ठीक प्रकार से खर्च हो। समुद्र मन्थन के समय जब लक्ष्मी जी अवतरित हुईं तो उनके चार हाथ थे। एक हाथ देने के लिए था जो उदारता का प्रतीक है। वे एक हाथ से देती हैं और दूसरे से आशीर्वादित करती हैं। एक हाथ देने के लिए है और दूसरा हाथ आशीर्वाद प्रदान करने के लिए । इसका अर्थ ये हुआ कि किसी को यदि आप कुछ दें तो उसे भूल जाएं और उस व्यक्ति को आशीर्वाद दें। केवल धन देना ही काफी नहीं है, उसे आशीर्वाद देना भी आवश्यक है। अन्य दो हाथों में वे गुलाबी रंग के कमल धारण करती हैं। गुलाबी रंग

प्रेम का रंग है और वैभवशाली व्यक्ति का घर प्रेम से परिपूर्ण होना चाहिए। घर आए अतिथि का सम्मान होना चाहिए। उसे परमात्मा सम माना जाना चाहिए। आपने देखा होगा भारत में विदेशियों से कैसा व्यवहार किया जाता है।

भारत में विदेशी का अर्थ परमात्मा है। पश्चिम में विदेशी (Foreigner) नकारात्मक शब्द है, परन्तु भारत में ये अत्यन्त सम्मानजनक है। आप यदि विदेशी हैं तो आपसे बात करना भी उचित नहीं समझा जाता। ये मानसिकता मेरी समझ में नहीं आती परन्तु सहजयोग में ऐसा नहीं है। सहजयोगी ऐसे नहीं हैं, वे अतिथि का बहुत सम्मान करते हैं। मैंने सुना है कि वे एक दूसरे का सम्मान करते हैं और अत्यन्त सामूहिक हैं। तो कमलों का यही अर्थ है-प्रेम से परिपूर्ण घर। कंटीला भंवरा भी यदि आकर कमल में बैठ जाए तो शाम के समय कमल बन्द हो जाता है और भंवरा सुख से उसमें विश्राम करता है। भंवरा बिल्कुल परेशान नहीं होता। वैभवशाली व्यक्ति का आचरण भी ऐसा ही होना चाहिए। परन्तु संसार में मैं देखती हूँ कि वैभवशाली लोग भंवरे सम हो जाते हैं। वे अत्यन्त कंटीले, असम्माननीय हो जाते हैं, अपने सम्मान का भी उन्हें विचार नहीं रहता। कितनी हैरानी की बात है कि लक्ष्मी स्वरूप धन पाकर वे असुरों जैसे हो जाते हैं और लोगों से राक्षसों से भी बुरा व्यवहार करते हैं! तो यह देवी का महत्व है। देवी लक्ष्मी का सर्वोत्तम गुण ये है कि वह कमल पर विराजमान है अर्थात् वे किसी पर बोझ नहीं हैं। अपने आप में वे स्थित हैं किसी पर वे बोझ नहीं बनतीं। अपने आप में अपने पूरे बदन को संभाले हुए पूर्ण संतुलन एवं गरिमा में वे खड़ी हैं। लक्ष्मी को ऐसा ही होना चाहिए और जिन देशों में लोग अब आर्थिक कठिनाइयों का सामना कर रहे हैं, यदि ऐसा हो जाए, तो स्थिति में सुधार होगा, लोग आनन्द लेंगे। आजकल लोग आनन्द नहीं लेते। उन्हें तो बस कोई बहुत ही महंगी, डिज़ाइनर्स की बनाई हुई चीज़ लेने की इच्छा बनी रहती है। मेरे विचार में ये रूपांकनकार लक्ष्मीविरोधी हो गए हैं क्योंकि अपने रूपांकन से वे लोगों से उनका धन छीन रहे हैं। आपका सारा धन बर्बाद हो रहा है। इसके अतिरिक्त लोग स्त्री लम्पट, नशों तथा विनाशकारी आदतों में फंस जाते हैं। ये तथाकथित लक्ष्मी पति कोई ऐसा कार्य नहीं करते जो वास्तव में लक्ष्मी जी का आशीर्वाद है।

जब भी आप किसी को कोई चीज़ देना चाहें तो पूरे हृदय से दें, इतने पूर्ण हृदय से कि यह लक्ष्मी-प्रसाद बन जाए। ऐसा अगर नहीं होता तो किसी को उपहार देने का क्या लाभ है? संकीर्ण दृष्टिकोण के लोग जो उपहार देते हैं वे बड़े अजीबोगरीब हैं, परन्तु वे उपहार देने का प्रयत्न करते हैं। जैसे यदि आप जापान जाएं तो वे आपको बहुत बड़ा उपहार देंगे। आप इसे खोलते चले जाएं, खोलते चले जाएं और अन्त में इसमें से एक माचिस निकलेगी या माचिस की तिलियों से बनी हुई कोई चीज़। इसे देखते रहें कि ये क्या है और इसके लिए ये इतना बड़ा नमूना क्यों बनाया गया? हैरानी की बात है! अन्यथा वे लोग बहुत ही सादे हैं जहाँ भी हम गए, एक छोटी सी दुकान में भी, जबकि वर्षा हो रही थी, वहाँ भी उन्होंने हमें उपहार दिया। मैंने पूछा, ये हमें इस तरह से उपहार क्यों दे रहे हैं? तो हमारे साथ जो अनुवादक महिला थी, उसने बताया कि वो आपको शाही परिवार से समझ रहे हैं। मैंने पूछा, कि उन्हें ऐसा क्यों लगता है? क्योंकि आप हज्जाम के पास नहीं जातीं। मैंने कहा, वास्तव में? हाँ जापान में शाही परिवार के लोग हज्जाम के पास नहीं जाते। मैंने कहा मुझे तो इस बात का पता ही न था। कल्पना करें कि लोगों के विचार किस तरह के हैं। परन्तु भारत में महिलाओं के लिए उचित प्रकार से बालों में कंघी करना आवश्यक है। महिला को हिप्पी की तरह से प्रतीत नहीं होना चाहिए क्योंकि बहुत से लोग अपने बालों को हिप्पियों की तरह से भी बनवा लेते हैं। जैसा मैंने आपको बताया, महिलाओं की समाज में बहुत बड़ी भूमिका है। वो क्या पहनती हैं, किस प्रकार उसका आचरण है, बच्चे उनसे भी आगे निकल जाते हैं – माता और पिता दोनों से आगे। परन्तु सभी अच्छाइयां वे अपनी माँ से लेते हैं। अत:

महिलाओं के लिए ये समझना आवश्यक है कि वे किस प्रकार के वस्त्र पहने, किस प्रकार से रहें। लन्दन में मैंने एक भारतीय सहजयोगिनी से पूछा कि आजकल कौन सा फैशन चल रहा है। तो उसने मराठी में कहा झिप्परिया। झिप्परिया अर्थात बालों का एक विशेष फैशन। भारत में यदि आप इस प्रकार से बालों को बनाएंगी तो माँ कहेंगी कि बालों को ठीक करो नहीं तो तुम्हारी आँखें भैंगी हो जाएंगी। परन्तु बालों को इस तरह से बनाना फैशन है और कभी-कभी तो बालों को आँखों पर डाल लेती हैं! तो ये झिप्परिया फैशन है जो आजकल बहुत चल रहा है। मैं देखती हूँ कि श्रीमती थैचर के अतिरिक्त बहुत सी गरिमामय महिलाएं भी ऐसे ही बाल बनाने लगी हैं। न जाने श्रीमती थैचर किस प्रकार बची रह गईं! परन्तु महिलाओं को इस प्रकार की चीजों की नकल नहीं करनी चाहिए। ये तो दासत्व है। लेकिन फैशन है तो इसलिए वे करेंगी। इस प्रकार करना और फैशन बनाने वालों के हाथों में खेलना मूर्खता है। आप स्वतन्त्र हैं अपने चरित्र में और सूझ-बूझ में बनी रहें। फैशनों द्वारा अपनी शक्ल बिगाड़ने के स्थान पर अपनी गरिमा तथा सूझ-बूझ से अपने सौन्दर्य को सुधारने का प्रयत्न करें। स्त्रियों के विषय में ही अधिक कह रही हूँ, मुझे खेद है; परन्तु लक्ष्मी पूजा का सम्बन्ध महिलाओं से ही अधिक है। उन्हें ही ये सब समझना है कि उन्हें नया बनना है और किस प्रकार?

मैं आपको बता चुकी हूँ कि महिलाओं के लिए गरिमामय होना आवश्यक है, पुरुषों की अपेक्षा कहीं अधिक आवश्यक। पुरुष मूर्ख हो सकते हैं, कोई बात नहीं परन्तु महिलाओं को गरिमामय एवं विवेकशील होना ही चाहिए। पुरुषों को इतनी समझ नहीं होती जितनी आपको है। पुरुष विश्वविद्यालयों में शिक्षित होते हैं परन्तु उन्हें व्यवहारिकता का बिल्कुल ज्ञान नहीं होता। इसका आपको बुरा नहीं मानना चाहिए। पुरुष जिस प्रकार गलतियाँ करते हैं उन्हें देखने में मज़ा आता है, और फिर वे कहे चले जाएंगे, "नहीं, नहीं नहीं। मैं इसके विषय में सब कुछ जानता हूँ।" उन्हें कुछ नहीं पता होता फिर भी पुरुष कभी नहीं कहते कि मुझे इसका ज्ञान नहीं है। उसका चरित्र ही ऐसा है। ठीक है आपको समझ लेना चाहिए कि उसका मतलब वास्तव में ये नहीं है क्योंकि उसे इसका ज्ञान है ही नहीं। कला के विषय में भी, मेरे विचार में पुरुष अधिक नहीं जानते, सौन्दर्य संवेदना में भी उनका एक भाग गायब है। बेचारे एक ही प्रकार के वस्त्र बनवाते हैं और सभी जगह उसे पहनते हैं। एक ही प्रकार के वस्त्र सभी जगह पहनते हैं। एक ही प्रकार के वस्त्र बनाकर हर जगह उन्हीं को पहने जाना! उनकी कोई माँग नहीं होती। परन्तु महिलाएं कलात्मक होती हैं। यदि भारतीय महिलाएं साड़ियाँ पहनना छोड़ कर जीन्स अपना लें तो ग्रामीण लोग, जो छुट्टियों तथा खाली समय में साड़ियाँ आदि बनाते हैं, कहाँ जाएंगे? तो भारत में ये वेशभूषाएं प्रचलित कर पाना असंभव है। हो सकता है स्कूल या पाठशाला तक ये चल निकलें। इसके पश्चात् लड़कियाँ इन्हें छोड़ देंगी क्योंकि उन्हें साड़ी ही पसन्द है। साड़ी अब भी प्रचलित है और आगे भी रहेगी क्योंकि ये कलात्मक है और सुन्दर। एक साड़ी दूसरे साड़ी जैसी नहीं लगती। तो सौन्दर्य और कला का विचार महिलाओं को है पुरुषों को नहीं। महिलाओं को देखना चाहिए कि यदि पुरुषों को इसका ज्ञान नहीं है तो कोई बात नहीं, परन्तु उनको अपने घर पूर्णतः कलात्मक बनाने चाहिएं। घर को कमल की तरह से सुखदायी बनाया जाना चाहिए। कुछ महिलाएं अपनी गृहस्थी में हिटलर की तरह से आदेश देती हैं, ये ऐसे होना चाहिए, ये वैसा होना चाहिए और इस प्रकार पुरुषों का जीवन दयनीय बना देती हैं। मैं एक ऐसे व्यक्ति को जानती हूँ जो अपने घर में भी समाचार पत्र साथ रखता था। मैंने उससे पूछा कि हर समय आप इसे क्यों उठाए रखते हैं तो कहने लगा, "जब भी मैं बैठता हूँ इसे बिछा कर इस पर बैठता हूँ क्योंकि यदि मेरे कपड़े ज़रा भी खराब हो जाएंगे तो मेरी पत्नी मुझ पर बरसेगी, वो नहीं चाहती कि कोई भी चीज़ खराब हो। वो इतनी तुनकमिज़ाज है। इसलिए मैं हमेशा

समाचार पत्र **अपने साथ रखता हूँ** मैंने कहा ये तो अति है। कहने लगा एक दिन आपको भी ऐसा ही करना पड़ेगा। कुछ महिलाएं घर के विषय में इतनी तुनकमिज़ाज होती हैं कि उस घर में रहना असंभव होता है। ऐसे घर अस्पताल से भी बदतर हैं। कुछ महिलाएं ऐसी हो सकती हैं परन्तु सामान्यत: महिलाओं को अत्यन्त प्रेममय और भद्र होना चाहिए और परिवार के सभी सदस्यों तथा अन्य सभी लोगों से प्रेमपूर्वक व्यवहार करना चाहिए।

ऐसा होना बहुत महत्वपूर्ण है क्योंकि हमारा परिवार बहुत बड़ा है। बहुत बड़ा परिवार है हमारा, इतने सारे भाई-बहन हैं और एक से एक अच्छे हैं। प्रशंसनीय बात ये है कि सभी में भिन्न सुगन्ध है जिससे उनका व्यक्तित्व झलकता है। इसके बावजूद भी वे अत्यन्त अच्छे हैं, बहुत भद्र हैं और आनन्दपूर्वक मिलकर रहते हैं। विशेष तौर पर रूस में मैंने देखा है कि महिलाएं बहुत ही मिलनसार और विनोदप्रिय हैं, वे जीवन का पूरा आनन्द लेती हैं। बहुत हैरानी की बात है, हम उनके लिए उपहार ले गए थे-लगभग दो हजार उपहार, परन्तु वहाँ तो सोलह हज़ार लोग थे। किस प्रकार उन्हें उपहार दिए जाते? तो महिलाओं ने अपने गले से जंजीरें उतारकर कहा कि हम पुरुषों को ये उपहार दे देते हैं। जिन सहजयोगियों को उपहार न मिल पाने के कारण बुरा लग रहा था उन पर मज़ाक करते हुए महिलाओं ने कहा, ठीक है हम इन्हें अपने कर्णफूल (Ear Tops) दे देते हैं। इतना मज़ाक, इतनी समझदारी इसलिए थी कि वे लोग धन लोलुप नहीं हैं। मेरे विचार में वे अत्यन्त आध्यात्मिक लोग हैं। तो एक आध्यात्मिक महिला को इन सब चीज़ों की परवाह नहीं करनी चाहिए और अपनी गरिमा को बनाए रखना चाहिए और अपने हर कार्य से ये दर्शाना चाहिए कि वह आध्यात्मिक है। ये सब अत्यन्त मधुर है।

मैं आपको बता रही थी कि एक ओर तो आप कभी-कभी कुछ अलग महसूस करते हैं-जैसे मैंने जापान के विषय में बताया। जापान में जब मैं गई तो वहाँ के टाइल (Tile) मुझे बहुत पसन्द आए। वे कुछ बना रहे थे और उनकी टाइलों के नमूने मुझे बहुत अच्छे लगे, मैंने कहा कि क्या मैं इनमेंसे एक टाइल ले जा सकती हूँ। कहने लगे नहीं नहीं कोई बात नहीं है हम आपके जहाज पर भेज देंगे, और जहाज पर बहुत बड़ा बंडल टाइलों का भेज दिया। कप्तान ने आकर मुझसे पूछा कि हम इनका क्या करें? मैंने कहा आपको ये कैसे मिले? कहने लगा वे आपके लिए सभी प्रकार के टाइल ले आए हैं! क्या आप इसकी कल्पना कर सकते हैं! एक ओर तो यह अभिव्यक्ति का तरीका है परन्तु दूसरी ओर ये काफी भिन्न है। तो व्यक्ति को उपहार के महत्व को समझना चाहिए, उसके लिए बुरा नहीं मानना चाहिए। उसका महत्व बहुत अधिक हो सकता है। ये पूछना बेहतर होगा कि उन्होंने वो चीजें आपको क्यों दी? इसी को हम मंगलमयता कहते हैं।

मंगलमयता लक्ष्मी जी का महान गुण है। जो भी कुछ आप दें वह मंगलमय होना चाहिए। कई बार मैंने देखा है कि शरारत के कारण बच्चे मुझे गिलहरी देने की कोशिश करते हैं। ऐसा करना अशुभ है। परन्तु उन्हें इसके बारे में बताया नहीं गया होता कि यह अमंगलमय है, यही कारण है कि वे ऐसे कार्य करते रहते हैं। बच्चों को बताया जाना चाहिए कि यह मंगलमय नहीं है और इससे देवी प्रसन्न नहीं होंगी। तो ये बात भली-भांति समझ ली जानी चाहिए कि अशुभ उपहार देकर लक्ष्मी का अपमान करने का प्रयत्न नहीं किया जाना चाहिए। आप यदि इस बात को नहीं जानते तो इसे समझ लें और भली-भांति इस कार्य को करें।

दिवाली का संदेश ये है कि श्रीराम को राज्य दिया गया। श्री राम न्याय एवं ईमानदारी की प्रतिमूर्ति थे इसलिए उन्हें राजगद्दी सौंपी गई। इसी प्रकार हमें भी महसूस करना है कि कृतज्ञता और प्रेम की हमारी अभिव्यक्ति ऐसे व्यक्ति के लिए होनी चाहिए जो श्री राम की तरह से महानता का प्रतीक हो।

यह अत्यन्त सूक्ष्म बात है जिसे समझने का प्रयत्न किया जाना चाहिए। **आप यदि नहीं देना चाहते तो मत दें परन्तु यदि आप देना चाहते हैं**

तो व्यक्ति के योग्य चीज़ उसे दें। श्री राम के स्वभाव से हमें यह शिक्षा मिलती है। जंगल में उन्हें एक छोटी जाति की वृद्ध महिला मिली जिसके दाँत झड़ चुके थे। वह श्री राम से कहने लगी कि ये बेर चखकर मैंने आपके लिए रखे हुए हैं ताकि खट्टे बेर मैं आपको न खिलाऊं इसलिए अपने दाँतों से मैंने इनको चखा है। ये बहुत मीठे हैं कृपा करके इन्हें स्वीकार करें। तुरन्त श्री राम ने वे बेर स्वीकार किए। श्री लक्ष्मण इस पर बहुत नाराज़ हुए क्योंकि किसी की झूठी की हुई चीज़ भारत में किसी को खाने के लिए नहीं दी जाती। परन्तु श्री राम ने कहा, "मैंने कभी इतने मधुर फल नहीं खाए ये बेर तो बहुत ही अच्छे हैं। श्री सीताजी ने भी उनसे ये बेर लेकर खाए। तब लक्ष्मन जी ने भी क्षमा माँगकर वे फल खाए।

इससे यह पता चलता है कि श्री राम ने शबरी के प्रेम और उसकी चैतन्य लहरियों को उन फलों में महसूस कर लिया था, इसी कारण उन्होंने ये बेर अपनी पत्नी को भी दिए। अत: **जो कुछ भी आप करें पूरे प्रेम से करें। प्रेम से किया गया कार्य मंगलमय हो जाता है। परन्तु यदि उसमें प्रेम का अभाव है या किसी स्वार्थ के कारण यह कार्य किया गया है तो यह बेकार हो जाता है।** श्री राम जैसे महान अवतरण को भी फल भेंट करते हुए शबरी के मन में केवल प्रेम था। इसी प्रकार आपको भी स्वच्छ हृदय होना चाहिए तभी आप जान सकेंगे कि करने के लिए कौन सा कार्य सबसे अच्छा है।

वास्तव में दिवाली समाप्त हो चुकी है। पर मैं आप सब लोगों को मंगलमय दिवाली तथा सम्पन्नता पूर्ण नव वर्ष की कामना करती हूँ। परमात्मा आपको धन्य करे।

यही लक्ष्मी महालक्ष्मी का रूप धारण करती है अर्थात् जब आप धन के मूल्य को समझते हैं, इसका बाहुल्य जब आपके पास हो जाता है तब आप इससे तंग आ जाते हैं। अन्दर से आप विरक्त हो जाते हैं और लक्ष्मी का एक नया रूप प्रकट होता है - वह महालक्ष्मी है। यह वह शक्ति है जो आपको बुलंदियों पर ले जाती है जो कि आध्यात्मिक जागृति है। आपने देखा है कि अत्यधिक वैभवशाली देशों में लोगों में सत्य को प्राप्त करने की इच्छा जागृत हुई। सत्य को प्राप्त कर लेने की इच्छा के कारण ही आप सब लोग यहाँ उपस्थित हैं। इसका अर्थ ये हुआ कि महालक्ष्मी शक्ति ने आपके अन्दर कार्य करना आरम्भ कर दिया जिसके फलस्वरूप सत्य को खोजते हुए आप सहजयोग में आए। यह महालक्ष्मी आपके लिए बहुत महत्वपूर्ण है कोल्हापुर में स्वयंभू महालक्ष्मी का मन्दिर है परन्तु वहाँ के लोग ये नहीं जानते कि महालक्ष्मी के मन्दिर में जाकर वे जोगवा क्यों गाते हैं। वे प्रार्थना करते हैं कि हे अम्बे, आप जागृत हों। अम्बे, कुण्डलिनी को कहते हैं। तो आप समझ सकते हैं कि महालक्ष्मी के मन्दिर में उन्होंने जोगवा क्यों गाना शुरू किया। जोगवा कुण्डलिनी को जागृत करने के लिए प्रार्थना है।

नैतिकता व देशभक्ति

परम पूज्य माताजी श्री निर्मला देवी का सार्वजनिक प्रवचन
रामलीला मैदान, दिल्ली - 18.12.98

सत्य को खोजने वाले आप सभी साधकों को हमारा नमस्कार। हम सत्य को ख़ोज रहे हैं। किन्तु कौन सी जगह खोजना चाहिए? कहाँ खोजना चाहिए। कहाँ ये सत्य छिपा हुआ है? ये पहले समझ लेना चाहिए। आप देखिए कि परदेस से हजारों लोग हर एक देश से यहाँ आते हैं। उनसे पूछा जाए कि तुम यहाँ क्यों आए तो वे कहते हैं कि हम यहाँ सत्य खोजने आए हैं। हमारे देश में तो सत्य नहीं है लेकिन भारतवर्ष में सत्य है। ये समझकर के हम यहाँ आए। और इस सत्य की खोज में हर साल हजारों लोग इस देश में आते हैं और हज़ारों वर्ष से आते हैं। आपने सुना ही होगा, इतिहास में चाइना से और भी दूर देशों से लोग यहाँ आते थे, और उनको पता नहीं कैसे मालूम था कि इस देश में ही सत्य निहित है, छिपा हुआ है। और उसकी ख़ोज में वो गिरी-कन्दराओं में घूमते थे, हिमालय पे जाते थे हर तरह के प्रयत्न करते थे कि किसी तरह से हम सत्य को खोज लें। क्योंकि वो किसी भी धर्म का पालन करते नहीं थे। लेकिन वो जानते थे कि सिर्फ इस धर्म पालन से हमें सत्य नहीं मिलना। ये तो एक मार्ग-दर्शक है। जैसे रास्ते पर इशारे से लिखा जाता है कि ये रास्ता है। किन्तु इससे हम पाते नहीं हैं इसलिए इस अधूरेपन से परेशान होकर के वो अपने भारतवर्ष में आते थे। अब ये सत्य हमारे देश में था और है और अब भी है। इस सत्य को पाना अत्यन्त आवश्यक है। अपने यहाँ की प्रणाली और परदेस की प्रणाली में बहुत अन्तर है। वहाँ की जो ज्ञान की प्रणाली है वो इस तरह है कि ग़र कोई बात कोई आदमी कहता है तो उसको फौरन वो देखने लगते हैं, उसका निरीक्षण करते हैं और उसका विश्लेषण करते हैं कि ये बात कहाँ तक सही है। ईसा मसीह ने भी, ग़र कोई बात कही, तो उसका विश्लेषण हो जाता है। उस विश्लेषण से जो असलियत है वो पता नहीं लगती और उससे दूसरे विद्रुप रूप सामने आ जाते हैं।

अब ये सोचना है कि अपने देश की प्रणाली कैसी है? एक तो इस देश में कोई तो विशेषता, पवित्रता है कि यहाँ इतने ऋषि मुनि और इतने मनन करने वाले महान लोग हो गए, हजारों वर्षों से, और वो बढ़ते-बढ़ते सोलहवीं शताब्दी तक हम देखते हैं कि यहाँ गुरु नानक जैसे अनेक ऐसे साधु-संत हो गए कि उन्होंने सत्य पे काफी कुछ लिख दिया। काफी कुछ कहा गया, समझाया गया लेकिन हमारी जो प्रणाली है वो इस तरह की है कि जो ऐसे पहुँचे हुए पुरुषों ने लिखा है, उसका हम वहाँ ग़ौर नहीं करते, उसकी हम चर्चा नहीं करते, उसको हम शास्त्रीय दृष्टि से नहीं देखना चाहते क्योंकि वो पहुँचे हुए लोग हैं। वो ऊँची स्थिति पे है। वहाँ से उन्होंने ग़र कोई बात कह दी तो उसको हम मान्य करके उस रस्ते पर चलते हैं। ये हमारे देश की विशेष, विशेष तरह की एक प्रणाली है जिसमें हम एक श्रद्धा भाव से, एक विश्वास के साथ, इस चीज़ को मानते हैं कि जो बड़े पहुँचे हुए, आध्यात्मिक स्तर के ऊँचे मार्ग में रहते हुए

लोगों ने लिखा है वही बात सही है। उसमें झूठ नहीं। उसको पड़तालने का, उसका विश्लेषण करने का हमें कोई अधिकार नहीं क्योंकि हम कोई ऐसे बुद्धिमान नहीं हैं। ऐसे हम पहुँचे हुए लोग नहीं हैं, हमारे में इतने शास्त्र वगैरा का कोई ज्ञान नहीं है, न ही हम गहराई से कोई चीज़ जानते हैं। एक बार इस बात को समझ लेने पर हम श्रद्धा पूर्वक उस महान तत्व को मानते हैं, जो हमारे सामने इन ऋषि मुनियों ने रखा।

विदेश में भी मैंने देखा, कि बड़े-बड़े वहाँ पर सूफी लोग हो गए और उन्होंने बिल्कुल सहज की बातें करी हैं बिल्कुल सहज की ही बात करी है। लेकिन उनको कोई मानता नहीं है सूफियों को, उनकी मान्यता बहुत ही थोड़ी सी है। थोड़े से लोग उनको मानते हैं और सिर्फ उनकी कविता पढ़के बड़ा मनोरंजन कर लेते हैं पर उन्होंने जो कहा उस मार्ग पर नहीं चलते। ऐसे हरेक देश में बड़े-बड़े सूफी हो गए हैं। इंग्लैण्ड जैसे देश में भी विलियम ब्लेक जैसा एक बड़ा भारी संत हो गया लेकिन उसकी बात कोई नहीं मानते हैं। हमने तो कभी कालेज में भी उसका नाम नहीं सुना था लेकिन हम जानते थे कि वो है। जब लन्दन गए तो पहली मर्तबा हमने उनकी किताबें खरीदीं। उसका कारण यह है कि विलियम ब्लेक पागल है, जितने भी सू. फी थे सब पागल हैं। सब अपने ऋषि मुनि भी पागल हैं, इनके हिसाब-किताब से। इस तरह की जो अहंकारिता परदेस में है, वो इस देश में नहीं है। नहीं थी, ऐसा कहें क्योंकि अब तो हम बिल्कुल परदेसी हो रहे हैं। हमें अपने देश के बारे में कुछ मालूमात ही नहीं। हमारे स्कूलों में बच्चों को कुछ मालूम ही नहीं। किसी बच्चे से हमने पूछा कि तुम अजन्ता के बारे में कुछ जानते हो तो कहने लगा, अजन्ता हिन्दुस्तान में है कि बाहर है?

अपने देश की जो सम्पत्ति है वो इतनी ज्यादा, इतनी गहरी, इतनी अचल है कि उसको देखना, जानना हम हिन्दुस्तानी अपना कर्त्तव्य ही नहीं समझते। यहाँ की संस्कृति के बारे में तो कुछ बता ही नहीं सकते। कितनों ने मुझसे कहा, ख़ासकर हमारे जो परदेसी सहजयोगी हैं, कि माँ आप एक किताब हिन्दुस्तान की जो ख़ासकर गहरी बातें हैं उस पर लिखो। सो मैंने कहा कौन सी गहरी बातें? तो कहने लगे संस्कृति। भारतीय संस्कृति पर आप एक किताब लिखो। मैंने कहा ये तो महासागर है। इस सागर में से मैं आपको क्या दे सकती हूँ? उसके लिए तो ग्रन्थ पे ग्रन्थ लिखने पड़ेंगे। एक छोटी सी बात हम सब हिन्दुस्तानियों के लिए बताती हूँ, मैं मजाक की बात, कि एक विदेशी महिला थी। एम्बेसेडर की बीबी थी वो, वो हमारे पास आई। गले में वो हार पहने हुए थी तो मुझे ये कहने लगी मेरी समझ में ये हिन्दुस्तानी नहीं आते। मैंने कहा क्या हुआ? कहने लगी मैं एक फूलों की दुकान में गई थी और उस दुकान में बड़ा सुन्दर एक हार था, वो खरीद कर मैंने पहन लिया। तो वो जो लड़की थी जिसने बेचा वो पेट पकड़ पकड़ कर हँसने लग गई और रास्ते में सब लोग मेरे ऊपर हँस रहे थे क्योंकि मैंने गले में हार पहन लिया। मैंने कहा अब इसको कैसे समझाएं? मैंने कहा भई देखो यहाँ कोई ग़ार आपका आदर करे तभी हार पहनाया जाता है। आप अपना ही आदर तो कर नहीं सकते। तो आप ग़ार खुद आदर करें अपना और हार पहन लें तो ये तो हिन्दुस्तानी जो संस्कृति है उसके लिए बड़ी हास्यास्पद चीज़ है, इससे सबको हँसी आएगी। उसने कहा ये हिन्दुस्तानी जो, भारतीय आपकी जो चीज़ है ये बड़ी गहरी है। मैंने कहा, हाँ ये

तो आप कोई भी हिन्दुस्तानी होगा ये बात समझ जाएगा कि इस तरह से अपने को आगे बढ़ा कर रहना और इस तरह से अपने गले में हार पहन के घूमना, ये चीज़ बड़ी ही निन्दनीय है। क्योंकि इसमें नम्रता नहीं, इसमें ये समझ नहीं कि हम हैं कौन? हम अपने को क्या समझे बैठे हैं?

इस बात को लेकर के मैं कहूँगी कि महात्मा गाँधी ने जो आन्दोलन चलाया था वो बिल्कुल उल्टा पड़ गया। जब हम गाँधी जी के साथ थे, उनके साथ रहे और उन्हीं के बहुत सारी बातचीत और उनका ढंग जो था वो था, हालांकि वो भी परदेस के पढ़े हुए थे, कि अपनी भारतीय संस्कृति को उभारना चाहिए। उसके बग़ैर ये संसार नहीं बच सकता। इस पर संसार को बचाना है तो भारतीय संस्कृति का यहाँ एक बढ़िया उदाहरण होना चाहिए, मसला होना चाहिए जिसको देखकर लोग समझ जाएं कि ये भी एक ज़िन्दगी है, इसमें भी एक आनन्द है। उनके यहाँ चार बजे उठने की प्रथा थी। चार बजे उठके नहा-धोकर के और आपको प्रार्थना में जाना पड़ता था। प्रार्थना में जाकर आप बैठिए तो, वहाँ साँप भी बहुत थे। कभी-कभी एक-आध साँप आपके सामने डोलता हुआ दिखाई देता था पर कुछ कभी किसी को काटा हो बिच्छु ने भी तो पता नहीं। इतना वातावरण उनका शुद्ध था। वहाँ नम्रतापूर्वक सब लोग, हर एक जाति के हर एक धर्म के लोग बैठके प्रार्थना करते थे और प्रार्थना में संगीत आदि सब कुछ होता था। उन्होंने जो भजनावली भी लिखी है, आश्चर्य की बात नहीं है क्योंकि मैं इस बात को जानती हूँ कि वो कितने आध्यात्मिक थे कि सारे कुण्डलिनी के ही चक्रों पर उन्होंने एक के बाद एक, एक के बाद एक इस तरह से सारे श्लोक लिखे। पूरे, सबसे पहले उन्होंने लिखा था तो गणेश की स्तुति, फिर सरस्वती की स्तुति, इस तरह से करते-करते उन्होंने हर एक चक्र के जो अधिष्ठित देवता थे, उनके ऊपर अपनी भजनावली में लिखा था और उसी तरह से गाने का। उसके बाद बाइबल से भी Lords Prayer कही जाती थी, उसके बाद कुरान से भी कहा जाता था और भी बुद्ध धर्म का भी और जैन धर्म की भी उसमें कुछ न कुछ श्लोक होते थे। पर पहला जो हिस्सा था उसमें एक-एक चक्र पे बैठे हुए हरेक देवता को उन्होंने लिया था। इतने आध्यात्मिक दृष्टि से देखते थे। वो कुण्डलिनी के बारे में जानते थे, चक्रों के बारे में जानते थे। सब कुछ जानते हुए उन्होंने इस चीज़ को लोगों में लाने की कोशिश की, ऐसी भजनावली लिखाई जिसमें इस तरह से सब चीज़ें लिखी गईं। अध्यात्म के बारे में बहुत मुझसे भी पूछते थे। मैं तो बहुत छोटी लड़की थी लेकिन तब से वो पूछा करते थे कि तुम बताओ।

कौन सी गहनता हमारी संस्कृति की विशेष है? अब इस संस्कृति के बारे में कहना बहुत ज़रूरी है क्योंकि गाँधी जी को तो लोगों ने भुला दिया। गाँधी जी तो बिल्कुल बेकार हो गए क्योंकि उनका आध्यात्म तो कहीं दिखाई ही नहीं देता। आज राज कारण में अध्यात्म की तो कोई बात ही नहीं करता। आध्यात्म में हम हिन्दुस्तानी नहीं जाएंगे तो कौन जाएगा उसमें? कौन उसको समझेगा? आज आप देख रहे हैं, यहाँ पचहत्तर देशों के लोग आकर के बैठे हुए हैं। पचहत्तर देशों के लोग आए हुए हैं और पचहत्तर देशों में ये अध्यात्म फैल गया और इन्होंने आत्मसाक्षात्कार को प्राप्त किया। इन्होंने अपनी संस्कृति को पकड़ा, अमरीकन संस्कृति के नहीं, इंगलिश संस्कृति के नहीं, फ्रेंच संस्कृति के नहीं, उल्टे जिस देश से आए हैं उस देश की

संस्कृति को कहते हैं कि ये तो बिल्कुल ही पतन की ओर ले जा रही है। ये हमारे आत्मा का हनन करती है। ये हमें नैतिकता से गिराती है। इन लोगों ने समझ लिया अब हम लोगों को नहीं समझना चाहिए? हम लोग तो ऐसी-ऐसी चीज़ों का वरण करते हैं, ऐसी-ऐसी चीज़ों के लिए लड़ते हैं जहाँ नैतिकता का विचार है ही नहीं। सबसे बड़ी चीज़ अपनी संस्कृति की देन है कि हम लोगों को नैतिक होना चाहिए। नैतिकता के अनेक नियम है। पर अपने देश में, इस संस्कृति में सबको बिल्कुल पूरी तरह स्वतंत्रता है। पूर्णतया स्वतंत्रता है कि आप स्वतंत्र हैं चाहे आप नैतिक होना चाहें, चाहे आप कुछ होना चाहें हो जाइए क्योंकि अंतिम स्थिति में आपको पूर्णतया स्वतंत्रता मिलती है।

अब स्वतंत्र समझना चाहिए। 'स्व' के तंत्र को जानना यही स्वतंत्रता है। और 'स्व' माने क्या? स्व माने आपकी आत्मा। आत्मा को जानना ही स्वतंत्रता है। शिवाजी ने कहा था, भविष्य के बारे में, कि 'स्व' का तंत्र जानो, पहली चीज़। 'स्व' के तंत्र को जानना होगा और वही सहजयोग है, जिससे आप स्व के तंत्र को जानते हैं। और इस 'स्व' के तंत्र को जानने के लिए सबसे सहज मार्ग जो है वो है भारतीय संस्कृति। इसकी गहराई में आप उतर ही नहीं सकते। क्योंकि आप पता नहीं कहाँ से कहाँ फैंक दिए गए। एक तो गलती ये हुई कि ऐसे लोग हमारे ऊपर आ गए कि जिनको भारतीय संस्कृति के बारे में कुछ मालूमात ही नहीं। जिन्होंने गाँधी जी को लपेट के बिठा दिया एक तरफ कि तुम बैठे रहो। उन्होंने जो बातें सिखाना शुरु कर दीं वो सारी भारतीय संस्कृति के विरोध में हैं। जैसे मैं चित्तौड़ गढ़ की हूँ। वहाँ आपने सुना होगा कि पद्मिनी ने जौहार किया था, उन्होंने जौहार किया था। औरतों की इज्ज़त, आबरू (Chestity) ये सबसे बड़ी शक्ति है, ऐसा हम लोग मानते हैं अपनी संस्कृति में। जिस जगह औरतों की इज्ज़त और आबरू हट जाती है उस जगह में राक्षस और भयंकर राक्षस और हर तरह के भूत आकर रहते हैं। ये बात आप साक्षात् देख सकते हैं। अमेरिका में हो रहा है। अमेरिका में इतनी गंदी चीज़ें हो रही हैं कि मैं तो आपके सामने बता नहीं सकती। यहाँ तक की अपने ही बच्चों को वहाँ लोग मार डालते हैं। इस कदर गंदगी वहाँ है क्योंकि आप अभी वहाँ गए नहीं, बाहर के ढोल सुहाने होते हैं। वहाँ के लोगों में ज़रा सा भी भय नहीं है। परमात्मा का भय नहीं है। परमात्मा की शक्ति का विश्वास तक है कि नहीं, पता नहीं। सब कुछ पैसा सब कुछ पैसा। किसी भी तरह से पैसा लो। हमारे एक वहाँ हैं उनसे किसी अमेरिका के आदमी ने कहा कि भई तुमको इतना-इतना रुपया देता हूँ तुम फ़लानी औरत को मार डालोगे? उसने कहा न न मैं कभी नहीं मार सकता। कहा क्यों? कहने लगा नहीं नहीं मैं नहीं मारना चाहता, किसी को क्यों मारूं? कहने लगा पैसे के लिए, कहने लगा पैसे के लिए क्या दुनिया के लिए, मैं नहीं मार सकता। उसने कहा मैं तो मार दूंगा। उसने कहा क्यों? क्योंकि इसमें पैसा मिलता है। सबसे बड़ी चीज़ है पैसा। फिर आपकी माँ को भी मार दो। जब पहले एक साहब यहाँ आए थे तो मुझसे कहने लगे कि माँ मैंने अपनी माँ को ही मार डाला। मैंने कहा अच्छा! कल तुम मुझको भी मार डालोगे। जो अपनी माँ को मार सकता है और माँ के प्रति जिसमें श्रद्धा नहीं है वो हिन्दुस्तानी नहीं हो सकता, वो भारतीय नहीं हो सकता। माँ के तो बहुत वर्णन हैं और माँ को तो हम शक्ति स्वरूप मानते हैं और उसी शक्ति

की पूजा करते हैं। सबसे पहले सारे ग्रन्थों में माँ का वर्णन है। माँ से ही सब शुरु हुआ और इन लोगों की जो व्यवस्था है परदेसियों की, उसमें माँ का तो कोई स्थान ही नहीं है। बहुत से देशों में तो देश का नाम भी बाप के नाम से है। जैसे हम लोग भारत माता कहते हैं, तो वो अपने देश को कहते कि ये तो पुरुष है। उसमें से एक देश है जर्मनी। आप जानते हैं जर्मनों ने क्या किया? अब रो रहे हैं जो कुछ भी किया उसके लिये, पर किया तो सही। ऐसे भारतवर्ष के लोग नहीं कर सकते। अब हमारे यहाँ समझ की कितनी कमी है, एक किताब मैंने देखी जयपुर पे, वो जयपुर का कोई होगा उसने लिखी होगी, मुझे हैरानी हुई कि वो कहता है कि जो जौहार पद्मिनी ने किया था मेवाड़ में उसकी जगह अच्छा था कि वो खिलजी के चरणों में चली जाती। उसकी दासी हो जाती तो ये झगड़ा ही न खड़ा होता। बत्तीस हजार औरतों को जला दिया ये कौन सा उन्होंने बड़ा काम किया? देखिए अक्ल कि कहाँ पहुँचती है? उससे अच्छा था सबसे आप समझौता करते। अंग्रेजों से लड़ने की क्या जरूरत थी? उनसे समझौता करते। सबसे समझौता करके रहते, तो अभी तक इतने लोग नहीं मरते। और जीकर करते क्या? इतने लोग अगर जीते भी तो करते क्या? क्या उनमें चीज़ है? आज जी रहे हैं अब हिन्दुस्तानी इतने कर क्या रहे हैं? क्या ये प्राप्त करने वाले हैं? पैसा पैसा पैसा इनकी भी खोपड़ी में घुस गया है और उसके लिए जो हम अपने सारे जो मूल्य हैं उनको बेच डालें? उन सब मूल्यों को हम सत्यानाश कर दें जिनके सहारे हम जी रहे हैं?

आपको पता होना चाहिए कि सारी दुनिया आपकी तरफ आँख लगाए बैठी है कि आप कौन से मूल्यों पर उठने वाले हैं? कौन से मूल्य से आप जगने वाले हैं। कोई भी आपको बेवकूफ बना दे, आप बेवकूफ बन जाते हैं। अंग्रेजों ने बेवकूफ बनाया अब और बेवकूफ बनिए। अनैतिकता को फैलाना जिनका काम है वो भारतीय नहीं हो सकते, क्योंकि नीति के सिवाय आप उठ नहीं सकते। नीति के सहारे ही आप उस परम को पा सकते हैं। ग़र आपके अंदर नैतिकता नहीं बैठी हुई तो आपका उद्धार हो नहीं सकता। आप नर्क में जाएंगे और आपका देश भी नर्क में जाएगा। जो लोग अनैतिकता को लेते हैं। जैसे देखा है हमने कि उन्होंने वहाँ पे हर तरह की स्वतंत्रता दे दी अमेरिका में, किसी तरह से पैसा कमाना है, फिर औरतें अपनी इज्ज़त बेचें, चाहे शराब के आप बुत्ते खोलिए, चाहे कुछ करिए, किसी तरह से पैसा कमाना है। पैसा क़मा करके ये नए अमेरिका का देश है क्या? आपको पता है सबपे कर्ज़ा है। उस देश पे कर्ज़ा है। हमारे यहाँ से इतने लड़के वहाँ पर गए इतने पढ़े लिखे मैंने कहा यहाँ आए क्यों? कहने लगे यहाँ पर बड़ी तनख्वाह मिलती थी, पैसा मिलता था इसलिए आए। अच्छा! अब पैसा गया कहाँ? सबपे क्यों इतना कर्ज़ा है। हरेक बच्चे पे कर्ज़ा। मैंने कहा ये भई ये हिन्दुस्तानी होकर तुम्हारे पर कर्ज़ा क्यों हुआ? सोचने की बात है कि आप बड़े भारी इंजीनियर हो गए, डॉक्टर हो गए, चार्टर्ड अकाउन्टेंट हो गए और यहाँ आकर कर्ज़े में बैठे हो कि अब तुम वापिस नहीं जा सकते? कहने लगे यहाँ पे जो Life Style है यहाँ के जो रहन-सहन हैं उसमें तो कर्ज़ा हो ही जाता है। बेवकूफ जैसे वो लोग भी, वहाँ आर्डर देकर ये चीज़ मँगा, वो चीज़ मँगा और वो कार्ड रखते हैं कार्ड। और सब कर्ज़े में हैं। किसी के पास कुछ पैसा नहीं। आप गए वहाँ

और वहाँ जाकर आपने कर्ज़ा कर लिया। फायदा क्या? कुछ कमाया नहीं, कुछ नहीं और वहाँ आप कर्ज़े में बैठे हुए हैं। हाँ बड़ा बढ़िया आपके पास आलीशान सोफ़ा होएगा, Carpet होएगी। ये होगा वो होगा, पर सब कर्ज़े से। वहाँ कर्ज़ा करना कोई बुरी चीज़ समझी ही नहीं जाती। तो आप कर्ज़े पे कर्ज़ा करते जाओ। ऐसी संस्कृति जहाँ अनैतिकता इतनी हो वहाँ होना ही है ऐसे - उसे अलक्ष्मी ही कहते हैं, अलक्ष्मी का कोप कि दिखने को ऊपर से तो दिखाई देता है पर अन्दर कुछ नहीं। अन्दर कर्ज़ा! हम उनसे क्या सीख सकते हैं? वो यहाँ सीखने आते हैं और हम उनसे क्या सीख सकते हैं? इन लोगों से कुछ भी सीखने का नहीं। ये कहने में कोई भी डर की बात नहीं है कि अपने देश जैसा महान देश कोई नहीं और हमारी भारतीय संस्कृति जैसी कोई भी संसार में संस्कृति नहीं। इसकी जो गहराई है। उस तक पहुँचना ही मुश्किल हो जाता है क्योंकि हम भी इतने बेकार हो गए हैं। इस भारत वर्ष में लोग इतने बेकार हो गए हैं कि प्याज़ के पीछे में वोट देते हैं? अरे सारी दुनिया हँस रही है। अभी हमारे सहजयोगी बाहर से आए तो सब एक-एक थैला प्याज़ लेकर आए, बताओ, शर्म करो! शर्म करो इस बात पर! बेवकूफ बनाना तो बहुत आता है लोगों को, लेकिन बेवकूफ बनना हिन्दुस्तानियों को आता है। अभी ये लोग सब गठरी भर-भर के अपने साथ प्याज़ लाए, मैंने कहा प्याज़ क्यों ले आए? कहने लगे आपके देश में प्याज़ की इतनी कमी है कि सरकार बदलना चाहते हैं। मैंने कहा हाँ है ये तो है एक बात हो गई लेकिन अब तुम शर्मिन्दा मत करो हमें। वो दिन गए जब कि देश के लिए लोग लड़ते थे। सब कुछ अपना त्याग किया, हमने खुद कितनी बार मार खाई उनकी, क्या-क्या किया! मैं पूछती हूँ जो आज इतना अधिकार लगा रहे हैं इनके बाप दादाओं ने कुछ किया देश के लिए या इन्होंने कुछ किया है देश के लिए? जब संग्राम इस देश में हुआ था, जब लड़े थे लोग, जेल में गए, लाठी खाई, मार खाई, घर द्वार मिटा दिये, तब इनमें से कोई लोग थे क्या वहाँ? अब बैठ गए अधिकार जमा के, कि ये नहीं होना चाहिए। वो नहीं होना चाहिए। मैं देख-देख के हैरान हूँ कि अनैतिक चीज़ें लाने में इतना झगड़ा हो रहा है! नीतिवान लोग जो थे उनको खराब करो, उनसे पैसे ऐंठो, उनको शराब पिलाओ उनको गन्दी बातें सिखाओ, उनसे पैसे ऐंठ करके और सब खा जाओ! एक चीज़ है कि आपको ये सोचना चाहिए कि ग़र आप सहज में आ रहे हैं तो आपको इस भारतीय संस्कृति को ही अपनाना पड़ेगा। फिर आप कोई भी जाति के हों, कोई धर्म के हों, कोई भी आपका विचार हो, उसके सिवाए नहीं हो सकता। सहज मार्ग क्या है? वो भी एक समझने की बात है कि हम लोग श्रद्धापूर्वक किसी चीज़ को मानते हैं, लेकिन अभी तक उसको पाया नहीं। झूठे लोग बहुत आ गए, गड़बड़ी बहुत हो गई, हर जगह गड़बड़ी होती है, मारामारी होती है। ये सब है माना। लेकिन इसके लिए बताया गया है कि तुम आत्मसाक्षात्कार को प्राप्त करो आप आत्मसाक्षात्कार को प्राप्त करो आपके धर्म का कोई अर्थ नहीं आपकी बातचीत का कोई अर्थ नहीं, जब तक आपने आत्मसाक्षात्कार नहीं पाया। बुद्धि से नहीं हो सकता, ये बुद्धि से परे चीज़ है। इसे आइंस्टीन ने कहा है, अब लो और कौन चाहिए आपको? ये बुद्धि से परे चीज़ है। बुद्धि से आगे है। सारे शरीर को, बुद्धि, मन को सबको ग़र तुम मानते भी हो तो ये कोई शाश्वत चीज़ नहीं है। शाश्वत चीज़ जो है वो बुद्धि से

परे है, जिसे परम चैतन्य कहते हैं। उसको उसने (Torsion area) एंठन क्षेत्र कहा हुआ है, आइंस्टीन ने। वो बेचारा वो भी एक आत्मसाक्षात्कारी था, वो कह गया उस पर माल लोगों ने लगा दिया। विज्ञान हर जगह। उसने कहा Torsion area तो वो कहाँ है? कैसे मिलेगा? कैसे पाएंगे? मिल ही नहीं सकता क्योंकि ये जो Torsion area है ये आत्मसाक्षात्कार के बाद ही प्राप्त होता है। तो पहले आत्मसाक्षात्कार करें। अब उसके लिए बहुत से झूठे लोग निकल आए अपने देश में, बहुत से तांत्रिक निकल आए वो कुछ और धंधा कर रहे हैं। कुछ हीरा दे रहे हैं कोई कुछ कर रहे हैं। उसी में फँसे जा रहे हैं।

आत्मसाक्षात्कार को प्राप्त करना सहज मार्ग से बहुत ही सुलभ हो गया। सबको बहुत आसानी से मिल सकता है। इसमें कोई भी ऐसी बात नहीं कि आप सिर के बल खड़े हो जाओ, कि आप घर द्वार छोड़ दो, आप बाल बच्चों को छोड़ दो, कोई करने की जरूरत नहीं। आपके ही अंदर ये शक्ति है। ये आपके ही अंदर त्रिकोणाकार अस्थि में ये शक्ति है। ये मैं कह रही हूँ ऐसी बात नहीं है। अनादिकाल से यहाँ लोगों ने कहा है। सिर्फ जो लोग कहते थे मुझे आश्चर्य है कि हमारे यहाँ से इतने हजारों वर्ष पूर्व मच्छिंदर नाथ, गोरखनाथ ये लोग कहाँ पहुँचे तो वोलिविया! वोलिविया में पहुँचे जो कि हम लोग जा नहीं सकते, वहाँ बड़ा मुश्किल है। यूक्रेन में गए, कुछ हिस्से में रूस में भी गए। वहाँ जाकर के उनको बताया कि आपके अंदर ये शक्ति है और ऐसे-ऐसे चक्र हैं, ये हैं, सब वहाँ बताया। और हम उन्हीं के वंशज हैं, उन्हीं के हम बेटे हैं, बेटियाँ हैं और हम क्या जानते हैं? कुछ भी नहीं जानते। वो वोलिविया के लोग सब कुछ जानते हैं। पर वो कहने लगे इसकी जागृति हमें नहीं आती। इस कुण्डलिनी की जागृति लेकिन हमें आती नहीं। बाकी हम सब जानते हैं। हम एक बार वहाँ गए और एकदम आग लग गई जैसे। हजारों लोग बोलिविया के पार हो गए। पर हमें तो वो ज्ञान भी नहीं और हम तो वो जानते भी नहीं, हमारे किताबों में इस मामले में कोई लिखता भी नहीं, और न कोई बताता है। मानो हमको काट दिया उस महान संस्कृति से, उस महान ज्ञान से हमको काट दिया, और काट कर के हम अजीब एक पता नहीं कौन से देश के लोग बन गए। न अंग्रेज हैं न हिन्दुस्तानी हैं, पता नहीं क्या बन गए हम लोग। हमें कुछ मालूमात ही नहीं लोगों ने कहा, अच्छा कुण्डलिनी माने कुण्डलिनी माने कुण्डली कि कुण्डलिनी माने क्या? किसी को मालूमात ही नहीं है। सोचिए इसमें जो सागर भरा हुआ है इस देश में। सागर भरा है। अभी एक साहब मैक्सिको से आए थे, वो यहाँ पर एम्बेसेडर हैं। तो मैंने उनसे कहा कि आपके यहाँ जो है बहुत ज्यादा भूत विद्या है। कहने लगे अच्छा मैंने कहा हाँ मैं तो गई थी मैं जानती हूँ भूत विद्या बहुत है वहाँ। तो कहने लगे वो साइकोलोजी से चला जाएगा, तो मैंने कहा आपकी साइकोलोजी ही साइकाट्री जो है एक बच्चे जैसी है। यह Child Science है, उसमें कुछ है ही नहीं। आपको जानना है तो मैं बताऊंगी कि ये भूत विद्या, हमारे यहाँ जो साइकोलोजी साइकाट्री है वो कितनी गहन, एक-एक, एक-एक बातें उसके अंदर लिखी हुई हैं। वो मैं समझाऊंगी तुमको। तो वो बिचारे बहुत ज्ञान पिपासु हैं, ज्ञान जानना चाहते हैं लेकिन मेरे पास जब Time होगा तो बैठकर उनको मैं समझाऊंगी । पर आप सोचिए कि आपके देश में इतना गहन यहाँ ज्ञान का भंडार पड़ा हुआ है और आप कहाँ भाग रहे हैं? क्या

कर रहे हैं आप लोग? जो देश आपके हिसाब से ऊँचे उठ गए, बड़े अग्रसर हैं, उनको जाकर देखिए न। आप लोगों ने देखा नहीं, मैंने तो देखा है। वहाँ के लोग सुखी हैं क्या? ग़र सुखी होते तो यहाँ क्यों आते? यहाँ आनन्द को खोजने क्यों आते? वो तो ऐसी चीज़ है कि आज आपको एक छोटा सा घर चाहिए, फिर मोटर चाहिए, फिर फलाना चाहिए, फिर वो चाहिए। जो मिलता है उससे आप सुखी नहीं, उसके बाद दूसरी चीज़ चाहिए, उसके बाद तीसरी चीज़ चाहिए। तो उसके पीछे इतने भागने की जरूरत क्या? कोई समाधान नहीं, कोई संतोष नहीं। **लेकिन सहज में ये सब मिल जाता है। सहज में आपको पूर्णतया समाधान और संतोष मिल जाता है। पर सहज मार्ग भारतीय संस्कृति पर बसा हुआ है। विदेशी संस्कृति नहीं चलेगी उसमें।** जो सहज में आना चाहता है और आत्मसाक्षात्कार लेना चाहता है उसको पता होना चाहिए। अब ये औरतों को देखिए बाहर से आई है और साड़ियाँ वाड़ियाँ पहन कर बैठी हुई हैं। इसका मतलब नहीं कि अब वो हरे रामा जैसे कूदते फिरिए। उसकी जरूरत नहीं है। असलियत को पाना है, Reality को पाना है तो गहराई से उतर कर के और इसमें समाना पड़ेगा। इसको समझना पड़ेगा। इसमें कोई ऐसी बात नहीं है कि जो आप नहीं कर सकते। क्योंकि आप इस महान देश में पैदा हुए हैं। ऐसा लिखा जाता है शास्त्रों में कि भारतवर्ष में पैदा होने के लिए हज़ारों वर्षों की पुण्य, पुण्याई काम आती है। बताइए हजारों वर्षों की पुण्याई के बाद मैं क्या देख रही हूँ, कैसे लोग पैदा हो रहे हैं? पर साहब अभी हमारी ज़िन्दगी में हमने ऐसे लोग देख लिए जिन्होंने देश के लिए अपनी जान निछावर कर दी और अभी प्याज़ के लिए? क्या कहें, शर्म की बात है। पद्मिनी ने बत्तीस हजार औरतों को लेकर जौहार कर दिया। हमारे देश की विशेषता क्या है? हमारे मूल्य। हमारे मूल्य। पर वो सहज से जागृत होएंगे क्योंकि मैंने देखा परदेश के भी लोगों में वही मूल्य जागृत हो गए। क्योंकि ये हमारे अंदर बैठे हुए मूल्य हैं जो जगमगा रहे हैं अंदर, जो अंदर प्रज्जवलित हैं जो सूर्य के जैसे चमक रहे हैं। ये सब मूल्य हमारे अंदर और फिर इस पृथ्वी तत्व का इतना महात्मय है। लेकिन हमने ग़र ढक दिया, अपने ही को ग्रहण लगा लिया, तो ये मूल्य आपको कैसे दिखाई देंगे? ये आपके समझ में कैसे आएंगे? कोई एक तरह का पर्दा हो तो बात करें! कबीर दास जी ने कहा था, बहुत सुंदर सब कुछ लिखा है उन्होंने सहज के बारे में पर लोग समझ नहीं पाते। लोग नहीं समझ पाते। जैसे कि ईड़ा, पिंगला, सुखमन नाड़ी रे अब लोगों को क्या मालूम ईड़ा, पिंगला क्या है? ईड़ा, पिंगला चीज़ क्या है? उनको Nervous System मालूम है। Autonomous nervous system मालूम है। पर यही ईड़ा, पिंगला और सुष्मना नाड़ी जो है वो है ये नहीं मालूम। उसके बारे में कुछ जानते ही नहीं। उन्होंने लिखा है, "सैंया निकस गए, मैं न लड़ी थी।" तो हमारे लखनऊ में लोग रहते हैं उनको मैं कहती हूँ तुम दिल फेंक बहादुर हो, तो वो सैंया को सोचते हैं कि सैंया माने उनका कोई तो भी Lover या कोई प्रेमी है वो निकल गया वो नहीं रोई। मैंने कहा, कबीर को ये सबसे करना क्या है? वो क्या romantic थे क्या? उन्होंने ये कहा कि मेरी ज़िन्दगी निकल गई, मैं मृतप्राय हो गया। तो भी मैं उससे लड़ा नहीं, मृत्यु के साथ मैं लड़ा नहीं। तो वो आप सोचिए कि विपर्यास हमने कितना कर दिया, कितना उसको बदल दिया, pervert कर दिया कि जैसे

'सुरति चढ़े कमान'। ये कुण्डलिनी को सुरति कहने वाले कबीर को हमने सुरति को, बिहार में सुरति कहते हैं तम्बाकू को, बिहार का जो हाल है सो देख लिया। एक-एक बिहार में महान लोग हो गए। बुद्ध हो गए, महावीर हो गए, एक तरह से और मेरे ख्याल से गुरु गोविन्द साहब का भी वहाँ मैंने वहाँ देखा है। इस तरह से अनेक वहाँ पीर हो गए, कितने लोग हो गए उस बिहार में। जैसे कि एक सरोवर में कमल उग जाएं; अनेक कमल उग गए। अब उन्हीं का नाम लेकर के लोग कहें कि साहब हमारे देश में तो ये कमल हुए थे हमारे देश में वो कमल हुए थे। आप तो कीड़े हैं अब भी उसी में, आप क्या बात कर रहे हैं? आपको कमल होना है। तो सहज में उतरिए।

सहज में उतरना कठिन नहीं है, सहज है पर सहज में रहना कठिन है। आदमी को जो आदत हो गई इधर से खाना खाने की, वो ऐसे सादा खाना नहीं खा सकता। सहज में आप पार हो जाएंगे, आत्मसाक्षात्कार आप प्राप्त कर लेंगे। इसमें कोई शंका नहीं। विशेषकर के, ख़ास कर के, आप ग़ार भारतीय हैं तो सिर आँखों, पर चाहे आप कोई भी जाति के हैं मुसलमान, हिन्दू कोई हो आपको फ़र्क नहीं पड़ता। लेकिन इस आत्मा को प्राप्त करने के बाद उसमें जमना पड़ता है। जैसे बीज है वो प्रस्फुटित हुआ और उसमें से अंकुर निकल भी आया हो, तो भी उस अंकुर को वृक्ष होना पड़ता है। वहीं हम लोग मार खा जाते हैं। क्योंकि चारों तरफ वातावरण ही खराब है। सिर्फ हम लोग वातावरण उसको सोचते हैं कि जो गैसीय है जिससे Gases निकल रही है। नहीं नहीं। विचार से भी वातावरण बहुत खराब होता है। इसकी भी प्रक्रिया बहुत खराब है। चारों तरफ से विचारों का आन्दोलन जो चलते रहता है, ख़ास कर के हमारे अखबार वाले जो हैं वो तो एक कमाल के लोग हैं। पता नहीं कौन से देश के रहने वाले हैं। मुझे तो भारतीय नहीं लगते। उनमें से किसी को भी भारतीय संस्कृति के बारे में कुछ मालूमात ही नहीं। बहुतों ने कहा कि हम आपका एक Seminar या कुछ भी कहिए करने वाले हैं जिसमें सब हमारे अखबार वाले आएंगे। मैंने कहा, न न न ना। मुझे उनसे बात नहीं करनी । उनके बस का नहीं है। उनके बस का नहीं है। रात-दिन इससे उसको लड़ाओ, उससे उसको लड़ाओ। इससे झगड़ा करो। उससे झगड़ा करो। इसके सिवाए और वो कुछ नहीं कर सकते। पर अभी तीस देशों से यहाँ आए थे, पत्रकार आए थे। उन्होंने कहा कि माँ हम चाहते हैं आपकी एक सभा हो, और आश्चर्य की बात है कि, तीस देश के जितने भी वहाँ से आए हुए थे, सब के सब पार हो गए। सबको आत्मसाक्षात्कार मिल गया और सबके हाथ में ठंडक आने लगी। लेकिन जिनका दिमाग़ चालाकी में चलता है, जो लोग चालाकी करते हैं, इधर से उधर झूठी बातें बनाते-घुमाते हैं, ऐसे चालाक लोगों को सहजयोग नहीं कुछ कर सकता।

सहजयोग चालाकों के लिए नहीं है, उसी तरह से मूर्खों के लिए भी नहीं है। जो आदमी चाहता है हृदय से कि हमें आत्मसाक्षात्कार हो वही प्राप्त कर सकता है। फिर उसके बाद ज़िन्दगी बदल जाती है। उसके बाद मज़ा आने लगता है। उसके बाद अनेक तरह के आशीर्वाद आप पे आते हैं और आप जानते हैं कि परमात्मा आपको देख रहा है, आपकी हर एक गतिविधि को संभाल रहा है। आपके हर एक उठ बैठ को संभाल रहा है। आपके साथ हर जगह खड़ा है। नहीं तो लोग कहते हैं कि हम तो रोज़ मन्दिरों

में जाते थे और इतनी हमने पूजा करी। शिवजी हमपे खुश नहीं हुए हैं, फलाना नहीं हुआ, ढिकाना नहीं हुआ। सबकी शिकायतें हैं। अरे पर तुम्हारा तो सम्बन्ध ही नहीं हुआ उनसे। जब तक आपका सम्बन्ध नहीं हुआ, मस्जिदों में गए कहें कि हमारे घुटने फूट गए। शिवजी नहीं मिले, वहाँ पर हमको परमात्मा नहीं मिले, हमें वहाँ पर आशीर्वाद नहीं मिला, सुकून नहीं मिला। कैसे मिलेगा? क्योंकि वहाँ तुम्हारा कोई सम्बन्ध नहीं। कुरान को भी किसी ने पढ़ा नहीं है मेरे ख्याल से, ठीक-ठाक से। ग़र पढ़ें तो समझ में आएगा कि सारा सहजयोग ही वर्णित है उसमें। उनका खुद ही जो, जिसे क़यामा कहते हैं, जिसको कहते हैं जो जिस तरह से ऊपर चढ़े और किस तरह से सफेद घोड़े पे बैठकर ऊपर चढ़े, कैसे सात स्तरों पे उठे, वो सारा सहजयोग है। जो सच्चे होंगे वो सच्ची ही बात लिखेंगे न। इधर-उधर की ऊट-पटांग बात क्यों लिखेंगे? ये तो उन्होंने बाद में नीति बना दी कि ऐसे नहीं करो, वैसे नहीं करो। लोगों को बचाने के लिए। क्योंकि अरबिस्तान के लोग, जरा उनको मालूमात नहीं थी नैतिकता की। अपने भारतीयों को मालूम है, ये चीज़ गलत है ये चीज़ सही है। हम लोगों को पता है। एक लड़का अंग्रेजी पढ़ने गया था कैम्ब्रिज में, उसने बताया, मुझे बड़ी हैरानी होती है, कि ये लोग हरेक चीज़ को सोचते हैं कि एक बड़ा भारी आह्वान है, चुनौती है। मैंने कहा कैसे? मुझे कहने लगे कि तुम नशा क्यों नहीं लेते हो? उन्होंने कहा मुझे नहीं लेना है Drug। हमारे नीति में नहीं बैठती। कहने लगे कि ये कहाँ की नीति निकाल रहे हो, Drug लो। ये तो तुम्हारे लिए Challenge है। तुम्हारी नीति के लिए चुनौती है। उसने कहा मुझे नहीं ऐसी चुनौती आदि चाहिए। तो कहने लगे माँ ये लोग तो सोचते हैं शराब पीना एक चुनौती है। Drug लेना एक चुनौती है। एड्स होना भी चुनौती है। तो अच्छा है, नरक जाना भी एक चुनौती है, इनके हिसाब से। तो उनकी तो सारी बुद्धि ही भ्रष्ट हो गई है, मति भ्रष्ट है और क्या कहें? ग़र कोई कहे कि ये बड़ी अच्छी चीज़ है तो इसे क्या कह सकते हैं? एड्स वाले लोग तो, मैंने कोशिश करी कि उनके दिमाग ठीक करें, तो वो तो मेरे ही सिर पर चढ़ गए। कहने लगे हमने तो एक बलिदान किया है। बताइए आप मैंने कहा काहे का बलिदान किया। कहने लगे हम तो एक बड़े भारी योद्धा हैं। हम बड़े भारी लड़ाका लोग हैं, हम फलाना हैं, ढिकाना है। मैंने कहा भई नमस्कार। तुम ऐसे ही लड़ते रहो और अपनी ज़िन्दगी बरबाद करो। और क्या करें? तुम तो कुछ आगे जाने वाले नहीं। वो तो स्पष्ट दिखाई दे रहा है। तो इस तरह के वहाँ पर लोगों की प्रभूति कोई भी गलत काम करना एक challenge है, और हिन्दुस्तानियों को सोचते हैं ये डरपोक हैं, भारतीय लोग, बिल्कुल बेकार हैं! अब तो कमाल जो हो गई हम लोगों की, वो प्याज़ के मारे ऐसी शर्म लगती है मुझे कि अरे ये क्या इन लोगों ने हमारी दशा कर दी कि बिल्कुल ही हम लोग गए बीते बिल्कुल बेकार लोग हो गए! इस दिल्ली शहर में कम से कम कितने ही लोग सहजयोगी हैं हजारों। हजारों की तादाद में सहजयोगी हैं और पता नहीं कैसी ऐसी बातें यहाँ हो गई! अक्ल ही मारी गई है न। जैसे पंजाबी कहते हैं 'मत मारना' वो चीज़। ये चीज़ इतनी जल्दी हो जाएगी ऐसी मुझे कभी संभावना नहीं थी। मैंने सोचा था कि ठीक है अभी थोड़े दिन बाहर काम करके आऊं फिर देखूंगी। तो यहाँ तो हालत ही खराब हो गई या तो पता नहीं कैसे लोग पैदा हो गए हैं यहाँ? अब ये कह सकते हैं

ये घोर कलियुग है, मान लिया, नहीं तो इंसान इतना बदल ही नहीं सकता।

इस कलियुग में एक भ्रांति नाम की चीज़ होती है वो दिमाग़ पे काम करती है; वो जब दिमाग़ पे आ जाए तो कुछ दिखाई नहीं देता कि अच्छा क्या है बुरा क्या है? बुरी बात कौन सी है, नीति कौन सी है अनीति कौन सी है। इसका तारतम्य नहीं रहता, इसका कुछ पता ही नहीं चलता कि ये लें या वो लें। इसी घोर कलियुग में ही सहज आना है। ये लिखा हुआ है। नल दमयन्ति आख्यान में नल ने एक बार कलि को पकड़ा उसकी गर्दन पकड़ी कि मैं तुझे मार डालूँगा क्योंकि तुमने मुझे बहुत सताया है। मेरी बीबी से मेरा बिछोह कर दिया। मैं तुमको मार डालूँगा। तो कलि ने कहा कि अच्छा बाबा मेरा महात्मय तो सुन लो फिर मार डालना। उसने कहा तुम्हारा क्या महात्मय है, तुम तो दुष्ट हो। कहने लगे नहीं मेरा एक महात्मय है; महात्मय ये है कि कलियुग में लोगों में भ्रांति हो जाएगी। भ्रान्त हो जाएंगे लोग, माने बौखला जाएंगे और उसी वक्त हज़ारों लोग जो कि गिरी-कंदराओं में खोज रहे हैं परमात्मा को, सत्य को, वो आशीर्वादित होंगे, वो लोग अपने आत्मा का अनुभव करेंगे। उनको आत्मसाक्षात्कार होगा। इसलिए कलयुग जो है बहुत जरूरी है। उसके बगैर ये होने नहीं वाला और इसके बग़ैर मनुष्य इसे प्राप्त नहीं करेगा, इसको नहीं खोजेगा। ये जब बताया गया तो नल ने उसको छोड़ दिया। अच्छा आने दे तेरा कलयुग। ये घोर कलयुग आया और आपको सबको समेट रहा है। इधर ध्यान दीजिए, कौन से चक्कर में हम घूम रहे हैं? इसका विचार करना चाहिए।

सहज के मार्ग में आने के लिए आपको कुछ नहीं देना, पैसा नहीं देना, कुछ त्यागना नहीं कुछ नहीं है। इस तरह की चीज़ है ही नहीं। सिर्फ आपके अन्दर बसी हुई कुण्डलिनी का जागरण करना है। और जब वो जागृत हो जाती है तो अपने ही आप वो सहस्रार में समा करके और इसका भेदन करके और चारों तरफ फैली हुई ये सूक्ष्म चेतन शक्ति उसे एकाकारिता देती है। बहुत सादी बात है। आपका आज तक उस सूक्ष्म शक्ति से कोई सम्बन्ध ही नहीं आया। आपने आज तक उस सूक्ष्म शक्ति को महसूस ही नहीं किया। उसको जाना ही नहीं, और जाने बगैर ही आप भगवान का नाम ले रहे हो। मन्दिरों में जा रहे हो, और दुनिया भर के उपद्रव कर रहे हो। मस्जिद में जाने से क्या होगा? वो दिखाई दे रहा है। किसके अक्ल आई है? सब आपस में मरे जा रहे हैं। और मन्दिरों में जाकर के क्या हो रहा है? जहाँ पैसे खाए जा रहे हैं, दुनिया भर का भ्रष्टाचार आ रहा है? ये क्या साक्षात नहीं है कि ये गलत है, इससे कुछ लाभ नहीं है? इसके लिए कोई और चीज़ करनी चाहिए। ये सामने दिखाई दे रहा है। इसका साक्षात है। सामने साफ़ जो चीज़ दिखाई दे रही है उसको पहचानना चाहिए कि ये रास्ते ठीक नहीं, इसमें कोई फायदा नहीं ये बेकार की चीज़ है। जो पाना है अपने अन्दर है। अन्दर से अन्तर आत्मा को जब तक हम प्राप्त नहीं करते तब तक इस अन्धकार में न जाने कहाँ से कहाँ हम लोग भटक जाएंगे? इसलिए पहले ज़रूरी चीज़ है कि आप इस अन्धकार से उठें और आत्मा के प्रकाश में क्या अच्छा और क्या बुरा, इसको पहले जानें। पर आत्मा का प्रकाश जब आता है तो सिर्फ इतना ही नहीं। ये नहीं सिर्फ होता है कि आप नीर-क्षीर विवेक जिसको कहते हैं वो जान लें, किन्तु आपके अन्दर जो सत्य-असत्य विवेक बुद्धि है वो बड़ी प्रबल हो जाती है। आप

सिर्फ जो सही होगा वही करते हैं, जो आपको नष्ट करेगा, जिसे अंग्रेज़ी में Self distructive (आत्मघातक) कहते हैं, वो काम आप करेंगे ही नहीं। सारा ही काम आप अत्यन्त प्रेम से करते हैं। अत्यन्त दुलार से प्रेम से सारी बात करते हैं। मेरे लिए भी बड़ा मुश्किल है कि कोई कठिन शब्द कहें। आज लेकिन मैं तैयारी से आई थी कि आप लोगों से कहूँगी कि और बेवकूफी मत करो। बहुत बेवकूफी कर चुके।

अब ये जोसहज के मार्ग से आप पाते हैं पहले तो आप अपने अन्दर शान्ति को प्राप्त करते हैं। अपना देश शान्ति प्रिय है। इस देश ने किसी भी देश पे अगाड़ी नहीं करी, किसी भी देश को लूटा नहीं, किसी भी देश की ज़मीन अपने हाथ नहीं ली। ये शान्ति कहाँ से आई? इतने हजारों वर्षों से हमने इतने दुविधा उठाई तो भी ये चीज़ कहाँ से आई। ये इस धरती की विशेषता है, जिस धरती पर आप बैठे हैं उसी धरती की विशेषता है कि हम लोग शान्ति प्रिय लोग हैं। ग़र कोई हमारे ऊपर आक्रमण करता है तो हम ज़रूर उससे लड़ेंगे। लेकिन किसी के यहाँ जाकर के और हम ख़ुराफात नहीं कर सकते। इस तरह की व्यवस्था अभी तक अपने यहाँ नहीं है। और देशों में है अपने यहाँ नहीं। उसका ये, उसपे झगड़ा लगाएं, वहाँ जाके बम्ब छोड़ें, ये सब हम लोग नहीं करते। ये नियंत्रण हमारे ऊपर अपने आप आया हुआ है। स्वयं आया है। तो अन्दर की शान्ति प्रस्थापित होती है, फिर घरों में अपने संसार में, अपना जो छोटा सा संसार है उसमें भी शान्ति आती है। बच्चों में शान्ति आती है। शान्ति बहुत जरूरी है। **जहाँ शान्ति नहीं होती वहाँ पेड़ नहीं उग सकते।** वहाँ कुछ भी प्रगति नहीं हो सकती। एक दूसरे को काट मारने में खत्म हो जाते हैं। पर सहजयोग से जो शान्ति प्राप्त होती है उससे उन्नति होती है। अभी सहजयोग में कितने ही बच्चे हैं जो कहाँ से कहाँ पहुँच गए। कभी वो सोचते भी नहीं थे कि हम इसे प्राप्त करेंगे, इतना हमें मिलेगा, इतना ज्ञान और इतनी समृद्धि और हर तरह से पूरे-पूरे हो गए। बन गए। तबियत भर गई। ग़र मैं किसी को एक छोटी सी भी चीज़ देना चाहूँ तो कहेंगे माँ पहले ही तुमने तो सब दे दिया, अब क्या दे रहे हो हमें? ऐसी स्थिति अन्दर में स्थापित हो जाती है और ये जो समाधानी स्थिति है इससे पूरी तरह से आपसी रिश्तेदारी, आपसी प्यार, आपसी सबकुछ होता है। अब सबसे जो बड़ी चीज़ है कि सहजयोग ये प्यार की देन है। परमात्मा का जो प्यार हमारे अन्दर है वो प्यार आपको मिलता है, और प्यार से बढ़कर संसार में कोई चीज़ नहीं। जिसने प्यार की महिमा जानी उसके लिए फिर और चीजों की जरूरत नहीं। सारे मूल्य उसके स्थापित हो जाते हैं। प्यार ही वो पानी है जिससे कि अपने देश का जो ये बड़ा सुन्दर पेड़ है, ये सजीव हो जाए। आपसी प्यार, आपसी दोस्ती, ग़र हमारे अन्दर आपसी प्यार होता और आपसी एकता होती तो क्या मजाल है कि हमारे ऊपर किसी और का राज्य हो सकता था?

आपसी प्यार, आपसीदोस्ती, आपसी एकता आने के लिए सहजयोग चाहिए। इससे (Collective Consiousness) जिसे हम कहते हैं सामूहक चेतना स्थापित होती है। दूसरा कौन है? सब एक जीव हो जाते हैं। अब देखिए इतने दूसरे-दूसरे देश से लोग आए हैं अनेक धर्मों का पालन करने वाले। इनमें जो एक जीवता है, इनमें जो समाधान है, एकात्मकता है, वो आपको कहीं नहीं मिलेगी। आप हैरान हो जाएंगे कि किस तरह से ये लोग एक हो गए! आप और

किसी गुरु के वहाँ जाकर देखिए ये चीज़ आपको नहीं मिलेगी। वो आपस में लड़ेंगे, गुरु से लड़ेंगे। पूरी समय लड़ते रहेंगे। लेकिन जब आप सहज में अपने को प्राप्त करते हैं तो ये जानते हैं कि हम भी उसी समुद्र के एक बिन्दु हैं जिसमें सब एकाकारिता है। समुद्र के आन्दोलन से हम उठते हैं, गिरते हैं, चढ़ते हैं। ऐसी सुन्दर स्थिति, ऐसी सुन्दर समाज व्यवस्था अपने आप घटित हो रही है और इस हिन्दुस्तान में होगी। जो गलत लोग घुस आए हैं और अपने को बड़े अधिकारी समझते हैं इन्होंने कोई त्याग किए नहीं, इन्होंने देश के लिए कोई संग्राम किया नहीं। मुफ्त में आकर कुर्सी पर बैठ गए। इसलिए अपने देश के प्रति भक्ति होना बहुत आवश्यक है। महज इसलिए नहीं कि ये हमारा देश है हमारा जन्म हुआ क्योंकि ये बड़ा महान देश है। इसकी महानता मैं तो वर्णन नहीं कर सकती। कभी ग़र मेरेपास समय मिला तो मैं थोड़ा बहुत लिखना चाहती हूँ कि ये देश कितना महान है। इसको जानने के लिए, समझने के लिए आप लोगों में भी सहज की कुछ न कुछ प्रकृति आनी चाहिए। तब आप समझ पाएंगे कि इस देश में कितनी कितनी गहन बातें हमारे लिए हो गईं। हमारा इतिहास हो गया, कैसी-कैसी चीज़ें हो गईं? देशभक्ति, ये बहुत आवश्यक चीज़ है। गर आपके अन्दर देशभक्ति नहीं है तो आप सहज में आ नहीं सकते। इस देश के प्रति आप ही को भक्ति नहीं, इन सब लोगों को है जो पचहत्तर देशों में सहजयोग कर रहे हैं! आप के देश के प्रति इतनी भक्ति है कि जब ये बाहर से आते हैं तो आकर के और इस अपनी ज़मीन को झुककर नमस्कार करते हैं और चूमते हैं। अब यही आपको सिखा सकते हैं कि आप अपने देश की शक्ति को पहचाने और देश का वन्दन करें।

इस पर तो बोलते रहें तो बोलते ही रहेंगे हम और आज आप लोग इतनी दूर-दूर से आए है, ठंडक में आए हैं। एक माँ के लिए बहुत बड़ी चीज़ है, इतने बच्चे सामने हों तो क्या और कह सकती है? मैं सिर्फ आपको ये ही आशीर्वाद देना चाहती हूँ कि आप आज इसी वक्त यहाँ पर आत्मसाक्षात्कार को प्राप्त करें। उसके लिए कुछ आपको करना नहीं, मैंने साफ बता दिया। आप जहाँ बैठे हैं वहीं आपको गंगा पहुँचा देंगे। आप स्वयं अपने हाथ पे देखेंगे कि ठन्डी-ठन्डी हवा बयार जैसी बह रही है। ये बड़ी सूक्ष्म चीज़ है। ये क्या है? ये बयार कैसी आती है? ये क्या है? अब ये सारी बातें बताने का समय नहीं किन्तु किसी दिन ज़रूर आपको बताएंगे कि ये क्या चीज़ है? यही चैतन्य का प्रभाव जो हमारे अन्दर से बह रहा है और इसी के दम पर कितनी चीज़ें आप कर सकते हैं। अपना शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक तो आप ठीक कर ही सकते हैं पर औरों का भी ठीक कर सकते हैं। ऐसे आप महान हैं और आप कीचड़ में ग़र फँसे रहें तो मैं उसे क्या कर सकती हूँ?

आपसे अब इतनी विनती है कि एक दस मिनट के लिए और ज्यादा से ज्यादा आपको इसे प्राप्त करना है। जो कुछ भी मैंने कहा, सुना, उसको यही जानना चाहिए कि आपके अन्दर शक्ति का जागरण करने से पहले तैयारी हो रही थी। उसके बग़ैर नहीं हो सकता। कायरों का काम नहीं है और मैंने आपसे कहा कि मूर्खों का भी काम नहीं है। तो समझदारी से इस चीज़ को स्वीकार्य करें कि आप स्वयं आत्मा हैं। **आत्मा को प्राप्त करना ही, एकमात्र लक्ष्य है जीवन का और कोई लक्ष्य नहीं।** अच्छा अब इसके बाद सिर्फ इतना कहना है कि आपने ग़र जूते

पहने हों तो उसको हटा कर रख दे। जिससे ये कि, ये आपसे मैंने पहले ही कहा, ये भारतमाता पता नहीं कितने ऋषि मुनियो ने पवित्र की हुई जगह है ये और इस जगह का जो पुण्य प्रताप है उससे आप क्या-क्या प्राप्त करेंगे, ये देखना है। अब कृपया दोनों हाथ मेरी तरफ करें। अब ये हाथ मेरी ओर करें और ये हाथ, सीधा हाथ right hand, आपके तालू के ऊपर जो कि एक पहले स्निग्ध हड्डी थी यहाँ, बचपन में, उसके ऊपर हाथ रखें। अब अपना ये हाथ right hand मेरी ओर करें और left hand सिर के ऊपर फिर से तालू पर, ऊपर, रखे आधान्तर में, माने उसके ऊपर नहीं रखना आधान्तर में, देखिए। अब इसमें से कोई ठण्डी-ठण्डी या गरम हवा आ रही है क्या? ब्यार आ रही है क्या? ऐसे देखें। किसी-किसी को बहुत ऊपर तक आती है, किसी को सामने आती है, पीछे आती है। जरा हाथ ऊपर घुमा के देखें। अब left hand मेरी तरफ करें और right hand फिर सिर पे करें और देखें कि ठण्डी-ठण्डी हवा आ रही है क्या? हो सकता है गरम आ रही हो क्योंकि आपको सबको माफ करना है। आप सबको माफ कर दीजिए। ग़र आप माफ़ नहीं करते तो करते क्या हैं? आप कुछ भी नहीं। अपने को सता रहे हैं इसलिए सबको माफ कर दीजिए तो ठण्डी ठण्डी हवा आएगी। अपने को भी माफ कर दें। मैंने ये पाप किया मैंने वो पाप किया ये मत सोचिए। अपने को भी माफ कर दीजिए, पूरी तरह से माफ करें। अब दोनों हाथ मेरी ओर करें (Please put both the hands towards me)

अब जिन लोगों के दोनों भी हाथ में ठण्डी ठण्डी हवा आ रही है या गरम हवा आ रही है वो दोनों हाथ ऊपर करें दोनों हाथ। यहाँ से वहाँ तक। सबको अनन्त आशीर्वाद। सबको अनन्त आशीर्वाद। आपने तो प्राप्त कर लिया। आपका बीज तो प्रस्फुटित हो गया। अब इसके वृक्ष बनाने हैं। अब इसके इतने वृक्ष जितने आप लोग बन जाएं तो फिर क्या कहने। तब फिर ये कलयुग कितने दिन टिक सकेगा? सत्य युग तो आ ही रहा है लेकिन उसका अभी प्रकाश पूरी तरह से फैला नहीं, आप ही उसके प्रकाश देने वाले हैं। आप ही लोग। और मुझे पूर्ण विश्वास है कि आप लोग सहजयोग को फैलाएंगे हर एक आदमी एक-एक हजार आदमी को पार कर सकता है। हर एक औरत एक-एक हजार औरतों को पार कर सकती है। सबको चाहिए कि कोशिश करके और पार करें, लोगों को पार करें माने आत्मसाक्षात्कार दें। सबको मेरा अनन्त आशीर्वाद। सबसे आखिर में हम 'वन्दे मातरम्' गाएंगे। जिसके लिए आप सब खड़े हों। जिस गाने को लेकर के हमने स्वातन्त्र का युद्ध किया था आज उसको आप मना करने वाले कौन होते हैं? आप लोग सब खड़े हो और ये foreign के लोग गाएंगे, इससे आपको आश्चर्य होगा कि कहाँ तक हमारी भारत माता की महिमा पहुँची हुई है!

ईसा मसीह पूजा

हिन्दी प्रवचन, गणपति पुले 25.12.98

अब बात ये है कि अंग्रेजी भाषा हमारे ऊपर तीन सौ वर्ष से लाद दी गई। मैंने कभी अंग्रेजी सीखी नहीं। कभी भी नहीं। स्कूल में भी छोटी सी किताब थी और कॉलिज तो मैडिकल कॉलेज में तो कोई सिखाता ही नहीं अंग्रेजी। मेरे पिताजी कहते थे इतनी ये आसान भाषा है और इसमें इतने कम शब्द हैं कि कोई ज़रूरत ही नहीं सीखने की। उन्होंने हमको मराठी स्कूल में डाला और हमसे कहते थे कि मराठी सीखो और संस्कृत सीखो। संस्कृत भी मैंने कभी नहीं सीखी और हिन्दी तो कभी भी नहीं सीखी कोई सवाल ही नहीं उठता, स्कूल में भी नहीं सीखी, कॉलिज में भी नहीं सीखी, कहीं हिन्दी भाषा मैंने सीखी ही नहीं। पर एक अच्छाई है मेरे अन्दर, वो मैं बता दूं आपसे, कि मैं हिन्दी भाषा में जब बोलती हूँ तो हिन्दी ही बोल सकती हूँ और मराठी में बोलती हूँ तो मराठी ही बोल सकती हूँ और अंग्रेजी में बोलती हूँ तो अंग्रेजी ही बोल सकती हूँ। उसका भाषांतर करना मेरे लिए बड़ा कठिन है। इसलिए मैं मिली-जुली भाषा नहीं बोल सकती। ये भाषा अलग बोल रहे हैं। वो भाषा अलग बोल रहे हैं, वो अलग भाषा। अब कोई विश्वास ही नहीं करेगा कि मैंने हिन्दी भाषा सीखी ही नहीं। लेकिन पढ़ने का शौक, अच्छी-अच्छी किताबें पढ़ने का शौक, उसी से हिन्दी भाषा आ गई। पर शुरुआत में मेरी भाषा बहुत संस्कृत से किलिष्ट थी। बहुत। क्योंकि महाराष्ट्रियन लोग वैसे ही बोलते हैं, महाराष्ट्रियन को रोज़मर्रा की हिन्दी नहीं आती। वो जो हिन्दी भाषा बोलेंगे उसमें आधे से ज्यादा तो संस्कृत शब्द और बचे-खुचे मराठी शब्द। समझे न। तो ये हालत है। अब हमने जो इसमें समझा है वो ये है कि भाषा का भी एक वरदान होता है। जैसे संगीत का होता है, कला का होता है, ऐसे ही भाषा का वरदान होता है और उसी से लोग बहुत सारी भाषा बोल सकते हैं। लेकिन हिन्दी लोग कोई और भाषा सीख ही नहीं सकते। उसकी वजह ये है जैसे अंग्रेज कोई और भाषा नहीं सीख सकते। और सीखेंगे तो विद्रूपणी। वजह ये है सब अंग्रेजी जानते हैं। इसलिए वो कोई और भाषा बोल ही नहीं सकते। मैं तो कभी नहीं कहूँगी कि आप मराठी सीखो क्योंकि मराठी भाषा बहुत ही जटिल है। बहुत कठिन। वो मराठी ही समझ सकता है। इतना विनोद और इतना मज़ाक है उसमें, अश्लीलता जरा भी नहीं, गन्दगी इतनी भी नहीं। पर इतनी भाषा वो प्रगल्भ है, इतनी गहन है और फिर सहजयोग के लिए मराठी भाषा जैसी कोई और कोई भाषा नहीं। क्योंकि मराठी में ही कुण्डलिनी के बारे में लिखा गया है। इतने साधु-संतों ने सब लिखा सो मराठी भाषा में । और ग़र एक बार आपको मराठी आ गई तो कोई सी भी भाषा आ सकती है, इसमें कोई शक नहीं। पर मराठी लोग और कोई भाषा नहीं सीख सकते। बड़े कट्टर होते हैं। किसी को मैंने कहा कि एक ये हिन्दी किताब पढ़ो। तो थोड़ी पढ़कर के छोड़ दी। मैंने कहा क्यों? सरीधाणे, सब गन्दगी लिखी हुई है इसमें, मेरे को नहीं समझ में आती है। क्योंकि इतनी शुद्ध भाषा और शुद्ध विचार मराठी में है। पढ़ने के बाद, आप गीता पढ़ने के बाद कोई रास्ते पर की चीज़ पढ़ो, सड़कछाप, वो समझ में नहीं आती। सो आप लोगों से कुछ लोग सीखें मराठी तो अच्छा है। लेकिन बड़ी कठिन भाषा है। और इसमें पर्याय बहुत हैं भाषा के। आज इसलिए मैं बता रही हूँ कि महाराष्ट्र में आके भी मुझे हिन्दी में ही बोलना पड़ता है। क्योंकि आप

तो मराठी भाषा जानते नहीं। पर पूना में मैं मराठी में बोलती हूँ और बम्बई में भी हिन्दी में बोलना पड़ता है। ग़र कोई सीखना चाहे तो मराठी भाषा सीखे, ये सीखने वाली भाषा है और इतनी कमाल की है कि हमारे नामदेव जो बड़े भारी यहाँ के सन्त हो गए उनको गुरुनानक साहब ने बुलाया और उनसे कहा कि तुम पंजाबी सीखो और पंजाबी में तुम लिखो। इतनी बड़ी किताब लिखी है उन्होंने पंजाबी में। अब मुझे भी पंजाबी भाषा आ गई जब मैं पंजाब में रही। ग़र आपको मराठी भाषा आ गई तो सिवाय तमिल के आप सब भाषाएं सीख सकते हैं और तमिल के भी कुछ शब्द सीख सकते हैं। इस प्रकार इस देश में जबकि चौदह सरकारी भाषाएं हैं, मैं ये कहूँगी कि ग़र मराठी आप लोग सीख लें तो आपको चौदह में से आठ भाषाएं तो आ ही जाएंगी। अब एक और बात कमाल है कि बाइबल का (translation) भाषांतर हिब्रू भाषा से प्रत्यक्ष में वो मराठी भाषा में हुआ है। यहाँ एक रमादेवी करके बड़ी अच्छी विद्वान स्त्री थी। उसने बाइबल का जो भी भाषांतर था वो मराठी भाषा में किया और उसमें जो शब्द थे जैसे John जोन को जोहा, मैथ्यूस का मात्रेया अनुवाद किया। तो मैंने बाइबल जो है वो मराठी में पढ़ा। इसलिए बहुत बार गड़बड़ हो जाती है। स्पष्ट रूप से लिखा है उसकी इतना शुद्धता उन्होंने रखी हुई है। उसी में उन्होंने लिखा कि जब वो शादी में गए थे तो उन्होंने वहाँ पर पानी से द्राक्षासव बनाया। बड़ी तत्व की बात है। मराठी में दूसरी विशेषता मैंने देखी कि ईसा मसीह के बचपन के बारे में, उनकी बाल्यावस्था के बारे में उन्होंने लिखा। अंग्रेजी में मैंने ऐसी कोई कविता नहीं पढ़ी।

मैं नहीं जानती कि आपने कभी ईसा मसीह की बाल लीलाओं का वर्णन पद्य में (कविता) में सुना होगा। मैंने तो कभी नहीं सुना, परन्तु मराठी भाषा में इस तरह की रचनाएं हैं। अभी कल ही उन्होंने गया "बाल बदन तव वधुनी खिस्ता।" नन्हें बालक का मुँह देखकर मेरे सारे भय दूर हो जाते हैं। पश्चिमी भाषाओं में ईसा मसीह के बाल्यकाल का वर्णन नहीं किया गया है जिस प्रकार भारत में श्री राम और श्री कृष्ण के बाल्यकाल का किया गया है। उनका ठुमक कर चलना, तुतलाकर बोलना, मुँह में अंगुली डालना - सभी छोटी-छोटी चीजों का वर्णन अत्यन्त सुन्दरतापूर्वक किया गया है। यही कारण है कि भारतीय अपने बच्चों से छल नहीं कर सकते। उनके लिए यह असम्भव कार्य है। हिन्दी और मराठी दोनों भाषाओं में इन अवतरणों के बाल काल के बहुत सुन्दर वर्णन हैं।

तीसरी आश्चर्यचकित कर देने वाली बात ये है कि इनका सारा रोमांस शादी से पहले ही है। शादी के बाद कोई रोमांस नहीं है। भारत में रोमांस का आरम्भ शादी के बाद होता है। बहुत ही मधुर-मधुर चीजें हैं। मैंने किसी से कहा कि कोई एक अंग्रेजी की पुस्तक खोजो जिसमें किसी विवाहित युगल के रोमांस का वर्णन हो। लेकिन विवाह के पश्चात् वहाँ तो सारा रोमांस खत्म हो जाता है। तब आप लोग करते क्या हैं? लड़ते हैं, झगड़ते हैं और कचहरी में जाकर तलाक ले लेते हैं।

यही बात है कि हमारे ऊपर बड़ा भारी एहसान हमारी संस्कृति का है बहुत बड़ा। तो हमने मराठी में बाइबल का अनुवाद पढ़ा। उसमें जो बातें लिखी हैं वो बड़ी गहन हैं। अंग्रेजी भाषा ने तो बदल ही दिया उसका स्वरूप; मैं सोचती हूँ, और ईसामसीह के बारे में भी जो पवित्र अत्यन्त आध्यात्मिक स्वरूप का वर्णन मराठी बाइबल में है वो न तो हिन्दी में है और न ही वो अंग्रेजी में है। तीसरी बात, मराठी आदमी जो है बड़ा खुद्दार है। राजस्थान में भी जैसे मेवाड़ के लोग हैं बड़े खुद्दार हैं। वो अंग्रेज से कुछ सीखने नहीं वाले। अंग्रेज ग़र सिखाए तो कहेगा (राऊदया राऊदया), रहने दो रहने दो। आपके जैसे बहुत देख लिए पर उत्तर में मैंने देखा कि अंग्रेजों का बहुत जोर है, सूट बूट पहनना और टाई लगाना जूते पहनना और सब पर रौब झाड़ना। महाराष्ट्र में नहीं है। मराठी आदमी को सूट पहनाना बहुत कठिन है, वो तो धोती पहनते

हैं। पढ़े-लिखे लोग भी धोती । अब आपने देखा है कि तिलक यहाँ कितने बड़े लीडर हो गए देश के, यहाँ के रानाडे हो गए, आगरकर हो गए, सब। कोई सूट-बूट नहीं पहनते थे। कोई टाई-वाई नहीं लगाते थे। हाँ सरकारी नौकरी करना भी बड़ी निम्न श्रेणी की बात समझते हैं। महाराष्ट्र में आपको पता है बहुत बार लेख आते हैं। लिखा जाता है कि आप सरकारी नौकरी क्यों नहीं करते। फिर दो चार लोगों के नाम दिए जाते हैं कि देखो इन्होंने की सरकारी नौकरी तो उनका क्या खराबा हुआ, पर सरकारी नौकरों का कोई महात्मय नहीं है। कोई भी, और हमारे पिताजी तो कहते हैं कि पहले नौकरी करना अधम चीज़ है। अपना पेशा (profession) रखो और उससे ज्यादा सरकारी नौकरी करना तो अधमाधम। सो मनुष्य का चरित्र हनन हो जाता है। सो बहुत उनकी बात मैंने देखी सही है अब कोई I.A.S. में आएगा तो बस हो गया, उसका भाव चढ़ जाता है वहाँ पे । तीस लाख पैंतीस लाख। कोई I.A.S. का आदमी हो गया तो उत्तर भारत में बहुत बड़ी चीज़ मानते हैं। यहाँ पढ़ा लिखा हो विद्वान हो तब मानते हैं और आध्यात्मिक हो, ये बड़ा भारी (diference) अन्तर है। और इसलिए शुरु-शुरु में दिल्ली में मैं सोचती थी कि ये क्या समझेंगे। पर बड़ी हैरानी की बात है कि दिल्ली में अब सहजयोग ऐसा फैला है, लखनऊ में मुझे विश्वास ही नहीं होता। किसके आशीर्वाद से हुआ? ये तो ऐसे अंग्रेजों के चापलूस नम्बर एक थे। इनको हो क्या गया है? ये बदल कैसे गए? मुझे लगता है श्री राम और श्री कृष्ण जहाँ जिस भूमिमण्डल में रहे हैं उनके आशीर्वाद से है। और तो मैं बता नहीं सकती क्योंकि लखनऊ जैसी जगह तो खाओ पियो मौज करो और सब दिल फेंक बहादुर। मैं तो हैरान होती थी कि लोगों से बात क्या करें! सबका रिश्ता वैसा, बात वैसा, मेरे तो समझ नहीं आता था। अब मैं महाराष्ट्र से गई थी, मेरे को तो कुछ समझ भी नहीं आता था। भाभी है तो उसका मज़ाक है, सास ननद है तो उसका मज़ाक है। मेरी खोपड़ी में नहीं जाता था और अब मैं देखती हूँ श्री राम और श्री कृष्ण का आशीर्वाद, कबीर की वाणी, नानक साहब का आशीर्वाद, अरे ये पंजाबी लोग, मैं पंजाब में पढ़ती थी तो मैं सोचती थी कि ये पंजाबी इनकी तो कभी खोपड़ी में सहजयोग जाएगा ही नहीं और मैं हैरान। मैं बड़ी हैरान। इतनी भक्ति और इतना आनन्द इन्होंने कैसे प्राप्त किया? वहाँ न कोई प्रवचन देता था, कुछ नहीं, कैसे क्या हो गया? अब महाराष्ट्र में मैंने बड़ी मेहनत करी, बाप रे बाप एक-एक गाँव देहात हर जगह गए बड़ी-बड़ी मेहनत करी, लेकिन महाराष्ट्र में ये बात नहीं है। जो बात उत्तर भारत की है वो महाराष्ट्र में नहीं है। बड़े आश्चर्य की बात है। मैं कहूँ कि इतनी मेहनत की सब बेकार ही जाती है। उल्टे मेरे ही पीछे हाथ धोकर लग गए! सो पता ये हुआ मुझे कि यहाँ गुरुघंटाल बहुत हैं, इतने गुरु हर एक आदमी का गुरु, घर-घर में गुरु घुसे हुए हैं। इतने गुरु लोग हैं यहाँ, कुछ पूछिए नहीं। वो पंचाग आता है न, उसमें भी हर एक गुरु का नाम, उसके जन्मदिन, ये वो। मैंने कहा हे भगवान! और सब बिल्कुल बेकार लोग, इसमें कुछ कुछ महान भी थे पर बहुत थोड़े और ऐसे गुरु घंटाल कि जो सिवाय पैसों के और औरतों के सिवाय कुछ नहीं जानते। इतनी बड़ी ये महाराष्ट्र की भूमि, इतनी पवित्र भूमि जहाँ पर इतने देवियों के स्थान, महालक्ष्मी, महासरस्वती, महाकाली और आदिशक्ति सबके स्थान हैं इस महाराष्ट्र में और अष्टविनायक और ये महाविनायक सब यहाँ बैठे हुए हैं। हाँ ये लोग अश्लील नहीं, गंदगी नहीं, लेकिन धर्म को समझने की इनमें क्षमता नहीं है। क्षमता नहीं है। वही घंटा बजाना, मन्दिर में जाना गुरुओं के पीछे में भागना, बहुत ही ज्यादा कर्मकाण्डी लोग हैं। और बातें नहीं हैं। गंदगी नहीं है। पर इतने कर्मकाण्डी हैं कि उसमें से निकल ही नहीं पा रहे हैं। इस तरह से मैंने आपको विश्लेषण करके बताया कि जो लोग विदेश के हैं, जिनसे मुझे उम्मीद ही नहीं थी, मैं सोचती थी कि ये क्या बेकार के लोग, इनको तो

कुछ अन्दाज ही नहीं किसी चीज़ का। वो कहाँ से कहाँ पहुँच गए! और north के लोग जिनको मैं सोचती थी ये क्या आएंगे सहजयोग में। मैं तो दिल्ली को बिल्ली कहती थी, मेरी शादी भी दिल्ली में हुई। मेरे पिताजी भी दिल्ली में थे। बिल्कुल उम्मीद नहीं थी । पर आश्चर्य की बात है कि आज दिल्ली में उससे उत्तर में पंजाब में यू.पी. में सब जगह राजस्थान में सहजयोग फैल गया है। ये महाराष्ट्र की दुर्दशा है और इस वजह से आप लोगों का यहाँ आना जरूरी है क्योंकि आपके चैतन्य से यहाँ बहुत जागृति हो सकती है और लोग महसूस कर सकते हैं आप के आने से। आपका चित्त यहाँ आना ज़रूरी है क्योंकि आपके चैतन्य से यहाँ बहुत जागृति हो सकती है और लोग महसूस कर सकते हैं आप के आने से आपका चित्त यहाँ आ जाता है और उससे महाराष्ट्र के जो गुरु लोग बैठे हुए हैं, अब भी बैठे हैं बहुत सारे मराठी में शब्द है उछल वांगडी कर ले, अब इसका मैं भाषान्तर नहीं बता सकती, तो उनको उठा के फैंकने का कार्य आप लोगों का चैतन्य कर सकता है। विशेषकर आज जबकि आप जीसस क्राईस्ट के पवित्र, पवित्रतम जीवन के प्रति आदर व्यक्त कर रहे हैं। उस वक्त ये मैं ज़रूर कहूँगी कि यहाँ पर जो लोग इतने सारे गुरु घंटाल बैठे हैं, जिनको ईसामसीह आज होते तो एक हंटर से मारते फिरते, ऐसे इन गुरुओं का ही यहाँ से उछल वांगडी हो जाएगा। अब ये भाग के पता नहीं कहाँ जाएंगे, बहुत पैसा बना लिया है सबने, काफी बेवकूफ बना लिया है। लेकिन ये एक तरह की सादगी, बेवकूफी यहाँ पर है। कोई भी गुरु आए उसके चरण छुओ। सब चरण छू महाराज लोग यहाँ बहुत हैं। तो ये एक बात हमारे अन्दर बेवकूफ बनने की क्षमता पता नहीं कहाँ से आ गई थी! कोई भी आए कुछ भी पढ़ाए बस हमारी परंपरा है गुरुदेव आ गए। बस इस परंपरा से ही ये महाराष्ट्र ग्रस्त हुआ है। और मैं तो कहूँगी कि ईसामसीह के जीवन से उनकी सादगी, उनकी पवित्रता और उनकी अबोधिता का जो शस्त्र है वो श्री गणेश के माध्यम से ज़रूर नष्ट करेगा इन लोगों को और महाराष्ट्र में भी जागृति हो जाएगी। यहाँ भी लोग प्राप्त करेंगे उस परमधन को और परम तत्व को जो यहाँ पर बताया। न जाने कितने सन्तों ने कुण्डलिनी के बारे में ऐसा कोई सन्त ही नहीं जिसने नहीं कहा, सारे ही सन्तों ने यहाँ कुण्डलिनी की बात कही। एक से एक महान संत इस देश में हो गए। इस देश के उन सन्तों को, मैं सोचती हूँ, जिन्होंने इतनी मेहनत करके यहाँ पर जागृति करने की कोशिश की वहाँ मैं भी हार गई। लेकिन आप लोगों का आना बहुत मुबारक है और आप लोगों के यहाँ आने से इन लोगों में अक्ल आएगी। ये समझेंगे कि ये किस गुरु के पीछे भाग रहे हैं। ये सब जो भी मैं बता रही हूँ इसलिए कि बहुतों ने मुझसे कहा कि माँ गणपति पुले से अच्छा आप और ही कुछ करिए प्रोग्राम। मैंने कहा नहीं। आप आइए क्योंकि आपका कर्त्तव्य है कि आप सब में जागरण लाएं। महाराष्ट्र में जागरण लाना है और आपको इसीलिए यहाँ आना जरूरी है और वो भी यहाँ पर ईसा मसीह का हम लोग गौरव करते हैं। उनकी बहुत ज़रूरत है। वो तो मैं कहती हूँ न कि हंटर ले के इन सब गुरुओं को ऐसे ठोकेंगे। पर आप लोगों का ये विचार कि हम यहाँ आज उनके पवित्रतम चरित्र को उजागर करने आए हैं और उनके शक्ति से महाराष्ट्र की ये भूमि पवित्र हो जाए। और ये जो गणेश पूजा है, बहुत गणेश की पूजा बहुत करेंगे। लेकिन वो गणेश क्या है और गणेश का मतलब क्या है, इससे कोई मतलब नहीं। कुछ समझ में नहीं आता ऐसे चक्कर में फँसे हुए लोग हैं। इनको उभारने के लिए आप लोगों का यहाँ आना जरूरी है। हर साल आप लोग आते हैं वो भी ईसा मसीह जन्मदिन बनाने के लिए, ये बड़ी भारी बात है।

आप सबको अनन्त आशीर्वाद।

■ श्री चरणों में समर्पित ■

हे महान आत्मा,
आवाज तेरी बोलती है
वायु में और पेड़ों में,
पूरे विश्व को उन्नत करता है श्वास तेरा,
अपने जीव की सुनो, सभी को सुनो
मैं नन्हा और कमजोर हूँ,
जरूरत है मुझे शक्ति तुम्हारी,
विवेक भी तुम्हारा मुझे चाहिए
गरिमापूर्वक चलने के लिए,
सूर्योदय की स्वर्णिम लालिमा की छवि
प्रफुल्लित करे मेरी दृष्टि,
प्रेम पूर्वक सृजित
आपकी सभी वस्तुओं को छुएं हाथ मेरे,
हर चीज में कर्ण मेरे सुनें तेरी वाणी।